कबीर पदसंग्रह.

(ए संग्रह अबतक कहींभी छपा नहीं है)

ए संग्रह,

बावा किसनदास उदासी निरंजनी

नें

"निर्णयसागर" यन्त्रालयमें छपायके

प्रसिद्ध कीया

मुंबई.

शाके १७९९ संमत १९२९

मारकीटमें बगडीबाजारके सामने रा रा वासुदेव बाबाजी नवरंगेकी विलायती मुसोकी दुकानमें, गिरगाव इंदुप्रकाश हापीसमें, अथवा भुलेश्वरके पास हमारे मकानमें मोल मिलेगा,

कागदकी जिल्द नकल एकका, एक रुपया १

कपडेकी जिल्द नकल एकका, एक रुपया चार आणे १।

सूचना.

ए कबीर पद संग्रहकी प्रस्तावना लिखना जरुर नहीं है, क्युके कबीर ए नाम जो है सोई प्रस्तावनारुप है; लेकिन मैंने एह पुस्तककी जाहेरखबरमे एह सग्रहके साथ कबीर साहेबका जनमचरित्र लिखनेका इरादा है ऐसा कहाथा सबब जनमचरित्रके बाबमें मै मेरी समझके माफक थोडीसी सूचना लिखताहु सो उसउपर सुजन पुरुषोने, विद्वानोने, पडतोने, और न्यायके चहानेवाले साहेबोने अछी तरेह बिचार करना, ए मेरी अरज है. और बिचारवानोकी ऐन फरजहै.

१ जितने जनमचरित्र लिखने हारेथे वे सब मताभिमानी थे. अपने अपने मतकी तारीफ और आचार्योंकी बडाई करनेके लीए मताभिमानके जोशमे आके अनेक तरेहके चमत्कार करामते और गप्पाष्टकें अदर दाखल कर दीएहै ईस लीए कोईभी सत्पुरुषका जनमचरित्र बरोबर मिलता नही है.

२ नाभाजी और महीपती वगेरेओने जो भक्तोका जनमचरित्र लिखा है ओभी ओ मताभिमानीओके चरित्रोपरसें सूक्ष्मरीतसें बरनन कीया है उसपरसेभी कुछ बराबर पत्ता लगता नही है.

३ हारेस हेमनविलसन वगेरे विद्वोनोने भक्तमाल वगेरे ग्रंथोपरसें और कुछ अपनी अकलकी दानाईसें कुछ लोगोसें तालास करके लिखे है, ओ उपरके चरित्र लिखनेहारोसें कुछ अछे है, सबब उनोनें कुछ अकल खरची है; लेकिन उसपरसेंभी कोई तरेहका निश्चय करना कठन है.

४ हालके मरेठी और गुजराती कविचरित्र लिखनेहारे पडतोनेभी जैसी पिछले चरित्र लिखनेहारे भूलकरते आए हैं वैसीही उनोनेंभी भूल करी है, लेकिन ईनकी ऐन फरजथी के अछी तरहसें हर एकके मत और धरमकी तालाश करके लिखनाथा, तालाश तो नही करी, लेकिन कितनी एक अनहोई बातें अदर दाखल कीई है, अब जन्मचरित्र लिखनेहारे पडतोने जो पडताई कीई है सो उसमेसे थोडेसे नमुने दाखल नीचे लिखताहुं:—

जन्मचरित्र लिखनेहारे बाबा नानकके जन्मचरित्रमें निचे माफक लिखते है:—

१ "बाबा नानक अपने गोरखनाथके संप्रदायके माफक भक्तिमें तत्पर थे" लेकिन एह बिलकुल जूठ है. बाबा नानककी जनम साखीमेंतो ईसतरेसें लिखाहै:— गोरखनाथ वगेरे नाथ और चौरासी सिद्धोंके साथ तीन वखत वादविवाद हुवाथा, बाबा नानकने नाथोंके मत खडन करके अपना मत स्थापन कियाथा, और पूरवमें पिली भीतके पास गोरखमता नामकी एक जगाथी सो नाथोसे

चरचा करके उनको जीतके नानकमता नाम रखाहै ए वात पजाव और पूरव वगेरे शहेरोमें प्रसिद्ध है. बावा नानककी जनम साखी और गोरखनाथसे चरचा ए पुस्तक हाल मेरेपास हाजर हैं.

२ "बावा नानक मकेमें गयेथे वहा मसिदमें विष्णुकी मुरति उधी चिनी होइथी सो सिधी कीईथी." एवी जूठ है, वावा नानक मकेमें गएथे ए उनकी जनम साखीपरसें मालुम होताहै लेकिन विष्णुकी मुरति उधीथी सो सिधी करी ये वात नापायदार है.

३ "एक वखत बावा नानकने अपने नगरमें विष्णुके मदर वनानेका काम चलाया, उस वखत मुसलमान वादशाह क्रोध करनेलगा फिर मसीद वनाने शूरु कीया, तव हिंदु निंदा करने लगे. उस वखत उनोंनें दुसरी जगा खरीद करके सैंकडो पैखानेवनाये" हर! हर!! ये कितना जूठ! जिस जूठका पारई नहीं है. ये गप चरित्र लिखनेहारे काहासे लाये है? ओतो परमेश्वर जाणे! या लिखनेहारे जाणे. बावा नानक तो पूर्ण ग्यानी और सतनामका उपदेश करनेहारेथे. देखो उनका मत.—परमेश्वर एकहै, ओ निरगुन और निराकार है, ओ सव घटमें व्यापाहुवा है. मुर्तिपुजा, जातीभेद और जुदे जुदे कर्म करनेसें परमेश्वर सतुष्ट होता नहीं है, लेकिन एक परमेश्वरके नाम विना कोसीकाभी कल्यान होनेका नही. वावा नानकके वास्ते वहुत लिखनेका है, लेकिन कोई दुसरे प्रसंगपर लिखुगा.

४. कबीर साहेबके जनमचरित्र लिखनेहारे ऐसा लिखते है:—"सिकदर बादशाहके वखत बाबा नानक और कबीर ए अपने अपने मतके वास्ते झगडतेथे"-एवी जूठहे. सबब बाबा नानककी जनम साखी और कबीरजीकी साखीओपरसें मालुम होता है के बाबा नानक कबीरजीके पिछे हुए है, कबीरजीने संवत १५०५ में देह छोडी है, बाबा नानकने संवत १५२६ में जनम लिया है.

भाइओ. अब कोई जनमचरित्र लिखनेकों चाहे तो कोनसें आधारसें लिखे, देखो ! पहिले जनमचरित्र लिखनेहार मताभिमानी, दुसरे भाविक, तीसरे कनुक विचारी. चौथे गप्पाष्टकी.

आखरकों मै कबीरपंथी साधुओसे तालाश करने लगा; लेकिन ओ भेखधारी "एक हाथकी ककडी और नव हाथका बीज."इस मसलकी माफक गप्पा मारने लगे.

खेरमैने कबीरपदसंग्रह छापने शूरु कीयाथा उस वखत मेरे मित्र कवि नर्मदाशंकर लालशंकर (जो हाल गुजराथी भाषाके कविओमै पहेले वर्गके कवी है) उनकों कहाथा, के कबीरजीका जन्मचरित्र तालाश करके लिख भेजना; ए मेरा कहेना उनोनें कबुल कीयाथा; लेकिन उनकोंभी कबीरजीका जनमचरित्र बराबर न मिला; आखर उनोनें उनकी तालाशके माफक थोडीसी सूचना गुजरातीमें लिखकर भेजी सो मै अगाडीके सफापर हिंदुस्तानीमें दाखल कीईहे उसपर सज्जन पुरुषोने नजर करना.

ए पुस्तक छापनेको शूरु करनेको अवल मेरे कितनेक मित्रोंनें कहाके; गुजराती अक्षरोमें कवीरपद छपाओ तो अच्छा लेकीन मैंने सोचाके गुजराती लिपीजो है सो फकत मुठीभर गुजराथीओंके वास्ते है. लेकिन वालवोध लिपी जो है सो सारे हिंदुस्तान वगेरे देशोके वास्तेहै ईस वास्ते मैंने वालवोध लिपीमें छपानेका निश्चय कीया.

भाइओ जवतके हिदुस्तानमें एक लिपी एक भाषा एक धर्म न होगा तवतके हिंदुस्तानमें पूर्ण सुधारनान होगी

लिपी तो वालवोधहि याने देवनगरी चाहीए.

भाषा हिंदुस्तानी या हिदी दोनोमेंसे कोईभी होयतो हरकत नही है. सवव साधारन हिंदी ओर साधारन हिंदुस्तानी हरकोई समज सकतेहैं.

धर्म ऐसा चाहीए जिसमें एक ईश्वरकी भक्ति, मनुष्य मात्रकी एकता, स्वदेशाभिमान और नीति.

ऐ मेरे स्वदेशहितचिंतको जो हिंदुस्तानमें तुमारी पूर्ण सुधारना करनेकी ईच्छा होय तो पेहेले एक लिपी, एक भाषा करनेके वास्ते कवर वाधो, और मेहेनत करना शूरु करो, तव पूर्ण सुधारना होगी. ऐ मेरे स्वदेशाभिमानी मित्रो ए मेरी विनतीपर विचार करो और करोगे ऐसी मै उमेद रखताहु, हाल इतनाही वस.

वावा किसनदास उदासी,

निरजनी.

कवीरजीका संक्षेपित जन्मचरित्र.

कवीर ए प्रख्यात भक्त ओर ग्यानी संवत १५०० सोमें थे.

॥संमत वारहसये औ पांचमें, ज्ञानी कियो विचार॥
॥ काशीमांहि प्रगट भयो, कहो शब्द टकसार ॥
॥संमत पंदरहसये ओंपांचमो मगर कीयो गवन॥
॥ अगहन सुदी येकादसी मिले पवनसों पवन ॥

ऐसा ये पंथके ग्रथोमे लिखाहै.

कवीरजीके माता, पिताके विपे भक्तमालमैं कितनी एक वाते लिखीहैं. लेकिन उसमेंसें सची कोनसी या एकभी सची नही ईसवातका यहा हाल विचार करना नही है, कोई जुलाहा याने मुसलमान कपडे वुननेहारे ने-

---

*गोरखपुरके पास है वहा जो मरताहै सो गधा होता है ऐसे कहतेथे, उसवास्ते कवीरजीने वहा जाकें शरीर छोडा

१ नाभाजीने हिंदीमें और महिपति वावानें मरेठीमें ईसवी सन १७०० सोमें रचीहै कवीरजीके शिष्य धरमदासजीनें (जवलपुरके पास) वाधुगढमे गादी स्थापी, उनकी पीढीमेंसें हाल ११ वा पुरुष है धरमदासजी, चूडामणी, सुदर्शन, कुलपत, प्रमोद, गुरूवालापीर, कवल, अमूल, सुरतसनेही, हकनाम, ओर प्रगट नाम, (५५ वरसकी उमरके) काशीमें कवीर चोरा कराताहै वहाकी गादी वडीहै

पाल, पोस, वडा करके शादीकर दीयाथा. ओर कवीरजीको कमाल नामका एक लडका हुआ, वाप वेटे दोनो साधुसंतकी सेवामें तत्पर रहतेथे. उनहोने रामानंदस्वामीकों गुरू कीया. उनकी प्रीति सपादन करी. दिल्हिके वादशाहा शिकंदर लोदीकों ओर उनके काजीओंकों अपने मतकी खातरी कर दीईथी. ओर दुसरे मतवादीयोंके साथ वादविवाद कीयाथा.

कवीरजीने भक्तिरूपसें जातिभेद, आचारभेद, ईनका हास्य और खडन कीयाथा. पहिले साकार रामकी भक्ती ओर पीछेसे निराकार रामकी महीमा गायेथे. उनहोंने आखरके ईसतरेह कहाथा.

॥ रामजपतहे नामकों, नाम निरंतर थीर ॥
॥ ताके आगें कुछ औरहें, ताकों जपे कवीर ॥

कवीरपथी जव एक दुसरेको मिलते है तव कोई "सतनाम्र" कोई "सतसाहेव" कोई "वदगीसाहेव" कहते हैं.

अव कवीरजीनें ज्ञानरूपसें क्या वोध कीया, वेदातमतसें कितने आडे ओर वैष्णवमतमें, कीतने मिलते ए सव जानना जरूर है. लेकिन ए पदसंग्रह पुस्तकमै हाल जरूर नहीहे.

कवीरजीके धर्ममतकों माननेहारे वहुत लोग थे और अवभी हैं. कहतेहैं के अकवरवादशाहनें कवीरजीके मतकों जाणे पीछे अपना ओर दुसरेयोंके धर्म मतसें वेदरकार रहके हिदु मुसलमानोंको अपनी अपनी

कवीरजीका संक्षेपित जन्मचरित्र.

कवीर ए प्रख्यात भक्त ओर ग्यानी संवत १५०० सोमें थे.

॥संमत वारहसये औ पांचमें, ज्ञानी कियो विचार॥
॥ काशीमांहि प्रगट भयो, कहो शब्द टकसार ॥
॥संमत पंदरहसये औपांचमो मगर कीयो गवन॥
॥ अगहन सुदी येकादसी मिले पवनसों पवन ॥

ऐसा ये पंथके ग्रथोमें लिखाहै.

कवीरजीके माता, पिताके विषे भक्तमालमें कितनी एक वाते लिखीहैं. लेकिन उसमेंसें सच्ची कोनसी या एकभी सच्ची नही ईसवातका यहा हाल विचार करना नही है, कोई जुलाहा याने मुसलमान कपडे वुननेहारे ने-

---

*गोरखपुरके पास है. वहा जो मरताहे सो गधा होता है ऐसे कहतेथे, उसवास्ते कवीरजीने वहा जाकें शरीर छोडा

१ नाभाजीने हिंदीमे और महिपति वावानें मरेठीमे ईसवी सन १७०० सोमें रचीहै. कवीरजीके शिष्य धरमदासजीनें (जवलपुरके पास) वाधुगढमे गादी स्थापी, उनकी पीढीमेसे हाल ११ वा पुरुष है धरमदासजी, चूडामणी, सुदर्शन, कुलपत, प्रमोद, गुरूवालापीर, कवल, अमूल, सुरतसनेही, हकनाम, ओर प्रगट नाम, (५५ वरसकी उमरके) काशीमे कवीर चोरा कहाताहै वहाकी गादी वडीहै

पाल, पोस, वडा करके शादीकर दीयाथा. और कवीरजीको कमाल नामका एक लडका हुआ, वाप वेटे दोनो साधुसतकी सेवामैं तत्पर रहतेथे. उनहोने रामानंदस्वामीकों गुरू कीया. उनकी प्रीति सपादन करी. दिल्लीके वादशाहा शिकंदर लोदीकों और उनके काजीऑंकों अपने मतकी खातरी कर दीईथी. और दुसरे मतवादीयोंके साथ वादविवाद कीयाथा.

कवीरजीने भक्तिरूपसें जातिभेद, आचारभेद, ईनका हास्य और खडन कीयाथा. पहिले साकार रामकी भक्ती और पीछेसे निराकार रामकी महीमा गायेथे. उनहोंने आखरके ईसतरेह कहाथा.

॥ रामजपतहै नामकों, नाम निरंतर थीर ॥
॥ ताके आगें कुछ औरहैं, ताकों जपे कवीर ॥

कवीरपथी जब एक दुसरेको मिलते है तव कोई "सतनाम्र" कोई "सतसाहेव" कोई "वदगीसाहेव" कहते हैं

अव कवीरजीनें ज्ञानरूपसें क्या वोध कीया, वेदातमतसें कितने आडे, और वैष्णवमतमें, कीतने मिलते, ए सव जानना जरूर है. लेकिन ए पदसंग्रह पुस्तकमे हाल जरूर नहीहै.

कवीरजीके धर्ममतकों माननेहारे वहुत लोग थे और अवभी हैं. कहतेहै के अकवरवादशाहनें कवीरजीके मतकों जाणे पीछें अपना ओर दुसरेयोंके धर्म मतसे वेदरकार रहकें हिदु मुसलमानोंको अपनी अपनी

इंच्छामे आवे उसमाफक चलनेकी परवानगी दीईथी.

कबीरजीनें ओर उनके शिष्योनें अपने पंथके वहुत ग्रंथ लिखे है, लेकिन कबीरजीनें कोनसे लिखे या लिखाये ए साबूत करना कठण है. फूटकल पद वगेरे उसमैभी कबीरजीके बनाये हुये कोनसे एभी मुकरर करना मुशकल है. कितनेक कबीरीये ओर दक्षणी हरदास साधुओनें ओर दुसरोंने कबीरजीके नामसें प्रवर्त्तांये है सोभी जुदे करना चाहीये.

कहे कबीर, कहे दासकबीर. ईसमै पहली छापके कबीरजीके ओर दुसरी छापके उनके शिष्योंके अथवा उनकेमतमाननेहारोंके कहाने है एभी नक्की करना चाहीये.

ओर कबीरजीने ब्रह्ममुख, मायामुख, गुरूमुख, जीवमुख, ईस प्रकारकी चार बानी गाई है; वासते ओ ओ वानीके पद चुन चुनके जुदे जुदे करना चाहीये. ओर ए सब जानने वास्ते कबीरपंथी ग्रंथोका अच्छी तरेह अभ्यास करना जरूर है.

अभीतक उत्तर हिंदुस्थानमै कबीरजीके पद छपेहैं ऐसा जाननेमै नही आया. ओर मुवईमै गुजराती अक्षरोंमै ओर मरेठीमे छोटीछोटी कितावे छपीहे ओ असुध ओर कबीरजीके नही लेकिन उनकी वानीका मतलब लेकर उनकी ढवछव माफक वनाये है ऐसा मालुम होताहै.

हाल ए पुस्तकमैं जो संग्रह कीयाहै सो गुरूनानकजीने ग्रंथ साहेवमै जो दाखल कीयेहै सो ए है.

कबीरजीके थोडेमुदत पीछे बावा नानक हूयेथे उनहोंने जब अपने ग्रथमै दाखल कीयेहे तब ए पद खुद कबीर साहेबके है ऐसा कहने में बिलकुल हरकत नहीहै.

कबीरजीकी बानी अच्छी ढबछबकी ओर पढने, ओर सुनने हारोंके मनको अति प्रसन्न करनेहारी है.

वा० कि० उ० नि०

ततकरा.



कबीर पदसंग्रह.

(भाग पहेला)

झुलना.

कोउ कछु कहे कोउ कछु कहे
हम अटके है व्हां अटके है ॥
उलट कमलमें घर कीया
माहा वुपके चरणमे लटके है ॥
संसार बिचारके छोड दीया
हम एही जानके सटके है ॥
साहेब कबीरके झुलनेमे
कांजी पंडत दोनो अटके है ॥ १ ॥

पद १ (श्रीराग.)

जननी जानत सुत बडा होत है ॥
एतना कन जानत जे दिनदिन अवधघटत है ॥ १ ॥
मोर मोर कर अधक लाड धरत पेखतही जम राव हसे ॥
ऐसा ते जग भरम भुलाया ॥
कैसे बुझे जब मोह्या है माया ॥ २ ॥
कहत कबीर छोड बिख्या रस यह सत संगत निश्चयो मरना ॥

रमैया जपो प्राणी अनत जीवन वाणी इन वीध भव सागर तरना ॥ ३ ॥

जां तिस लागे तां लागे भाव ॥
भरम भुलावा विचोद् जाव ॥ ४ ॥
उपजे सहज ग्यान मत जागे ॥
गुर परसाद अंतर लिव लागे ॥ ५ ॥
इत सत संगत नाहीं मरना ॥
हुकम पछाना जां खसमें मिलना ॥ ६ ॥

पद २ (श्रीराग.)

अचरज एक सुनोरे पंडिया अव कुछ कहनन जाइ ॥
सुर नर गन गंधर्व जिन मोहे त्रिभुवन मेखली लाईं ॥ १ ॥
राजा राम अनहत किंगरी बाजे ॥
जाकी हृष्ट नाद लिव लागे ॥ २ ॥
भाठी गगन सिंग्या अर चुंग्या कनक एकलसक पाया ॥
जिसमें धार चुवे अत निरमळ रसमें रसन रसाया ॥ ३ ॥
एक जो बात अनुपवनी है पवन प्याला साजा ॥
तीन भवनमें एको जोगी कहो कोन है राजा ॥ ४ ॥
ऐसा ग्यान प्रगट्या पुरखोत्तम कहे कबीर रंग राता ॥
अवर दुनी सब भरम भूलानी मन राम रसायन माता ५

पद ३. (राग गोडी)

अब मोह जलत राम जल पाया ॥
राम उदक तन जलत बुझाया ॥ १ ॥

मन मारण कारण बन जाइए ॥
सो जलबिन भगवंन न पाइए ॥ २ ॥
जहं पावक सुरनर है जारे ॥
राम उदक जन जलत उवारे ॥ ३ ॥
भवसागर सुख सागर मांही ॥
पीव रहे जल निखुटत नाही ॥ ४ ॥
कहे कबीर भज सारंगपानी ॥
राम उदक मेरी तिखा बुझानी ॥ ५ ॥

पद ४. (राग गौडी)

माधो जलकी प्यास न जाय ॥
जलमें अगन उठी अधकाय ॥ १ ॥
तु जलनिध हों जलका मीन ॥
जलमें रहों जलबिन खीन ॥ २ ॥
तुं पींजर हो सुअटा तोर ॥
जम जंदार कहां करे मोर ॥ ३ ॥
तुं तरवर हौं पंखी आहृ ॥
मंदभागी तेरो दर्शन नाहृ ॥ ४ ॥
तुं सत गुर हो नव तन चेला ॥
कहे कबीर मिल अंतकि वेला ॥ ५ ॥

पद ५. (राग गौडी)

गर्भवासमें कुल नहीं जात्ती ॥
ब्रह्म विंद ते सब उतपात्ती ॥ १ ॥

कहो रे पंडत बामन कवके होए ॥
बामन कहे कहे जनम मत खोए ॥ २ ॥
जो तुं ब्राह्मन ब्राह्मनी जाया ॥
तो आन बाट काहे नही आया ॥ ३ ॥
तुम कत ब्राह्मन हम कत सूद ॥
तुम केत लाहु हम कत दूध ॥ ४ ॥
कहे कबीर जो ब्रह्म वीचारे ॥
सो ब्राह्मण कहीयत है हमारे ॥ ५ ॥

पद ६. (राग गौडी)

अंधकार शुख कवहुंन शोड हें ॥
राजा रंक दोउ मिल रोइ हे ॥ १ ॥
जो पें रसना राम न कहे वो ॥
उपजत बिनसत रोवत रहे वो ॥ २ ॥
जस देखीए तरवरकी छाया ॥
प्रान गये कहो कांकी माया ॥ ३ ॥
जस जनतीमें जीव समाना ॥
मुये मर्म को कारण जाना ॥ ४ ॥
हंसा सरवर काल सरीर ॥
राम रशायन पीव रे कबीर ॥ ५ ॥

पद ७. (राग गौडी)

जोतकी जाती जातकी जोती ॥
तित लागे कंचुवा फळ मोती ॥ १ ॥

कोन सो घर जो निरभो कहीए ॥
भव भज जाय अभे होय रहीए ॥ २ ॥
व्रट तीरथ नहीं मन पती आय ॥
चार अचार रहे उर झाय ॥ ३ ॥
पाप पुन दो एक समाना ॥
निज घर परसत जो घर आना ॥ ४ ॥
कबीर निरगुन नाम नरोस ॥
इसपर चाय परच रहे एस ॥ ५ ॥

पद ८. (राग गौडी)

जो जन परमित परमन जाना ॥
बात नहीं बैकुंठ समाना ॥ १ ॥
ना जाना बैकुंठ तांहा ही ॥
जान जान सब कहे तांहां हीं ॥ २ ॥
कहेन कहावन नह पती आइए ॥
तब मन माने जाते होमे जाइए ॥ ३ ॥
जब लग मन बैकुंठकी आस ॥
तब लग होय नहीं चरण निवास ॥ ४ ॥
कहे कबीर अहे कहीए काह ॥
साध संगत बैकुंठे आह ॥ ५ ॥

पद ९ (राग गौडी)

उपजे निपजे निपज समाई ॥
नैनह देखत कहे जग जाई ॥ १ ॥

लाजन मरे कहे घर मेरा ॥
अंत वार नहीं कछु तोरा ॥ २ ॥
अनक जतन कर काया पाली ॥
मरती वार अगन संग ज्ञाली ॥ ३ ॥
चोआ चंदन मरदन अंगा ॥
शो तन जले काठके संगा ॥ ४ ॥
कहे कबीर सुनो रे गुनीआ ॥
वीनसेगो रुप देखे सव दुनीआ ॥ ५ ॥

पद १०. (राग गौडी)

जब हम एको एक कर जानीया ॥
तव लोगह काहे दुख मान्या ॥ १ ॥
हम आपत अपनी पत खोइ ॥
हमरे खोज परो मत कोइ ॥ २ ॥
हम मंदे मंदे मन माही ॥
सांझ पात काहुसो नाहीं ॥ ३ ॥
पत आपत तांकी नही लाज ॥
तव जानोगे जब उगरेगो पाज ॥ ४ ॥
कहे कबीर पत हर परवान ॥
सरव त्याग भज केवळ राम ॥ ५ ॥

पद ११. (राग गौडी)

नगन फिरत जो पाईए जोग ॥
बनका मिरग मुकत सब होग ॥ १ ॥

क्या नागे क्या बांधे चाम ॥
जब नहीं चीनत आतम राम ॥ २ ॥
मूंड मुडाए जो सीध पाइ ॥
मुक्ती भेडन गइआ काइ ॥ ३ ॥
बिंद राख जो तरीए भाइ ॥
खुशरे क्युं न परम गत पाइ ॥ ४ ॥
कहे कबीर सुनो नर भाइ ॥
राम नाम बिन किन गत पाइ ॥ ५ ॥

पद १२. (राग गौडी)

संध्या प्रातः स्नान कराही ॥
ज्युं भये दादर पानीमाही ॥ १ ॥
जोपे राम राम रत नाहीं ॥
ते सब धरमरायके जाइ ॥ २ ॥
काया रत बोहो रूप रचाइ ॥
तिनको दया सुपने भी नाइ ॥ ३ ॥
चार चरन कहे बहु आगर ॥
साधू सुख पावे कल सागर ॥ ४ ॥
कहे कबीर अब काय करीजे ॥
सरव रस छोड माहा रस पीजे ॥ ५ ॥

पद १३. (राग गौडी)

क्या जप क्या तप क्या व्रत पुजा
जाके रदय भाव हे दुजा ॥ १ ॥

रे जन मन माधो स्यों लाइए ॥
चतराइन चतरभुज पाइए ॥ २ ॥
पर हर लोभ अर लोकाचार ॥
पर हर काम क्रोध हंकार ॥ ३ ॥
करम करत बधे अहंमेव ॥
मिल पाथरकी कर ही सेव ॥ ४ ॥
कहे कबीर भगत कर पाया ॥
भोले भाय मिले रघुराया ॥ ५ ॥

पद १४. (राग गौडी)

अवर मुए क्या सोग करीजे ॥
तो कीजे जो आपन जीजे ॥ १ ॥
मै न मरो मर वो संसारा ॥
अब मोह मिलो जीवावन हारा ॥ २ ॥
या देही पर मल मह कंदा ॥
ते सुख बिसरत परमानंदा ॥ ३ ॥
कुअटा एक पंच पनहारी ॥
तुटी लाज भरे मत हारी ॥ ४ ॥
कहे कबीर एक बुध बिचारी ॥
नाओ कुअटा ना पनहारी ॥ ५ ॥

पद १५. (राग गौडी)

स्थावर जंगम कीट पतंगा ॥
अनक जन्म कीये बोह रंगा ॥ १ ॥

एसे घर हम बोहत बसाए ॥
जब हम राम गरभ होय आए ॥ २ ॥
जोगी जती तपी ब्रह्मचारी ॥
कब हूं राजा छत्रपत कब हुं भेखारी ॥ ३ ॥
साकत मरे संत सब जीवहे ॥
राम रसायण रसना पीवहे ॥ ४ ॥
कहे कबीर प्रभु क्रपा कीजे ॥
हार परे अब पुरा दीजे ॥ ५ ॥

पद १६. (राग गौडी)

एसो अचरज देख्यो कबीर ॥
दधीके भोले बिरोले नीर ॥ १ ॥
हरी अंगुरी गदहा चरे ॥
नित उठ हासे हीगे मरे ॥ २ ॥
माता भेसा अमुहा जाय ॥
कुद कुद चरे रसातल पाय ॥ ३ ॥
कहत कबीर प्रगट भइ खेड ॥
लेलेकुं चुंगे नित भेड ॥ ४ ॥
राम रमत मत प्रगटी आइ ॥
कहे कबीर गुर सोंझी पाइ ॥ ५ ॥

पद १७. (राग गौडी)

ज्यों जल छोड बाहर भयो मीना ॥
पुरब जनम हों तपका हीना ॥ १ ॥

अव कहो राम कवन गत मोरी ॥
तजीले बनारस मत भइ थोरी ॥ २ ॥
सगल जनम शिवपुरी गमाया ॥
मरती वार मग हर उठ धाया ॥ ३ ॥
बोहत वरस तप कीया कासी ॥
मरण भया मग हरकी वासी ॥ ४ ॥
कासी मगहरसम बीचारी ॥
ओछी भगत केसे उतरस पारी ॥ ५ ॥
कहे गुरु गज शिव सबको जाने ॥
मुआ कबीर रमत श्रीरामे ॥ ६ ॥

पद १८. (राग गौडी)

सोभा चंदन मरदन अंगा ॥
सो तन जले काठके संगा ॥ १ ॥
इस तन धनकी कोन वडाइ ॥
धरन परे उर वारन जाइ ॥ २ ॥
रातजो सोवे दिन करे काम ॥
इक खिन लेअन हरको नाम

कहे कबीर चेतरे अंधा ॥
सत्त राम झूठा सब धंधा ॥ ७ ॥

पद १९. (राग गौडी)

जम ते उलट भए हैं राम ॥
दुःख विनसे सुख कीयो विसराम ॥ १ ॥
वैरी उलट भए है मीता ॥
साकत उलट सुजन भए चीता ॥ २ ॥
अब मोह सरब कुशल कर मान्या ॥
सांत भइ जब गोबिंद जान्या ॥ ३ ॥
तनमय होती कोट उपाध ॥
उलट भइ सुख सहेज समाध ॥ ४ ॥
आप पछाने आपे आप ॥
रोगन व्यापे तीनो ताप ॥ ५ ॥
अब मन उलट सनातन हुवा ॥
तब जान्या जब जीवत मुवा ॥ ६ ॥
कहे कबीर सुख सहेज समाओ ॥
आप नडरो ना और डराओ ॥ ७ ॥

पद २० (राग गौडी)

पिंड मुये जीव कहे घर जाता ॥
सबद अतीत अनाहद राता ॥ १ ॥
जिनं राम जान्या तिनहे पछान्या ॥
जियुं गुंगे साकर मन मान्या ॥ २ ॥

एसा ग्यान कथे बन वारी ॥
मन रे पवन धड सुख मन नाडी ॥ ३ ॥
सो गुर करे जे बोहरन करना ॥
सो पद खोह जे बोहरन खना ॥ ४ ॥
सो ध्यान धरो जो बोहरन धरना ॥
एसे मरो जो बोहरन मरना ॥ ५ ॥
उलटी गंगा जमन मिलावो ॥
विन जल संगम मनमें नावो ॥ ६ ॥
लोचा सम यों बेवहारा ॥
तत्त विचार.क्या ओर बिचारा ॥ ७ ॥
आप तेज वाय प्रिथवीं अकाशा ॥
एसी रहत रहो हर पासा ॥ ८ ॥
कहेत कबीर निरंजन ध्यावो ॥
तित घर जाओ जो बोहरन आवो ॥ ९ ॥

पद २१. (राग गौडी)

कंचन सिंउ पाइऐ नहीं तोल ॥
मंन दे राम लीया हे मोल ॥ १ ॥
अब मोह राम अपना कर जान्या ॥
सहेज सुभाय मेरा मन मान्या ॥ २ ॥
ब्रह्मे कथ कथ अंत न पाया ॥
राम भगत बैठे घर आया ॥ ३ ॥
कहे कबीर चंचल मत त्यागी ॥
केवल राम भगत निज भागी ॥ ४ ॥

पद २२. (राग गौडी)

जहें मरने सब जगत तरास्या ॥
सो मरना गुर सबद प्रकास्या ॥ १ ॥
अब केसे मरो मरन मन मान्या ॥
मर मर जाते जिन राम न जान्या ॥ २ ॥
मरनो मरन कहे सब कोई ॥
सहेजे मरे अमर होय सोई ३ ॥
कहे कबीर मन भया आनंदा ॥
गया भरम रह्या परमानंदा ॥ ४ ॥

पद २३. (राग गौडी)

कत नही ठौर मुल कत लांवो ॥
खोजत तनमे ठौर न पांवो ॥ १ ॥
लागी होय सो जाने पीर ॥
राम भगत आनीअले तीर ॥ २ ॥
एक भाय देखो सब नारी ॥
क्या जानो सहो कोन प्यारी ॥ ३ ॥
कहे कबीरजांके मस्तक भाग ॥
सब पर हर तांको मिले सोहाग ॥ ४ ॥

पद २४. (राग गौडी)

जांके हरसा ठाकोर भाई ॥
मुकत अनंत पुकारन जाई ॥१॥

अब कहो राम भरोंसा तोरा ॥
तब काहूका कवन निहोरा ॥ २ ॥
तीन लोक जांके हें भार ॥
सो काहे ना करे प्रत पार ॥ ३ ॥
कहे कबीर एक बुध बिचारी ॥
क्या बस जो बिख दें मेंहेतारी ॥ ४ ॥

पद २५. (राग गौडी)

बनसत सती केसे होय नार ॥
पंडत देखो रदय बिचार ॥ १ ॥
प्रीत विना केसे बधे सनेह ॥
जब लग रस तब लग नहीं नेह ॥ २ ॥
साह नसत करे जी अपने ॥
सो रमइऐ को मिले न सुपने ॥ ३ ॥
तन मन धन ग्रहे सोंप सरीर ॥
सोई सोहागन कहे कबीर ॥

पद २६. (राग गौडी)

बिख्या बाधा सकल ससार ॥
बिख्या ले डुबी परवार ॥ १ ॥
रे नर नाव चउडी कत बोडी ॥
हर सों तोड बिख्या संग जोडी
सुर नर दाधे लागी आग ॥
निकट नीर पस पीवस न झाग ॥ ३ ॥

चेतत चेतत निकस्यो नीर ॥
सो जल निरमल कथत कबीर ॥ ४ ॥

पद २७. (राग गौडी)

जेंह् कुल पूतन ग्यान बिचारी ॥
बिधवा कसन भइ महे तारी ॥ १ ॥
जेंह् नर राम भगत नही सांधी ॥
जनमत कसन मुओ अपराधी ॥ २ ॥
मुच मुच गरभ गये किन बच्या ॥
बुढ बुढ रुप जीवे जग मझीया ॥
कहे कबीर केसे सुंदर सरुपा ॥
नाम बिना केसे कुबज करुपा ॥

पद २८. (राग गौडी)

जो जन ले खसम का नाव ॥
तिनके सब बल हारे जाव ॥ १ ॥
सो निरमल निरमल हर गुन गावे ॥
सो भाई मेरे मन भावे ॥ २ ॥
जें घट राम रह्या भरपूर ॥
तिनकी पग पंकज हम धूर ॥ ३ ॥
जात जुलाहा मतका धीर ॥
सहेज सहेज गुन रवे कबीर

पद २९. (राग गौडी)

गगन रसाल चुवे मेरी भाठी ॥
संत माह्ा रस तन भया काठी ॥ १ ॥
वाको कहीए सहेज मत वारा ॥
पीवत राम रस ग्यान बिचारा ॥ २ ॥
सहेज कलाल न जो मिलआई ॥
आनंद मांते अंनदिन जाई ॥ ३ ॥
चीनत चित्त निरंजन लाया ॥
कहे कबीर तब अनभव पाया ॥ ४ ॥

पद ३०. (राग गौडी)

मनका स्वभाव मनहैं व्यापी ॥
मनह मार कोन सिध थापी ॥ १ ॥
कवन सो मुन जो मन मारे ॥
मनको मार कहो, निसतारे ॥ २ ॥
मन अंतर बोले सब कोई ॥
मन मारे बिन भगत न होई ॥ ३ ॥
कहे कबीर जो जाने भेव ॥
मन मदसुदन त्रिभवन देव ॥ ४ ॥

पद ३१. (राग गौडी)

ओये जो दीसे अंबर तारे ॥
किन ओय चीते चीतन हारे ॥ १ ॥

कहोरे पंडत अंवर कासो लागा ॥
वूझे वूझन हार सो भागा ॥ २ ॥
सूरज चंद करहें उज्यारा ॥
सवमहे पसऱ्या ब्रह्म पसारा ॥ ३ ॥
कहे कवीर जानेगा सोय ॥
हिरदय राम सुख रामे होय ॥ ४ ॥

पद ३२ (राग गौडी)

वेदकी पुतरी सिमृति भाइ ॥
सकल जेवरी लेहे आइ ॥ १ ॥
आपन नगर आप तहें वाध्या ॥
मोहके फास काल सर साध्या ॥ २ ॥
कटीन काटे टुटन जाय ॥
सा सापन होय जगकुं खाय ॥ ३ ॥
हम देखत जिन सव जग लुंट्या ॥
कहेत कवीर मे राम कहे छुट्या ॥ ४ ॥

पद ३३. (राग गौडी)

दे मोद हार लगाम पेहेराऊं ॥
सगल तजीन गगन दोराऊं ॥ १ ॥
अपने विचार असवारी कीजे ॥
सहेज के पावडे पग धर लीजे ॥ २ ॥
चलरे बेकुंठ तुजे ले तारुं ॥
हित चित प्रेम के चाबुक मारुं ॥ ३ ॥

कहेत कबीर भले असवारा ॥
बेत कतेब ते रहे निरारा ॥ ४ ॥

पद ३४. (राग गौडी)

जहें मुख पांचो अमृत खाए ॥
तहें मुख देखत लुकट लाए ॥ १ ॥
एक दुख राम राय काटो मेरा ॥
अगन दहे ओर गरभ बसेरा ॥ २ ॥
काया विगुति वोह विध भांती ॥
को जारे को गढ ले माती ॥ ३ ॥
कहे कबीर हर चरण देखाओ ॥
पाछे ते जम किंव न पठाओ ॥ ४ ॥

पद ३५. (राग गौडी)

आपे पावक आपे पवना ॥
जारे खसम त राखे कवना ॥ १ ॥
राम जपत तन जरकी न जाय ॥
राम नाम चित रह्या समाय ॥ २ ॥
काको जारे कहे होय हान ॥
नट वट खेले सारंग पान ॥ ३ ॥
कहे कबीर अख्खर दोए भाख ॥
होएगा खसम तां लेगा राख ॥ ४ ॥

पद ३६. (राग गौडी)

नामें जोग ध्यान चित लाया ॥
विन वैरागंन छुटसं माया ॥ १ ॥
केसे जीवन होय हमारा ॥
जब न होय रामनाम आधारा ॥ २ ॥
कहे कवीर खोजो असमान ॥
राम समान ना देखो आन ॥ ३ ॥

पद ३७. (राग गौडी)

जहें सिर रच रच वांधत पाग ॥
सो सिर चूंच समारे काग ॥ १ ॥
इस तन धनको क्या गर बाया ॥
राम नाम काहेन द्रडआया ॥ २ ॥
कहे कवीर सुनो मन मेरे ॥
एह हवाल होएगे तेरे ॥ ३ ॥

पद ३८. (राग गौडी)

सुख मांगत दुख आगे आवे ॥
सो सुख हम हन माग्या भावे ॥ १ ॥
बिख्या अजहों सुरत सुख आसा ॥
कैसें होइए जां राम निवासा ॥ २ ॥

इस सुख ते शिव ब्रह्म डराना ॥
सो सुख हमो साच कर जाना ॥ ३ ॥
सनकादक नारद मुन सेखा ॥
तिनभी तनमें मन नई पेखा ॥ ४ ॥
इस मनको कोइ खोजो भाइ ॥
तन छुटे मन कहां समाइ ॥ ५ ॥
गुर परसाद जै देव नामा ॥
भगतके प्रेम इन ही है जाना ॥ ६ ॥
इस मनको नहीं आवन जाना ॥
जिसका भरम गया तिन साच पछाना ॥ ७ ॥
इस मनको रुप न रेखा काइ ॥
हुकमे हुआ हुकम बुझ समाइ ॥ ८ ॥
इस मनका कोइ जाने भेव ॥
एह मन लीन भये सुख देव ॥ ९ ॥
जीउ एक ओर सगल सरीरा ॥
इस मनको रव रहे कबीरा ॥ १० ॥

पद ३९. (राग गौडी)

अह निस एक नाम जो जागे ॥
केतक सिद्ध भये लिव लागे ॥ १ ॥
साधक सिद्ध सगल मुन हारे ॥
एक नाम कलपाथर तारे ॥ २ ॥
जो हर हरे सो होय न आना ॥
कहे कबीर राम नाम पछाना ॥ ३ ॥

पद ४०. (राग गौडी)

रे जी निलाज लाज तोंहे नाही ॥
हर तज कत काहूके जाही ॥ १ ॥
जाको ठाकोर उंचा होय ॥
सो जन पर घर जातन सोय ॥ २ ॥
सो साहेब रहा भर पूर ॥
सदा संग नाही हर दुर ॥ ३ ॥
कवला चरण सरन है जांके ॥
कहो जनका नाहीं घर तांके ॥ ४ ॥
सब कोउ कहे जासकी वातां ॥
सो समरथ ना जपत है दाता ॥ ५ ॥
कहे कबीर पूरन जग सोइ ॥
जाके हिरदे औरन कोइ ॥ ५ ॥

पद ४१. (राग गौडी)

कोनको पूत पिताको काको ॥
कोन मरे को देय संतापो ॥ १ ॥
हर ठग जग को ठगोरी लाइ ॥
हर के बियोग केसे जीवो मेरी माइ ॥ २ ॥
कोनको पुरख कोनकी नारी ॥
यातत लेओ शरीर बिचारी ॥ ३ ॥
कहे कबीर ठगसों मन मान्या ॥
गइ ठगोरी ठग पहेचान्या ॥ ४ ॥

पद ४२. (राग गौडी)

अब मोकु भये राजा राम सहाइ ॥
जनम मरन काट परम गत पाइ ॥ १ ॥
साधु संगत दीयो रलाय ॥
पंच दुत ते लीयो छडाय ॥ २ ॥
अमृत नाम जपो जप रसना ॥
अमोल दास कर लीनो अपना ॥ ३ ॥
सत गुरु कीनो पर उपकार ॥
काढ लीना सागर संसार ॥ ४ ॥
चरण कमल सों लागी प्रीत ॥
गोबिंद वसे निता नित चीत ॥ ५ ॥
माया तपत बुजा अंगार ॥
मन संतोख नाम आधार ॥ ६ ॥
जल थल पुर रहे प्रभो स्वामी ॥
जित पेखत तित अंतर जामी ॥ ७ ॥
अपनी भगत आपही द्रडाइ ॥
पूरब लिखत लिख्या मेरे भाइ ॥ ८ ॥
जिस किरपा करे तिस पूरन साज ॥
कवीर कोस्वामी गरीब निवाज ॥ ९ ॥

पद ४३. (राग गौडी)

जल है सूतक थल है सूतक सूतक कूपत होइ ॥
जनमें सूतक मुए पुन सूतक सूतक परज बि गोई ॥१॥

कहो रे पंडीआ कोन पवीता ॥
ऐसा ग्यान जपो मेरे मीता ॥ २ ॥
नैनह सूतक वैनह सूतक सूतक सरवनी होई ॥
उठत वैठत सूतक लागे सूतक परे रसोई ॥ ३ ॥
फासनकी बिध सवको जाने छुटनकी एक कोई ॥
कहे कवीर राम रिदे बिचारे सूतक किने न होई ॥४॥

पद ४४. (राग गौडी)

झगरा एक निवेरो राम ॥
जव तुम अपने जनस्यों काम ॥ १ ॥
एह मन वडाके जास्यों मन मान्या ॥
राम वडा के रामहे जान्या ॥ २ ॥
ब्रह्मा वडा के जास उपाया ॥
वेद वडा के जांहां ते आया ॥ ३ ॥
कहे कवीर हौ भया उदास ॥
तीरथ वडा के हरका दास ॥ ४ ॥

पद ४५. (राग गौडी)

देखो भाइ ग्यानकी आइ आंधी ॥
सबे उडानी भ्रह्मकी टाटी रहेन माया बांधी ॥ १ ॥
दो चितकी दोय थून गिरानी मोह वलेटा टूटा ॥
त्रसना छान परी धर उपर दुरमत भांडा फूटा ॥ २ ॥
आंधी पाछे जो जल बरखे तेह तेरा जन भीना ॥
कहे कवीर मन भया प्रकासा उदय भान जब चीना॥३

पद ४२. (राग गौडी)

अब मोकु भये राजा राम सहाइ ॥
जनम मरन काट परम गत पाइ ॥ १ ॥
साधु संगत दीयो रलाय ॥
पंच दुत ते लीयो छडाय ॥ २ ॥
अमृत नाम जपो जप रसना ॥
अमोल दास कर लीनो अपना ॥ ३ ॥
सत गुरु कीनो पर उपकार ॥
काढ लीना सागर संसार ॥ ४ ॥
चरण कमल सों लागी प्रीत ॥
गोविंद वसे निता नित चीत ॥ ५ ॥
माया तपत बुजा अंगार ॥
मन संतोख नाम आधार ॥ ६ ॥
जल थल पुर रहे प्रभो स्वामी ॥
जित पेखत तित अंतर जामी ॥ ७ ॥
अपनी भगत आपही द्रडाइ ॥
पूरब लिखत लिख्या मेरे भाइ ॥ ८ ॥
जिस किरपा करे तिस पूरन साज ॥
कबीर कोस्वामी गरीब निवाज ॥ ९ ॥

पद ४३. (राग गौडी)

जल है सूतक थल है सूतक सूतक कूपत होइ ॥
जनमें सूतक मुए पुन सूतक सूतक परज वि गोई ॥१॥

कहो रे पंडीआ कोन पवीता ॥
ऐसा ग्यान जपो मेरे मीता ॥ २ ॥
नैनह सूतक वैनह सूतक सूतक सरवनी होई ॥
उठत वैठत सूतक लागे सूतक परे रसोई ॥ ३ ॥
फासनकी विध सवको जाने छुटनकी एक कोई ॥
कहे कवीर राम रिदे विचारे सूतक किने न होई ॥४॥

पद ४४. (राग गौडी)

झगरा एक निवेरो राम ॥
जव तुम अपने जनस्यों काम ॥ १ ॥
एह मन वडाके जास्यों मन मान्या ॥
राम वडा के रामहें जान्या ॥ २ ॥
ब्रह्मा वडा के जास उपाया ॥
वेद वडा के जांहां ते आया ॥ ३ ॥
कहे कवीर हौं भया उदास ॥
तीरथ वडा के हरका दास ॥ ४ ॥

पद ४५. (राग गौडी)

देखो भाइ ग्यानकी आइ आंधी ॥
सवे उडानी भ्रह्मकी टाटी रहेन माया वांधी ॥ १ ॥
दो चितकी दोय थून गिरानी मोह वलेटा टूटा ॥
त्रसना छान परी धर उपर दुरमत भांडा फूटा ॥ २ ॥
आंधी पाछे जो जल वरखे तेह तेरा जन भीना ॥
कहे कवीर मन भया प्रकासा उदय भान जव चीना॥२

पद ४६. (राग गौंडी)

अयसे लोगनस्यों क्या कहीए ॥
जो प्रभु कीए भगत ते बाहार जिनते सदा डराने रहीये१
हर जस सुने न हर गुन गावे ॥
बात नहीं असमान गिरांवे ॥ २ ॥
आपन दे चुलूभर पानी ॥
तेह निंदे जेंह गंगा आनी ॥ ३ ॥
बेठत उठत कुटलता चाले ॥
आपन गये ओर न हुं घाले ॥ ४ ॥
छाड कु चरचा आनन जाने ॥
ब्रह्मा हुंको कह्या न माने ॥ ५ ॥
आप गये ओर न हुं खोवें ॥
आग लगाय मंदरमे सोवें ॥ ६ ॥
अवरन हसत आपह हीकाने ॥
तिनको देख कबीर लजाने ॥ ७ ॥

पद ४७. (राग गौंडी)

जीवत पितर न माने कोउ सुवे श्राध कराही ॥
पितर भी बपुरे कहो क्या पाये कउवा कुकर खाइ॥ १ ॥
मोको कुसल बतावो कोइ ॥
कुसल कुसल करतें जग बिनसें कुसलभी कैसे होइ॥२॥
माटीके कर देवी देवा तिस आगे जीउ देई ॥
एसे पितर तुमारे कहीए आपन कह्या न लेइ ॥३॥

सर जीउ काटे निरजु पूजे अंत कालको भारी ॥
राम नामकी गतनहीं जानी भय बुडे संसारी ॥ ४ ॥
देवी देवा पुजे डोले पार ब्रह्म नही जाना ॥
कहेत कबीर अकल नहीं चेत्या बिख्या सो लपटना॥५॥

पद ४८. (राग गौडी)

जीवत मरे मरे पुन जीवे ऐसे सुंन समाया ॥
अंजन माहे निरंजन रहीए बोहरन भौवजल पाया॥१॥
मेरे राम ऐसा खीर बिलोइए ॥
गुरमत मनवा असथिर राखे इन बिध अमृत पीओइए॥२॥
गुरके बान वज्जर कल छेदी प्रगट्या पद प्रकासा ॥
साकत अधेर जेवडी भर्म चुका नेहचल सिवघर बासा३
तिनबिन बाने धनुख चढाईहे जा वेध्या भाइ ॥
कहे कबीर अनभव एक देखा रामनाम लिव लाइ॥४॥

पद ४९. (राग गौडी)

उलट पवन चक्कर खट भेदे सुरत सुंने अनुरागी ॥
आवे न जावे मरेन जीवे तांसु खोजो वेरागी ॥ १ ॥
मेरे मन मनही उलट समाना ॥
गुर परसाद अकल भइ औरे नातरथा बेगाना ॥ २ ॥
निवरे दूर दूर फुन निवरे जन जैसा कर मान्या ॥
अलोतीका जैसे भया बरेडा जिन पीया तिन जान्या३
तेरी निरगुन कथा कायेसिउं कहीए येसा कोइ बबेकी॥
कहे कबीर जिन दीया पलीता तिन तेसी झल देखी ४

पद ५०. (राग गौडी)

तहे पावस सिंध धूप नही छाया तहें उतपत परलो नाही ॥
जीवन मिरतन सुख दुख व्यापे सुंन समाध दोऊ तहें नाही ॥ १ ॥
सहेजकी अकथ कथा है निरारी ॥
तिलनही चढे जाय न मुक्ती हलकी लगे नभारी ॥२॥
अरध उरध दोउ तहें नाही रात दिनस तह नाही ॥
जल नहीं पवन पावक फुन नाही सतगुर ताहां समाही ३
अगम अगोचर रहे निरंतर गुरकिरपाते लहीए ॥
कहे कबीर बल जाओ गुर अपने सत संगत मिलरहीए४

पद ५१. (राग गौडी)

पाप पुन दोहे बैल बसाहे पवन पूंजी परगास्यो ॥
त्रिसना गून भरी घटभीतर इन बिध टांड बिसाह्यो॥१॥
एसा नायक राम हमारा ॥
सगळ संसार कीयो बनजारा ॥ २ ॥
काम क्रोध दोय भये जगाती मन तरंग बटवारा ॥
पंच तत्व मिल दान निबेरे टांडा उतऱ्यो पारा ॥ ३ ॥
कहे कबीर सुनो रे संतो अब एसी बन आइ ॥
घाटी चडत बैल एक थाका चल्यो गोन छिटकाइ ॥४॥

पद ५२. (राग गौडी)

पेवकडे दिन चार है साहोरड़ेजाना ॥
अंधा लोक न जानइ मुरख याणा ॥ १ ॥
कहो डंडीआ बांधे धन खडी पीहू धर आए मुक
लाऊ आय ॥
ओह जे दीसे खुअडी कोन लाज्यो वारी ॥ २ ॥
लाज घडी सो टुट पडी उठ चली पनहारी ॥
साहेब होय दयाल किरपा करे अपना कारज समारे ॥ ३ ॥
तासोहागन जानीए गुर सबद विचारें ॥
किरतकी बंधी सब फिरे देखो विचारी ॥ ४ ॥
उसनो क्या आखीए क्या करे विचारी ॥
भइ निरासी उठ चली चित बंधन धीरा ॥ ५ ॥
हरकी चरणी लाग रहो भज सरन कबीरा ॥

पद ५३. (राग गौडी)

जोगी कहे जोग भल मीठा और नदुजा भाइ ॥
रुंडत मुंडत एके सबदी ए कहे सिध पाइ ॥ १ ॥
हर बिन भरम भुलाने अंधा ॥
जापहे जाऊ आप छुटकावन ते बांधे बोह फंदा ॥ २ ॥
जंहते उपजी तहीं समानी यो विध बिसरी तबही ॥
पंडत गुनी सूर हम दाते एह कहे बड हमही ॥ ३ ॥
जिसें बुझाए सोइ बुझे विन बुझे क्युं रहीए ॥
सत गुर मिले अंधेरा चुके इन विध मानक लइए ॥ ४ ॥

तज वांवे दहने बिकारा हर पद भ्रड कर रहीए ॥
कहे कबीर गुंगे गुर खाया पुछे ते क्या कहीए ॥ ५ ॥

पद ५४. (बावन अक्षरी.)

बावन अक्षर लोक त्रे सबकुछ इन ही मांह ॥
ए अखर खिर जायंगे ओ अखर इनमें नाह ॥ १ ॥
जांहां बोल तहे अक्षर आवा जह अबोल तहे मनन रहावा ॥
बोल अबोल मध है सोइ । जिस ओ है तिस लखे न कोइ ॥ २ ॥
अलह लहो त क्याकहो । उतको उपकारा ॥
वटक बीज में रव रहो।ज्यांको तीन लोक बिसथारा॥३
अलह लहनता भेद छे । कछु कछु पाया भेद ॥
उलट भेद मन वेध्यो । पायो अभंग अछेद ॥ ४ ॥
तुरक तरीकत जानीए । हिंदू बेद पुरान ॥
मन समजावन कारने । कुछ एक पडीए ग्यान ॥५॥
ओंकार आदमें जाना । लिख अर मेटे तांहेन माना ॥
ओंकार लिखे जो कोइ।सोइ लिख मेटना नहोइ॥६॥
कका किरन कमल में पावा । सास बिगास संकट नहीं आवा ॥
अरजे तांहां कुसम रस पावा। अक कहाकर काहां समझावा ॥ ७ ॥
खखा एहे खोड मन आवा । खोडे छाडन दंह दिस धावा ॥

खसमें जान खिमा कर रहे। तो होय निरखसम अखे पद लहे ॥ ८ ॥
गगा गुरके बचन पिछाना। दुजी बातन धरही काना॥
रहे बीहंगम कतह नजाइ। अगहे गहे रहे गगन रहाइ ९
घघा घट घट निमसे सोइ। घट फुटे घट कबह कहोइ॥
तां घटमाह घाट जो पावा। सो घट छाद अवघट कतधावा ॥ १० ॥
ङङा निग्रेह स्नेह कर। निर वारो संधेह॥
नाही देखन भाजीए। परम सिआनपएह ॥ ११ ॥
चचा रचित चित्र है भारी। तज चित्रे चेत चितकारी॥
चित्र बचित्र ऐहे अब झेरा। तज चित्रे चित राख चितेरा ॥ १२ ॥
छछा ऐहे छत्रपत पासा। छक किन रहो छांडतकी आसा॥
रे मन मै तो छिन छिन समजावा। तांह छाडकित आप बंधावा॥ १३ ॥
जजा जव तन जीवत जरावे। सोवन जार जुगत सो पावे॥
अस जर पर जर जर जब रहे। तब जाय जोत उजारो लहे॥ १४ ॥
झझा उरझ सुरझ नहीं जाना। रह्यो उरझ झक नही परवाना॥

कत झख झख औरन संमझावा । झगर कीए झगर ओही पावां ॥ १५ ॥
ञञा निकट जो घट रह्यो । दुर कांहां तज जाय ॥
तां कारण जर ढुंडीयो। नेरो पायो तांह ॥ १६ ॥
टटा बिकट घाट घट मांही । खोल कपाट मेहेल किन जाही ॥
देख अटल टल कत हन जावा।रहे लपट घट परचो पावा ॥ १७ ॥
ठठा एहे दुर ठग नीरा । नीठ नीठ मन कीया धीरा ॥
जिन ठक ठग्या सगल जग खावा। सो ठग ठग्या ठौर मन पावा ॥ १८ ॥
डडा डर उपजे डर जाइ।तां डर मे डर रह्या समाइ ॥
जो डर डरे ताहां फिर डर लागे । निडर हुआ डर ओरहोइ भागे ॥ १९ ॥
ढढा ढिग ढुंडे कत आना । ढुंड तहीं ढह गये पराना ॥
चड सुमेर ढुंड जब आवा । जेह गढ गढो सो गढमे पावा ॥ २० ॥
णणा रण रुतो नर नेही करे।ना निवे ना फुन संचरे॥
धंन जनम तांही को गणे । मारे एक तजे जा घणे॥२१॥
तता अतर तरयो नह जाइ । तन त्रिभोवनमें रह्यो॥ समाइ ॥
जो त्रिभोवन तन मांहि समावा।तो ततहे तत मिल्या सुच पावा ॥ २२ ॥

थथा अथा थाह नही पावा।वो अथाह एहथिरनारहावा॥
थोडे थल थानक आरंभे। विनही थांभेह मंदर थंभे२३
दवा देखजो विनसन हारा। जिस अदेख तिस रखो विचारा॥
दसवें द्वार कूंजी जव दीजे। तव दयालकों दरसन कीजे॥ २४॥
धधा अर्धे उर्ध निवेरा। अर्धे उंर्धे मांझ बसेरा॥
अर्धे छाड उर्ध जब आवा। तव अर्धे उर्ध मिल्या सुख पावा॥ २५॥
नना निसदिन निरखत जाइ। निरखत नैन रहे रत चाइ॥
निरखत निरखत जब जायपावा। तव ले निरखे निरख मिलावा॥ २६॥
पपा अपर पार नहीं पावा।परंम जोतस्यों परच्यो लावा॥
पांचो इंद्री निग्रह करही।पाप पुन दोऊ निर वरइ॥२७॥
फफा बिन फुले फल होइ। तांफल फले लखे जो कोइ॥
दूण न परइ फंक विचारे ता फल फंक सभे तन फारे॥ २८॥
ववा विंदह विंद मिलावा।विंदे विंद न विछरन पावा॥
वंदो होय वंदगी गहे। वंधक होय वंध सुध लहे॥२९॥
भभा भेदह भेद मिलावा। अब भव भान भरोसो आवा॥

कत झख झख औरन समझावां । झगर कीए झगर ओही पांवां ॥ १५ ॥
ञञा निकट जो घट रह्यो । दुर कांहां तज जाय ॥
तां कारण जर ढुंडीयो। नेरो पायो तांह ॥ १६ ॥
टटा बिकट घाट घट मांही । खोल कपाट मेहेल किन जाही ॥
देख अटल टल कत हन जावा। रहे लपट घट परचो पावा ॥ १७ ॥
ठठा एहे दुर ठग नीरा । नीठ नीठ मन कीया धीरा ॥
जिन ठक ठग्या सगल जग खावा। सो ठग ठग्या ठौर मन पावा ॥ १८ ॥
डडा डर उपजे डर जाइ। तां डर मे डर रह्या समाइ ॥
जो डर डरे ताहां फिर डर लागे । निडर हुआ डर ओरहोइ भागे ॥ २१ ॥
ढढा ढिग ढुंडे कत आना । ढुंड तही ढह गये पराना ॥
चड सुमेर ढुंड जब आवा । जेह गढ गढो सो गढमें पावा ॥ २० ॥
णणा रण रुतो नर नेही करे । ना निवे ना फुन संचरे ॥
धन जनम तांही को गणे । मारे एक तजे जा घणे ॥ २१ ॥
तता अतर तरयो नह जाइ । तन त्रिभोवनमें रह्यो समाइ ॥
जो त्रिभोवन तन मांहे समावा। तो ततहे तत मिल्या सुच पावा ॥ २२ ॥

थथा अथा थाह नहीं पावा।वो अथाह एहथिरनारहावा॥
थोडे थल थानक आरंभे। बिनही थांभेह मंदर थंभे२३
ददा देखजो बिनसन हारा। जिस अदेख तिस रखो विचारा॥
दसवें द्वार कूंजी जब दीजे। तब दयालको दरसन कीजे॥ २४॥
धधा अर्धे उर्झे निवेरा। अर्धे उंर्धे मांझ बसेरा॥
अर्धे छाड उर्ध जब आवा। तब अर्धे उर्ध मिल्या सुख पावा॥ २५॥
नना निसदिन निरखत जाइ। निरखत नैन रहे रत वाइ॥
निरखत निरखत जब जायपावा। तब ले निरखे नि रख मिलावा॥ २६॥
पपा अपर पार नहीं पावा।परंम जोतस्यो परच्यो लावा॥
पांचो इंद्री नियह करही।पाप पुन दोऊ निर वरइ॥२७॥
फफा बिन फुले फल होइ। तांफल फले लखे जो कोइ॥
दूण न परइ फंक बिचारे ता फल फंक सभे तन फारे॥ २८॥
बबा बिदह बिद मिलावा।बिंदे बिंद न बिछरन पावा॥
बंदो होय बंदगी गहे। बंधक होय बंध सुध लहे॥२९॥
भभा भेदह भेद मिलावा। अब भव भान भरोसो आवा॥

जो बाहर सो भीतर जान्या । भया भेद भुपत पेहे
चान्या ॥ ३० ॥
ममा मूल गया मन माने।मरमी होयसो मनकुं जाने॥
मत कोइ मन मिलता बिलमावे । मगन भया तैसो
सचपावे ॥ ३१ ॥
ममा मनसों काज है । मन साधे सिध होय ॥
मन ही मनस्यों कहे कंबीर।मासा मिल्यान कोय॥३२॥
एह मन शक्ति ए मन सीव।एह मन पंच ततको जीव॥
एह मन ले जब उन मुन रहे । तो तीन लोककी
बांते कहे ॥ ३३ ॥
यया ज्यो जानो तो दुरमत। हनकर वसकाया गाव ॥
रन रुतो भाजे नही। सुरो थारो नाव ॥ ३४ ॥
रारा रस निरस कर जान्या।काया भेद भूत पेहचान्या॥
एह रस छाडे ओह रस आवा॥ ओह रस पीया यह
रस नही.भावा ॥ ३५ ॥
लला ऐसे लिव मन लावे । अन तन जाय परम
सच पावे ॥
अरजो तांहां प्रेम लिव लावे । तव अलह लहे लहे
चरन समावे ॥ ३६ ॥
ववा बार बार बिसन समार । बिसन समारन आवे
हार ॥
बल बल जे बिसन तना जस गावे । बिसन मिले
सबही सच पावे ॥ ३७ ॥

ववा वाही·जानीए । वा जाने यह होय ॥
यह अर ओह जब मिले तब।मिलतन जाने कोय॥३८॥
ससा सो नीका कर शोधो।घटपरचाके बात निरोधो॥
घटपरचे जो उपजे भाव । पूर रह्या तहे त्रिभोवन
राव ॥ ३९ ॥
खखा खोज परे जो कोइ।जो खोजे सो बोहरन होइ॥
खोज बूझ जब करे विचारा । तो भव जल तरतन
लावे वारा ॥ ४० ॥
ससा सोसह सेज सवारे ।सोइ सही संदेह निवारे ॥
अलप सुख छांड परम सुख पावा । तब येह त्रीया
ओहकंत कहावा ॥ ४१॥
हाहा होत है ए नही जाना । जब ही होय तबहे मन
माना ॥
हैतो सही लखे जो कोइ । तब ओही ओह एहना
होइ ॥ ४२ ॥
लिव लिव करत फिरे सब लोग । तां कारन व्यापे
बोह सोग ॥
लखमी बरस्यों जो लिव लावे । सोग मिटे सबही
सुख पावे ॥ ४३ ॥
खखा खिरत खपत गये केते । खिरत खपत अज हुं
नही चेते ॥
अब जग जान जब उन मना रहे । जाहां का बिछरा
तहे थिर लहे ॥ ४४ ॥

बावन अखर जो रे आन । स कयान अखर एक पहेछान ॥
सतका सब्द कबीरा कहे । पंडत होय सो अनभये रहे ॥ ४५ ॥
पंडत लोगो कों क्यो हारा । ग्यानवंतको तत बिचारा ॥
जांके जीय जैसीं बुध होइ । कहे कबीर जानेगा सोइ ॥ ४६ ॥

पद ५५. (पदरे तिथी)

पंदरे तिथी सात वार । कहे कबीर उर वारन पार ॥
साधक सिध लखे जो भेव । आपे करता आपे देव ॥
अमावस महे आस निवारो । अंतरजामी राम समारो ॥
जीवत पावो मोख दुवार । अनुभव सबद तत्त निज सार ॥
चरण कमल गोविंद रंगलागा । संत प्रसाद भये मन निरमल हरकीरतन मै अनदिन जागा ॥ १ ॥
पडवा प्रीतम करे बिचार । घटमें खेले अघट अपार ॥
कल कलपना कदे न खाय । आद पुरखमै रहे समाय २
दुतिया दोहे कर ज्ञाने अंग । माया ब्रह्म रमे सब संग ॥
ना वोह वढे न घटता जाय । अकल निरंजन एके भाय ३
त्रितीया तीने समकर लेयावे । आनंद मूल परमपद पावे ॥
साध संगत उपजे बिस्वास । बाहर भीतर सदा प्रकास ४
चोथे चंचल मनको गहो । काम क्रोध संग कबहु न बहो ॥
जल थल माहे आपे आप । आपे जपे आपना जाप ॥ ५ ॥
पांचे पंच तत्त बिस्थार । कनक कामनी जुग क्यो हार ॥

प्रेम सुधा रस पीवे कोय। जरा मरण दुख फेर न होय ६
छठ खट चक्र चहुं दिस धाय। विन परचे नहीं थीर रहाय ॥
दुवधा मिटे खिमा गहे रहो। करम धरमकी सुल न सहो ७
साते सतकर वाचा जान। आतम राम लेह परवान ॥
छूटे संसा मिट जाय दुख। सुन सरेवर पावो सुख॥८॥
अष्टमी अष्ट धातकी काया। तामे अकल माहा निध राया ॥
गुर गम ग्यान बतावे भेद। उलटा रहे अभंग अछेद॥९॥
नवमी नव द्वारे कों साध। बोहोती मनसा राखो बाद ॥
लोभ मोह सब विसर जाय। जुग जुग जीवा अमर फल खाय ॥ १० ॥
दसमी दहे दिस होय अनंद। छुटे भरम मिले गोविंद ॥
जोत सरुपी तत्त अनूप। अमल नमल न छाह न धूप ११
एकादसी एकदिस धावे। तव जोनी संकट बोहर न धावे ॥
सीतल निरमल भया सरीरा। दूर बतावत्त पाया नीरा १२
वारस वारे उगवे सूर। अहे निस वाजे अनहद तूर ॥
देख्या तिहुं लोकका पीव। अचरज भयो जीवतें शीव ॥ १३ ॥
तेरस तेरह अगम बखान। अर्ध उर्ध वीच संम पेहेछान ॥
नीच उंच नहीं मान अपमान। व्यापक राम सकल समान ॥ १४ ॥
चौदस चौदह लोक मंझार। रोम रोममे बसे मुरार ॥

बावन अखर जो रे आन । स कथान अखर एक पद्देछान ॥
सतका सब्द कबीरा कहे । पंडत होय सो अनभये रद्दे ॥ ४५ ॥
पंडत लोगो कों ब्यो हारा । ग्यानवंतको तत बिचारा ॥
जांके जीय जैसी बुध होइ । कद्दे कबीर जानेगा सोइ ॥ ४६ ॥

पद ५५. (पदंरे तिथी)

पंदरे तिथी सात वार । कहे कबीर उर वारन पार ॥
साधक सिध लखे जो भेव । आपे करता आपे देव ॥
अमावस मद्दे आस निवारो । अंतरजामी राम समारो ॥
जीवत पावो मोख दुवार । अनुभव सबद तत्त निंज सार ॥
चरण कमल गोविंद रंगलागा । संत प्रसाद भये मन निरमल हरकीरतन मै अनदिन जागा ॥ १ ॥
पडवा प्रीतम करे विचार । घटमे खेले अघट अपार ॥
कल कलपना कदे न खाय । आद पुरखमै रद्दे समाय २
दुतिया दोहे कर जाने अंग । माया ब्रह्म रमे सब संग ॥
ना बोद्द बढे न घटता जाय । अकल निरंजन एके भाय ३
त्रितीया तीने समकर ले यावे । आनंद मूल परमपद पावे ॥
साध संगत उपजे बिस्वास । बाहर भीतर सदा प्रकास ४
चोये चंचल मनको गहो । काम क्रोध संग कबहु न वहो ॥
जल थल मांद्दे आपे आप । आपे जपे आपना जाप ॥ ५ ॥
पाचे पंच तत्त बिस्थार । कनक कामनी जुग ब्यो हार ॥

व्रेस्पत बिखीया दे बहाय ॥
तीन देव एक संग लाय ॥
तीन नदी तहे त्रिकुटी आह ॥
एह निस कसमल धोवो नाय ॥ ६ ॥
सुक्रत सहारे सो एह व्रत चढे ॥
अनदिन आप आपसो लढे ॥
सुरखी पांचो राखे सबे ॥
तब दूजी द्रष्ट न पैसे कबे ॥ ७ ॥
थावर थिरकर राखे सोय ॥
जोत डीवटी घटमे जोय ॥
बाहर भीतर भया प्रकाश ॥
तब हुवा सगल करमका नास ॥ ८ ॥
जब लग घटमें दूजी आन ॥
तब लो मेहेलन लाभे जान ॥
रमत राम स्यो लागो रंग ॥
केहेत कबीर तब निरमल अंग ॥ ९ ॥

पद ५७. (राग गौडी)

जेह कछु आहा तहें कछु नाही पंच तत तहें नाही ॥
इडा पिंगला सुख मना बंदे एह अवगुन कित जाही ॥
तागा टुटा गगन बिनस गया तेरा बोल तां कांहां समाइ ॥
एह संसा मोको अनदिन व्यापे मोको कोन कहे सम झाइ ॥ २ ॥

सत संतोख का धरो ध्यान। कथनी कथीए ब्रह्म ग्यान १५
पूनो पूरा चंद आकाश। पसरे कला सहज प्रकास॥
आद अंत मध होय रहा बीर। सुख सागरमें रमे
कबीर॥ १६॥

पद ५६. (सात वार)

बार वार हरके गुन गावुं॥
गुर गम भेद सो हरका पावुं॥ १॥
आदित्त करे भगत आरंभ॥
काया मंदर मनसा थंभ॥
यह निस अखंड सोरही जाय॥
तव अनहद वेण सहजमे बाय॥ २॥
सोमवार ससी अमृत झरे॥
राखत वेग सकल विख हरे॥
वाणी रोकया रहे द्वार॥
तव मन मत वारो पीवन हार॥ ३॥
मंगल वारे ले माहीत॥
पंच चोरकी जाणे रीत॥
घर छांडे बाहर जिन जाय॥
नातर खरा रिसे है राय॥ ४॥
बुधवार बुध करे प्रकाशा॥
हिरदे कमलमें हरको वासा॥
गुर मिल दोउ एक सम धरे॥
उर्ध पंक ले सुधा करे॥ ५॥

दिनकी बैठ खसमकी बरकस एह बेलाकत आइ ॥
छुटे कुंडे भिंगे पूरीआ चल्यो जुलाहो रीसाइ ॥३॥
छोछी नली तंत नही निकसे नातर रही पूरजाइ ॥
छोड पसार इहां रह्यो बपरी कहे कबीर समझाइ ॥४॥

पद ६०. (राग गौडी)

एक जोत एका मिली कीवा होयम होय ॥
जित घट नामन उपजे छूट मरे जन सोय ॥
सावल सुंदर रमैया मेरा मन लागा तोय ॥ १ ॥
साध मिलेसिध पाइ एके एह जोगके जोग ॥
दोह मिल कारज उपजे रामनाम संजोग ॥ २ ॥
लागे जाने योगीतहे एह तो ब्रह्म बिचार ॥
ज्यो कासी उपदेश होय मानस मरती बार ॥ ३ ॥
कोइ गावे को सूने हरनाम चित लाय ॥
कहे कबीर संसा नही अंत परंम गत ताय ॥ ४॥

पद ६१. (राग गौडी)

जेते जतन करत ते डूबे भवसागर नही तार्‍योरे ॥
परम धरम करतेबोह संजम अहंमबुध जार्‍योरे ॥१॥
सास ग्रासको दातो ठाकुर सोक्युं मनो बिसार्‍यो रे ॥
हीरा लाल अमोल जनम है कौवडी बदले हार्‍योरे २
त्रिसन त्रिखा भूख भ्रम लागी हिरदे नाह बिचर्‍योरे॥
उनमत माह रह्यो मनमाही गुरका सबद न धार्योरे ३
स्वाद लोभत इंद्री रस प्रेर्‍यो मद रस लेत बिकार्योरे॥

जेह ब्रह्मंड पिंड तहें नाही रचनहार तहें नाही ॥
जोडन हारो सदा अतिता एक ओही किन आही ॥ ३ ॥
जोडी जुडे न तोडी तूटे जब लग होय बिनासी ॥
काको ठाकुर काको सेवक को काहुके जासी ॥ ४ ॥
कहे कबीर लिव लाग रहीहै जांहा बसे बिनराती ॥
वाका मर्म ओही परजाने ओहतो सदा अबनासी ॥५॥

पद ५८. (राग गौडी)

सूति स्मृति दोए कन्नी मुंद्रा पर मित बहार खिनथा ॥
सुन्न गुफामहे आसन बैसन कलप बिबरजत अनुथा १
मेरे राजन मै बैरागी जोगी मरतन सोग बेयोगी ॥
खंड ब्रह्मंडमे सीगी मेरा बटुवा सब जग भस्माधारी ॥
ताडी लागी त्रिपाल पलटीए छुटेहोय पसारी ॥ २ ॥
मन पवन दोए तूंबा करीहै जुगजुग सारद साजी ॥
थिर भइ तंती तुटस नाही अनहद गिंकरी बाजी ॥ ३॥
सुन मगन भयेहै पुडे माया दौलत लागी ॥
कहे कबीर तांको पूनरप जनम नही खेलगयो बैरागी ४

पद ५९. (राग गौडी

गजनव गजदस गजएकीस पुरीआ एक तनाइ ॥
साठ सूत नव खंड बहतर पाट लगो अधकाइ ॥
गइ बुनावन माहो घर छोडीए जाय जुलाहो ॥ १ ॥
गजी न मीनीए तोलन तुलीए पांचन सेर अढाइ ॥
जे कर पांचन बेदान पावे झगर करे घर हाइ ॥ २ ॥

हमरा धन माधव गोविंद धरनीधर एह सार धन कहीए॥
जो सुख प्रभ गोविंदकी सेवा सो सुख राजन लहीए॥ २॥
ईस धन कारन सिव सनकादिक खोजत भए उदासी॥
मन मूकंद जहेवा नारायण परे न जमकी फांसी ॥३॥
निजधन ग्यान भगत गुरदीना तासो सुमत मन लागा॥
जलत अंभ थंब मन धावत भ्रम बंधन भव भागा॥४॥
कहे कबीर मदन के माते हिरदे देख बिचारी॥
तुमघर लाख करोड अस्व हस्ती हम घर एक मोरारी५

पद ६४ (राग गौडी)

ज्यु कपीके कर मुष्ट चंननकी लुभधन त्याग दयो॥
जो जो करम कीए लालच स्यों ते फिर गरभ पर्यो॥१॥
भगत बिन बिरथा जनम गयो॥
साध संगत भगवान भजन बिन कहीन साच रह्यो॥२॥
ज्यों उद्यान कुसम कर फूलंत कित हन घाह लह्यो॥
तैसे भ्रमत अनेक जोनमे फिर फिर काल हयो॥३॥
या धन जोवन अर सुत दारा पेखन को जो दयो॥
तिनही माह अटक जो उरझे इंद्री पेर लयो॥ ४॥
अवध अनल तन तिनको मंदर चवदिस ठाट ठयो॥
कहे कबीर भय सागर तरनको मै सतगुर ओट लयो ५

पद ६५. (राग गौडी)

पानी मैला माटी गोरी॥
इस माटीकी पुतरी जोरी॥ १॥

करम भाग संतन संगाने काष्ठ लोह उधाऱ्योरे ॥ ४ ॥
धावत जोत जनम भ्रम थाके अब दुख करहम हा
ऱ्योरे ॥ ५ ॥
कहे कबीर गुरमिलत महा रस प्रेम भगत निस्ता
ऱ्योरे ॥ ५ ॥

पद ६२. (राग गौडी)

काल बूत हस्तनी मन बवरारे चलत रच्यो जगदीस ॥
काम सो आप गज बस परे मन बवरारे अंकुस
सह्यो सीस ॥ १ ॥
बिखे बाच हर राच समज मन बवरारे ॥
निरभे यों न हर भजे मन बवरारे गह्यो न राम
जहाज ॥ २ ॥
मरकट मुष्ठी अनाजकी मन बवरारे लीती हाथ पसार ॥
छुट नका संसा परया मन बवरारे नाच्यो घर घर
बार ॥ ३ ॥
ज्यों नलनी सूवटा गह्यो मन बवरारे माया एह व्योहार ॥
जैसा कुरंग कुसंभका मन बवरारे तव पसऱ्यो पासार ॥ ४
नावनकुं तीरथ घने मन बवरारे पूजनको बहो देव ॥
कहे कबीर छूटन नही मन बवरारे छूटन हरकी सेव ५

पद ६३. (राग गौडी)

अगन न दहे पवन नही मगने तस्कर नेर न आवे ॥
राम नाम धन कर संच्चरे सो धन कबही न जावे ॥ १ ॥

जीयरा हरके गुन गाव ॥
गरभ जोन उरध तप करता ॥
तव जठर अगन मैं रहेता ॥ २ ॥
लख चोरासी जोन भ्रमआयो ॥
अवके छुटके ठवरन ठायो ॥ ३ ॥
कहे कवीर भज सारंग पानी ॥
आवत दीसे जातन जानी ॥ ४ ॥

पद ६८ (राग गौडी)

सुरग वासन वाछीए डरीए न नरक निवास ॥
होना होयसो होय है मन हन कीजे आस ॥ १ ॥
रमैया गुन गाइए जाते पाइए परम निधान ॥
क्या जप क्या तप संजमो क्या व्रत क्या इसनान २
जवलग जुगत न जानीए भाव भगत भगवान ॥
संपे देखन हरखीए बिपत देख न रोय ॥ ३ ॥
ज्यो संपे त्यों विपत है बिधन रच्या सो होय ॥
कहे कवीर अव जानीआ संतन रिदे मंझार ॥
सेवक सो सेवा भली जेंह घट वसे मोरार ॥ ४ ॥

पद ६९. (राग गौडी)

रे मन तेरो कोनही खीच ले जिन भार ॥
विरख बसेरो पंखको तैसो एह संसार ॥ १ ॥
राम रस पीयारे जेह रस बिसर गये रस और ॥

मै नाही कछु आहन मोरा ॥
तन धन सब रस गोविंद तोरा ॥ २ ॥
इस माटीमें कोन समाया ॥
झूठा परपंच जोर चलाया ॥ ३ ॥
किनहुं लाख पांचकी जोरी ॥
अंतकी बार गागरीआ फोरी ॥ ४ ॥
कहे कबीर एक नीव उसारी ॥
खिनमें बिनस जाय अहंकारी ॥ ५ ॥

पद ६६. (राग गौडी)

राम जपो जीआ ऐसे ऐसे ॥
धृ पहेलाद प्यजो हर जेसै ॥ १ ॥
दीन दयाल भरोसे तेरे ॥
सभ परवार चढायो बेडे ॥ २ ॥
जां तिस भावे तां हुंकम मनावे ॥
इस बेडेको पार लंघावे ॥ ३ ॥
गुर परसाद ऐसी बुध समानी ॥
चूकगइ फिर आवन जानी ॥ ४ ॥
कहे कबीर भज सारंगपानी ॥
उर बार पार सभ एको दानी ॥ ५ ॥

पद ६७. (राग गौडी)

जोन छांड जो जगमें आयो ॥
लागत पवन खसम बिसरायों ॥ १ ॥

जीअरे जाइगा मै जाना अव गत समज इयाणा ॥
जत जत देखो वोहरन पेखो संग माया लपटाणा॥२॥
ग्यानी ध्यानी बहो उपदेशी एह जग सगलो धंधा ॥
कहे कबीर एक रामनाम विन एह जग माया फंदा॥३॥

पद ७३. (राग गौडी)

मनरे छांडो भरम प्रगट होय नाचो या मायाके डाडे ॥
सूर किसन मुख रनते डरपे सतीके साचे भाडे ॥ १ ॥
डगमग छाडरे मन ववरा ॥
अव तो जरे मरे सिध पाइए लीनो हाथ सिंघोरा॥२॥
काम क्रोध माया के लीने या विध जगत बिगुता ॥
कहे कबीर राजाराम न छोडुं सगल उंचते उंचा॥३॥

पद ७४. (राग गौडी)

फुरमान तेरा सिरे उपर फिर न करत विचार ॥
तुहीं दरीआ तुही करीआ तुझे ते निस्तार ॥ १ ॥
वंदे वंदगी इख्ती आर ॥
साहेब रोस धरो के प्यार ॥ २ ॥
नाम तेरा आधार मेरा ज्यो फुल जइहे नार॥
कहे कवीर गुलाम घरका जीआय भावे मार॥३॥

पद ७५. (राग गौडी)

लख चौरासीह जीआ जोनमे भ्रमत नंद वहो थाकोरे॥
भगत हेत अवतार लीयोहे भाग वडो वपुरा केरो॥१॥

और मुवे क्या रोइए जो आपाथिर न रहाय ॥
जो उपजे सो विनस है दुखकर रोवे बलाय ॥ २ ॥
जेहे की उपजी तहे रची पीवत मरदन लाग ॥
कहे कबीर चित चेतया राम सिमर बैराग ॥ ३ ॥

पद ७० (राग गौडी)

पंथ निहारे कामनी लोचन भरी ले उसास ॥
उरन भींजे पग ना खिसे हर दरसनकी आस ॥ १ ॥
उडहन कागा कारे ॥
बेग मिलीजे अपने राम प्यारे ॥ २ ॥
कहे कबीर जीवन पद कारण हरकी भगत करीजे ॥
एक आधार नाम नारायण रसना राम रवीजे ॥ ३ ॥

पद ७१ (राग गौडी)

आस पास घन तुलसी बिरवा माझ बनारस गांवरे ॥
वाकासरुप देख मोही ग्वारन मोंको छोडन आउंन जाहुंरे ॥ १ ॥
तोह चरन मन लागा सारंगधर सो मिले जो वडभागो ॥
बिंदरावन मन हरन मनोहर क्रिष्ण चरावत गावुरे॥
जाका ठाकुर तुही सारंग धर मोह कबीरा नाउंरे ॥१॥

पद ७२. (राग गौडी)

विपल बस्त्र केते है पहेरे क्या बन मद्धे वासा ॥
कहा भया नर देवा तोखे क्या जल बोर्यो ग्याता॥ १ ॥

पद ७७ (राग गौडी)

राजाराम तु ऐसा निरभव तरन तारन राम राया ॥
जब हम होते तब तूं नाही अब तुमहो हम नाही ॥
अब हम तुम एक भएहै एके देखत मनपतीआइ॥१॥
जब बुद्ध होती तब बल कैसा अब बुध बलन खटाइ॥
कहे कबीर बुध हिर लइ मेरी बुध बदली सिध पाइ २

पद ७८. (राग गौडी)

खट नेम कर कोठडी बांधी वस्त अनूप विच पाइ ॥
कूंजी कुलफ प्रानकर राखे करते वार न लाइ ॥ १ ॥
अब मन जागत रहोरे भाइ ॥
गाफल होयके जनम गुमाया चोर मुसे घर जाइ ॥२॥
पंच पहरुवा दर मे रहेते तिनका नही पतीआरा ॥
चेतसु चेत चित होय रहे तब ले परगास उजारा ॥३॥
नव घर देख जो कामन भूली वस्त अनूप न पाइ ॥
कहे कबीर वे घर मुसे दसवे तत्त समाइ ॥ ४ ॥

पद ७९. (राग आसा)

गुरु चरन लाग हम बिनवंता पूछत कहे जीव पाया ॥
कोन काज जग उपजे बिनसे कहो मोह समझाया॥१॥
देव करो दया मोह मारग लावो जित भये बंधन टुटे॥
जनम मरण दुख फेड करम सुख 'जीआ जनमते
छुटे ॥ २ ॥

तुम जो कहंत हो नंदको नंदन नंदसु नंदन काकोरे॥
धरन आकास दसोदिस नाहीं तब एह नंद कांहां थोरे ॥ २ ॥
संकट नही परे जोन नही आवे नाम निरंजन जांकोरे॥
कबीर को स्वामी ऐसो ठाकुर जां कै माइ न बापोरे३

पद ७८. (राग गौडी)

निंदो निंदो मोको लोग निंदो ॥
निंदा जनको खरी प्यारी ॥
निंदा बाप निंदा महेतारी ॥ १ ॥
निंदा होयतो बैकुंठ जाइए ॥
नाम पदारथ मनहे बसाइए ॥ २ ॥
रिदे सुद्ध जो निंदा होय ॥
हमरे कपरे निंदक धोय ॥ ३ ॥
निंदा करे सो हमरा मीत ॥
निंदक माह हमारा चीत ॥ ४ ॥
निंदक सो जो निंदा होरे ॥
हमरा जीवन निंदक लोरे ॥ ५ ॥
निंदा हमरी प्रेम प्यार ॥
निंदक हमरा करे उधार ॥
जन कबीर को निंदा सार ॥
निंदक डूबा हम उतरे पार ॥ ७ ॥

तिस बापको क्यु मनो बिसारी ॥
आगे गया न बाजी हारी ॥ २ ॥
मुई मेरी माई हों खरा सुखाला ॥
पेहेरुं नही दगला लगे न पाला ॥ ३ ॥
बल तिस बापे जिनहों जाया ॥
पंचाते मेरा संग चुकाया ॥ ४ ॥
पंचमार पांव तलदीने ॥
हर सिमरन मेरा मन तन भीने ॥ ५ ॥
पिता हमारा बडो गोसाई ॥
तिस पिता पहे हों क्युकर जाई ॥ ६ ॥
सत गुर मिले तो मारग देखाया ॥
जगत पिता मेरे मन भाया ॥ ७ ॥
होपूत तेरा तु बाप मेरा ॥
एके ठाहर दुहां बसेरा ॥ ८ ॥
कहे कबीर जिन एको बुझया ॥
गुर परसाद मै सब कुछ सुझया ॥ ९ ॥

पद ८२. (राग आसा)

ईकत पतर भर उरकट कुरकट एक पतरभर पानी ॥
आस पास पंच जोगीया बैठे बीच निकट दे रानी॥ १ ॥
नकटी कोठ न गनवा डाडु किनहे बबेकी काटीतु ॥
सगल माहे नकटीका बासा सगल माहे हों हेरी ॥ २ ॥
सगल्यां की हों बेहेन भानजी जिनहे बरी तिस चेरी ॥
हमरो भरता बडो बिबेकी आपे संत कहावे ॥ ३ ॥

माया फांस बध नही फारे अर मन सुनन लूके ॥
आपा पद निरवाण न चीन्या इन विध अभयो न चूके ३
कही न उपजे उपजी जाणे भाव अभाव विहुणा ॥
उदे असतकी मन बुध नासी तां सदा सहेज सुखलीना ४
ज्युं प्रतीबिंब बिंबको मिलीए उदक कुंभ बिगराना ॥
कहे कबीर ऐसा गुण भ्रम भागा तबमन सुन समाना५

पद ८०. (राग आसा)

गज साढे त्रेते धोतीयां तेहरे पायन तग ॥
गली जिना जप मालीयां लोटे हत न बग ॥ १ ॥
वो हरके संतन आखीए ओ बनारसके ठग ॥
एसे संतन मोकुं भावे ॥
डाला स्युं पेडा गटकावे ॥
बासन माज चढावे उपर काठी धोए जलावे ॥
वसुधा खोद करे दो चूले सारे माणस खावे ॥ २ ॥
ओय पापी सदा फिरे अपराधी मुखो अपरस कहांवे ॥
सदा सदा फिरे अभिमानी सकल कुटंब डुबावे ॥ ३ ॥
जितको लाया तितही लागा तैसे करम कमावे ॥
कहे कबीर जिस सतगुर भेटे पुनरप जनम न आवे ४

पद ८१. (राग आसा)

बाप दिलासा मेरो कीनो ॥
सेज सुखाली मुख अमृत दीनो ॥ १ ॥

वंनस को पुत वेआहन चलेआ सोने मंडप छाए ॥
रुप कन्या सुंदर वेदी ससे सिंघ गुण गाए ॥ ४ ॥
कहेत कबीर सुनोरे संतो कीटी परबत खाया ॥
कछुआ कहे अंगारा भिलोरो लुकी सबद सुनाया ॥५॥

पद ८५. (राग आसा)

बटुवा एक बहत्तर धारी एको जिसे दुआरा ॥
नवे खंडकी प्रथवी मांगो सो जोगी जग सारा ॥ १ ॥
ऐसा जोगी नवनिध पावे ॥
तलका ब्रह्म ले गगन चढावे ॥ २ ॥
खिंन्था ग्यान ध्यान कर सुइ सबद तागा मथ घाले ॥
पंच ततकी कर मिरगानी गुरके मारग चाले ॥ ३ ॥
दया फावरी काया कर धुनी द्रष्टकी अगन जरावे ॥
तिसका भाव लये रिद अंदर चहों जुगताडीलावे ॥४॥
सब जोग तणा राम नाम है जिसका पिंड पराना ॥
कहे कबीर जे किरपा धारे दे सचा निसाना ॥ ५ ॥

पद ८६. (राग आसा)

हिंदु तुरक कहांते आए किनए गह चलाइ ॥
दिलमे सोच बिचार कवादे भिस्त दोजख किन पाइ १
काजी तैं कोन कतेब वखानी ॥
पडत गुनत ऐसे सब हारे किनही खबर न जानी ॥२॥
सकत सनेह कर सुन्नंत करीए मैन बदोगा भाइ ॥
जबरे खोदाय मोहे तुरक करेगा आपनही कट जाइ ३

ओह हमारे माथे कायम और हमारे निकटन आवे ॥
नाकहुं काटी कानो काटी काट कुट के डारी ॥ ४ ॥
कहे कबीर संतनकी बैरन तीन लोककी प्यारी ॥

पद ८३. (राग आसा)

जोगी जती तपी संन्यासी बहो तीरथ भ्रमना ॥
लुंजत मुंजत मोन जटाधर अंत तउ मरना ॥ १ ॥
तांते सेवीअले रामना ॥
रसना राम नाम हित जाके कहा करे जमना ॥ २ ॥
अगम निगम जोतक जाने बहो बहो ब्या करना ॥
तंत मंत सब औखध जाणे अंत तउ मरना ॥ ३ ॥
राज भोग अर छत्र सिंघासन बहो सुंदर रमना ॥
पान कपूर सोवासिक चंदन अंत तउ मरना ॥ ४ ॥
वेद पुराण सिमृत सबखोजे कहुन उबरना ॥
कहे कबीर रामेह जपयो मेट जनम मरना ॥ ५ ॥

पद ८४. (राग आसा)

फील रबावी बलद पखावज कौवा ताल बजावे ॥
पहेर चोलना गधहा नाचे भैंसा भगत करावे ॥ १ ॥
राजा राम ककरीआ बरे पकाए ॥
किने बूझन हारे खाए ॥ २ ॥
बैठ सिंघ घर पान लगावे घीस गलोरे लावे ॥
घर घर मुसरी मंगल गावे कछुवा संख बजावे ॥ ३ ॥

हरका बीलोवना मनका बीचारा ॥
गुर परसाद पावे अंमृत धारा ॥ ४ ॥
कहे कबीर नजर करे जे मीरा ॥
राम नाम लग उतरे तीरा ॥ ५ ॥

पद ८९. (राग आसा)

सुत अपराध करत है जे ते ॥
जननी चीतन राखस तेते ॥ १ ॥
रमैया हो बारक तेरा ॥
काहेन खंडस अवगुन मेरा ॥ २ ॥
जे अतक्रोध करे कर धाया ॥
तांभी चीतन राखस माया ॥ ३ ॥
चीत भवन मन पर्‍यो हमारा ॥
नाम बिना कैसे उतरस पारा ॥ ४ ॥
देह बिमल मत सदा सरीरा ॥
सहेज सहेज गुन रवे कबीरा ॥ ५ ॥

पद ९०. (राग आसा)

हज्ज हमारी गोमती तीर ॥
जांहां बसेह पीतांबर पीर ॥ १ ॥
वाह वाह क्या खुब गावता है ॥
हरका नाम मेरे मन भावताहे ॥ २ ॥
नारद सारद करे खवासी ॥
पास बैठी बीबी कौलादासी ॥ ३ ॥

सुन्नत कीए तुरक जे होयगा औरतका क्या करीए ॥
अर्ध सरीरी नारन छोडो तांते हिंदुही रहीए ॥ ४ ॥
छाड कतेव राम भज बवरे जुलम करत है भारी ॥
कवीरे पकडी टेक रामकी तुरक रहे पचहारी ॥ ५ ॥

पद ८७. (राग आसा)

जव लग तेल दीवे मुख वाती तवसुझे सभ कोइ ॥
तेल जले वाती ठहेरानी सुना मंदर होइ ॥ १ ॥
रे बवरे तोहे घरी न राखे कोइ ॥
तु राम नाम जप सोइ ॥ २ ॥
काकी मात पीता कहो कांको कोन पुरख की जोइ ॥
घट फुटे कोइ बात न पुछे काढो काढो होइ ॥ ३ ॥
देहरी बैठी माता रोवे खटीआ लेगए भाइ ॥
लट छट काए त्रीया रोवे हंस एकेला जाइ ॥ ४ ॥
कहेत कबीर सुनोरे संतो भवसागर के तांइ ॥
इस बंदे सिर जुलम होतहे जमनही हटे गोसांइ ॥५॥

पद ८८. (राग आसा)

सनक सनंदन अंत नही पाया ॥
वेद पडे पड ब्रह्मे जनम गमाया ॥ १ ॥
हरका बीलोना बीलोव मेरे भाइ ॥
सहेज बीलोवो जैसे तत्त न जाइ ॥ २ ॥
तनकर मटकी मन माहे बीलोइ ॥
उस मटकी सबद संजोइ ॥ ३ ॥

सुके सरवर पाल बंधाए लुणे खेतह थवारा करे ॥
आयो चोर तुरंते लेगयो मेरी राखत मुगध फिरे ॥ ३ ॥
चरन सीस कर कंपन लागे नैनी नीर अलार बहे ॥
जहेवा बचन सुध्ध नही निकसे तबरे धर्मकी आस करे ॥ ४ ॥
हर जीउ किरपा करे लिव लावे लाहा हर हर नाम लीयो॥
गुर परसादी हरधन पायो अंते चल त्या नाल चल्यो ५
कहेत कबीर सुनो रे संतो अन धन कछु लेन गयो ॥
आइ तलब गोपाल रायकी माया मंदर छोड चल्यो॥ ६॥

पद ९३. (राग आसा)

काहु दीने पाट पटंबर काहु पलंग नवारा ॥
काहु गरी गोदरी नाही काहु थान परारा ॥ १ ॥
अहे रख वारन कीजे रे मन ॥
सुकरत कर कर लीजे रे मन ॥ २ ॥
कुंभारे एक जो माटी गुंधी बोहे विध वानी लाइ ॥
काहु मे मोतीमुकता हल काहु व्याध लगाइ ॥ ३ ॥
सुमे धन रावन को दीआ मुगध कहे धन मोरा ॥
जमका डंड मुडमे लागे खिनमे करे वसेरा ॥ ४ ॥
हर जन उत्तम भगत सदावे आग्यामान सुख पाइ ॥
जोतिस भावे सतकर माने भाणा मन वसाइ ॥ ५ ॥
कहेत कबीर सुनोरे संतो मेरी मेरी जुठी ॥
चिरगुट फार चटारा लेगयो तरी तागरी छूटी ॥ ६ ॥

कंठे माळा जेह्वा राम ॥
सहंस्त्र नाम ले करूं सलाम ॥ ४ ॥
कहे कबीर रामगुन गावुं ॥
हींदु तुरक दोउ समझावुं ॥ ५ ॥

पद ९१. (राग आसा)

पाती तोरे मालनी पाती पाती जीउ ॥
जिस पाहेनको पाती तोरे सो पाहन निर जीउ ॥१॥
भुली मालनी है एहि ॥
सतगुरू जागता है देव ॥ २ ॥
ब्रह्म पाती बिसन डाली फुल शंकर देव ॥
तीन देव परतख तोरेह करे किसकी सेव ॥ ३ ॥
पाखान घडके मुरत कीनी देके छाती पांव ॥
जे वोह मुरत साची होय तां घडन हारे खाव ॥४॥
भात पहत अर लापसी कर करा कासार ॥
भोगन हारे भोगया उस मूरतके मुख छार ॥ ५ ॥
मालन भुली जग भुलाना हम भुलाने नाह ॥
कहे कबीर हम राम राखे क्रपा कर हर राय ॥ ६ ॥

पद ९२. (राग आसा)

बारे बरस बाल पलबीते वीस बरस कुछ तप न कीयो॥
तीस बरस कछु देवन पुजा फिर पछताना बिरध भयो॥
मेरी मेरी करते जनम गयो साहेर सोख भुजंव लीयो ॥ १ ॥

साकत सोवान सब करे कराया ॥
जो धुर लिखीया सो करम कमाया ॥ ५ ॥
अम्रत ले ले नीव सिंचाइ ॥
कहेत कबीर वाको सहेज न जाइ ॥ ६ ॥

पद १६. (राग आसा)

लंकासा कोट समुंदसी खाइ ॥
तहे रावण घर खबर न पाइ ॥ १ ॥
क्या मांगो कछु थिर न रहाइ ॥
देखत नैन चल्यो जग जाइ ॥ २ ॥
एक लख पूत सवा लख नाती ॥
तहें रावण घर दीया न बाती ॥ ३ ॥
चंद सूरज जाके तपन रसोइ ॥
बेसंतर जांके कपरे धोइ ॥ ४ ॥
गुर मत रामे नाम बसाइ ॥
अस्थिर रहे न कतहुं जाइ ॥ ५ ॥
कहेत कबीर सुनोरे लोइ ॥
राम नाम बिन मुक्त न होइ ॥ ६ ॥

पद १७. (राग आसा)

पहेला पूत पीछेरी माइ ॥
गुर लागो चेलेकी पांइ ॥ १ ॥
एक अचंभा सुनो तुम भाई ॥
देखत सिंध चरावत गाइ ॥ २ ॥

पद १४. (राग आसा)

सरपनी ते उपर नही बलीआ ॥
जिन ब्रह्मा बिक्षन महादेव छलीया ॥ १ ॥
मार मार सरपनी निरमल जल पैठी ॥
जिन त्रेभवन डसीअले गुर परसादी डीठी ॥ २ ॥
सरपनी सरपनी क्या करो भाइ ॥
जिन साच पेह्चान्या तिन सरपनी खाइ ॥ ३ ॥
सरपनी ते आन छुछ नहीं अवरा ॥
सरपनी जीती कहा करे जमरा ॥ ४ ॥
एह सरपनी ताकी कीती होइ ॥
बल आ बल क्या इस्ते होइ ॥ ५ ॥
एह बसती तां बस्त सरीरा ॥
गुर परसाद सहेज तरे कबीरा ॥ ६ ॥

पद १५. (राग आसा)

कहां स्वानकों सिम्रत सुनाए ॥
कहां साकत पद्दे हर गुन गाए ॥ १ ॥
राम राम राम रमे रम रहीए ॥
साकत स्युं भूल न कहीए ॥ २ ॥
कउवा कहां कपूर चराए ॥
कहां बिसी अरको दुध पीलाए ॥ ३ ॥
सत संगत मिल बिबेक बुद्ध होइ ॥
पारस परस लोहा कंचन होइ ॥ ४ ॥

साकत सोवान सब करे कराया ॥
जो धुर लिखीया सो करम कमाया ॥ ५ ॥
अम्रत ले ले नीव सिंचाइ ॥
कहेत कबीर वाको सहेज न जाइ ॥ ६ ॥

पद ९६. (राग आसा)

लंकासा कोट समुंद्रसी खाइ ॥
तहे रावण घर खबर न पाइ ॥ १ ॥
क्या मागो कछु थिर न रहाइ ॥
देखत नैन चल्यो जग जाइ ॥ २ ॥
एक लख पूत सवा लख नाती ॥
तहें रावण घर दीया न बाती ॥ ३ ॥
चंद सूरज जांके तपन रसोइ ॥
बैसंतर जांके कपरे धोइ ॥ ४ ॥
गुर मत रामे नाम बसाइ ॥
अस्थिर रहे न कतहुं जाइ ॥ ५ ॥
कहेत कबीर सुनोरे लोइ ॥
राम नाम बिन मुक्त न होइ ॥ ६ ॥

पद ९७. (राग आसा)

पहेला पूत पीछेरी माइ ॥
गुर लागो चेलेकी पांइ ॥ १ ॥
एक अचंभा सुनो तुम भाई ॥
देखत सिंध चरावत गाइ ॥ २ ॥

जलकी मछरी तरवर व्याही ॥
देखत कुतरा लेगइ बिलाइ ॥ ३ ॥
तलेरे बैसा उपर मुला ॥
तिसके पेंड लगे फल फूला ॥ ४ ॥
घोडे चढ भैंस चरावन जाइ ॥
बाहर बैल गोन घर आइ ॥ ५ ॥
कहेत कबीर जो इस पद बुझे ॥
राम रमत तिस सब कुछ सुझे ॥ ६ ॥

पद ९८. (राग आसा)

बिंद ते जिन पिंड कीया अगन कुंड रहाया ॥
दस मास माता उदर राख्या बहोर लागी माया ॥१॥
प्रानी काहेको लोभ लागे रतन जनम खोया ॥
पूरव जनम करम भूम बीज नाही बोया ॥ २ ॥
बारक बिरध भया होना सो होया ॥
जा जम आय झोट पकरे तब काहे रोया ॥ ३ ॥
जीवनेकी आस करेह जम निहारे सासा ॥
बाजीगरी संसार कबीरा चेत ढाल पासा ॥ ४ ॥

पद ९९. (राग आसा)

तन रैनी मन पूनरप करहुं पांचो तत्त बराती ॥
राम राय स्युं भावर लेहु आतम तहे रंग राती ॥१॥
गाव-गावरी दुलहनी मंगल चारा ॥
हमरे ग्रहे आए राजा राम भ्रतारा ॥ २ ॥

नाभ कमलमें बेदी रचीले ब्रह्म ग्यान उच्चारा ॥
राम राय स्युं दुलह पायो अस बड भाग हमारा ॥३
सुर नर मुन जन कवतक आए कोट तेतीसो जाना॥
कहे कबीर मोह ब्याह चलेहैं पुरख एक भगवाना ॥४॥

पद १०० (राग आसा)

सासकी दुखी ससुरकी प्यारी जेठके नाम डरोरे ॥
सखी सहेली नंणद गहेली देवरके विरहो जरोरे ॥१॥
मेरी मत बौरी मै राम विसार्यों किनविध रहेन रहुं रे ॥
रमत राम नैन नहीं पेख्यो एह दुख कासो कहूं रे॥२॥
बाप सावका करे लराइ माया सद मतवारी ॥
वडे भाइके जब संग होती तबहुं नाहे प्यारी ॥ ३॥
कहेत कबीर पंचको झगरा झगरत जनम गमाया ॥
झुठी माया सब जग बांध्या मै राम रमत सुख पाया ॥४॥

पद १०१ (राग आसा)

हम मसकीन खुदाइ बंदे तुमरा जस मन भावे ॥
अलह अवल दीनको साहेब जोर नहीं फुरमावे ॥१॥
काजी बोल्या मन नही आवे ॥
रोजा धरे निमाज गुजारे कलमा बेहस्तन होइ ॥
सत कर काबा घटही भीतर जे कर जाणे कोइ ॥२॥
निमाज सोइ जो न्याव बिचारे कलमा अकलहे आनि ॥
पांचो मुस मुसला बिछावे तब तो दीन पहेचाने ॥३॥
खसम प्रछान तरस कर जीअमे मार मनी कर फिकी॥

आप जनाय औरको जाने तब होय बेहस्त सरीकी॥४॥
माटी एक भेख घर नाना तामे ब्रह्म पछाना ॥
कहे कबीर बेहस्त छोडकर दोजख स्युं मन माना ॥५॥

पद १०२. (राग आसा)

गगन नगर एक बुंदन बरखे नाद कहां जो समाना ॥
पार ब्रह्म परमेश्वर माधो परम हंस ले सिधाना ॥ १ ॥
बाबा बोलतेथे कहां गए देहीके संग रहते ॥
सुरत माहे जो निरत करते कथा बारता कहते ॥ २ ॥
बजावन हारो कहां गयो जिन एह मंदर कीना ॥
साखी सबद सुरत नही उपते खिंच तेज सभ लीना ॥३॥
स्रवनन बिकल भये संग तेरे इंद्रीका बल थाका ॥
चरन रहे कर ढरक परेहे मुखो न निकसे बातां ॥४॥
थाके पंच दूत सभ तस्कर आप आपने भ्रमते ॥
थाका मन कुंचर उर थाका तेज सूत धर रमते ॥५॥
मिरतक भए दसे बंध छूटे मित्र भाइ सब छोरे ॥
कहेत कबीर जो हर ध्यावे जीवत बंधन तोरे ॥ ६ ॥

पद १०३ (राग आसा)

हम धर सूत तने नित ताना कंठ जनेऊ तुमारे
तुम तो बेद पडो गायत्री गोविंद रिदे हमारे ॥ १ ॥
मेरी जहेवा बिस्नु नैन नरायण हिरदे बसे गोविदा॥
जम द्वार जब पूछस बवरे तब क्या कहेस मुकंदा॥२॥
हम गोरु तुम गुआर गोसांइ जनम जनम रखवारे॥

कवहून पार उतार चडाऐ कैसे खसम हमारे ॥ ३ ॥
तू वामन मै कासीका जुलहा बुझो मोर ग्याना ॥
तुमतो जाचे भुपत राजे हरस्यों मोर ध्याना ॥ ४ ॥
जग जीवन ऐसा सुपने जैसा जीवन सूपन समानं ॥
साचकर हम गाठ दीनी छोड परम तिधानं ॥ ५ ॥
वावा माया मोह हित कीन ॥
जिन ग्यान रतन हिर लीन ॥ ६ ॥
नैन देख पतग उरझे पसुन देखे आग ॥
काल फांसन मुगध चेते कनक कामनी लाग ॥ ७ ॥
कर विचार विकार पर हर तरन तारन सोय ॥
कहे **कबीर** जग जीवन ऐसा दुतीआ नाही कोय॥८॥

पद १०४. (राग आसा)

जव में रुप कीए बहोतेरे अव फून रुपन होइ ॥
तागा तंत साज सव थाका रामनाम वस होइ ॥१॥
अव मोहे नाचनो ना आवे ॥
मेरा मन मंदरी आन बजावे ॥ २ ॥
काम क्रोध माया ले जारी त्रिसना गागर फुटी
काम चोलना भया पुराना गया भरम सव छुटी ॥३॥
सरब भूत एकेकर जान्या चुकेवाद विवादा ॥
कहे कबीर मे पूरा पाया भये राम परसादा ॥ ४ ॥

पद १०५. (राग आसा)

रोजा धरे मनावे अलहो स्वादत जीअ संधारे ॥

आपा देख और नहीं देखे काहेकुं झख मारे ॥ १ ॥
काजी साहेब एक तुंही मे तेरा सोच बिचार नदेखे ॥
खबर न करे दीनकेबोरे तांते जनम अलेखे ॥ २ ॥
साच कतेब बखाने अलहु नार पूरख नही कोइ ॥
पडे गुने नाहीं कछु बोरेजब दीलमें खबर न होइ॥२॥
अलहो गैब समल घट भीतर हिरदे ले बिचारी ॥
हिंदु तुरक दोहु मे एको कहे कबीर पोकारी ॥ ४ ॥

पद १०६. (राग आसा)

कीयो सिंगार मिलन के तांइ ॥
हर न मिले जगजीवन गोसांइ ॥ १ ॥
हर मेरो पीरहो हें हरकी बहोरीआ ॥
राम बडेहो तनक लहोरीआ ॥ २ ॥
धन पिर एके संग बसेरा ॥
सेज एकपे मिलन दोहेरा ॥ ३ ॥
धन सोहागण जो पीया भावे ॥
कहे कबीरफिर जनम न आवे ॥ ४ ॥

पद १०७. (राग आसा)

हीरे हीरा बेध्या पवन मन सहेजे रह्या समाइ ॥
सगल जोत इन हीरे बेधी सतगुर बचनी में पाइ ॥१॥
हरकी कथा अनाहद बानी ॥
हंसो ए हीरा ले पेहचानी ॥ २ ॥

कहे कबीर हीरा अस देख्यो जगमें रह्या समाइ ॥
गुप्ता हीरा प्रगट भयो जब गुर गम दीया दिखाइ ॥२॥

पद १०८. (राग आसा)

पहेली कुरुप कुजात कुलखणी साहुरे पेइए बुरी ॥
अबकी सरुप सुजाण सुलखणी सहेजे उदर धरी ॥१॥
भली सरी मुइ मेरी पहेली बरी ॥
जुग जुग जीवो मेरी अबकी धरी ॥ २ ॥
कहे कबीर जब लहोरी आइ बडीका सोहाग टर्यो ॥
लहोरी संग भए अब मेरे जेठी और धर्यो ॥ ३ ॥

पद १०९. (राग आसा)

मेरी बोहरीआको धनीआ नांव ॥
लै राख्यो राम जनीया नाव ॥ १ ॥
इन मुंडीअन मेरा घर धंधरावा ॥
बिटवह राम रमैया लावा ॥ २ ॥
कहेत कबीर सुनो मेरी माइ ॥
इन मुंडीअन मेरी जात गवांइ ॥ ३ ॥

पद ११०. (राग आसा)

रहो रहोरी बहोरीआ घूंघट जिन काढे ॥
अंतकी बार लहेगीन आढे ॥
घूंघट काढ गइ तेरी आगे ॥
उनकी गैल तोहे जिन लागे ॥ २ ॥

घूंघट काढेकी एही बडाइ ॥
दिन दस पांच वहू भले आइ ॥ ३ ॥
घूंघट तेरो तव पर साचे ॥
हर गुन गाए कूदे अर नाचे ॥ ४ ॥
कहेत कवीर वहू तब जीते ॥
हरगुन गावत जनम बितीते ॥ ५ ॥

पद १११. (राग आसा)

करवत भला न करवट तेरी ॥
लाग गले सुन वेनती मेरी ॥ १ ॥
हौं वारी मुखपर प्यारे ॥
करवट दे मोंको काहेको मारे ॥ २ ॥
जो तन चीरे तो अंगन मोरो ॥
पिंड पडे तो प्रीत न तोरो ॥ ३ ॥
हम तुम बीच भयो नहीं कोइ
तुमहसो कंतनार हम सोइ ॥ ४ ॥
कहेत कबीर सुनो रे लोइ ॥
अब तुमरी परतीत न होइ ॥ ५ ॥

पद ११२. (राग आसा)

कोरीको काहु मरम न जाना ॥
सव जग आन तनायो ताना ॥ १ ॥
जब तुम सुन ले बेद पुराना ॥
तब हम एतनक पसर्यो ताना ॥ २ ॥

धरन अकासकी कर गहे वनाइ ॥
चंद सूरज दोये साथ चलाइ ॥ ३ ॥
पाइ जोर बात एक कीनी तहे ताती मन माना ॥
जो लाहे घर अपना चीना घटही राम पछाना ॥४॥
कहेत कबीर कार गहे तोरी ॥
सूते सूत मिलाए कोरी ॥ ५ ॥

पद ११३ (राग आसा)

अंतर मैल जे तीरथ नावे तिस बैकुंठ नजाना ॥
लोक पतीने कछु न होवे नाही राम यथाणा ॥ १ ॥
पुजो राम एकही देवा ॥
साचा नावण गुरकी सेवा ॥ २ ॥
जलके मंजन जे गत होवे नित नित मेडक नावह ॥
जैसे मेडक तेसे ओय नर फिर फिर जोनी आवह॥३॥
मनेह कठोर मरे बनारस नरक न बाचा जाइ ॥
हरका संत मरे हडंवे सगली सैन तराइ ॥ ४ ॥
दिन सो रैन वेद नही सासतर तहां बसे निरंकारा ॥
कहे कबीर नर तिसे ध्यावो बावरया संसारा ॥ ५ ॥

पद ११४. (राग गुजरी)

चार पाव दोए सिंग गुंग मुख तब कैसे गुन गाइ है ॥
उठतं बेठत ठीगा पर है तब कत मूंड लुकैइ है ॥१॥
हर बिन बेल बिगाने होइ है ॥
फाटे नाकन टुटे काधन कोदो कोभ सुखइ है ॥ २ ॥

सारो दिन डोलत बन महीआ अजं हुन पेट अघइ है॥
जन भगतन को कह्यो न मान्यो कीओ आपनो प
इए है॥ ३ ॥
दुख सुख करत महा भ्रम वुडो अनक जोन भरमइ है॥
रतन जनम अकारथ खोयो एह अवसर कत पइ है॥४॥
भरमत फिरत तेल के कप ज्यों गत बिन रहनवेहइ है॥
कहेत कबीर राम नाम बिन मूंड धुने धुन पछतइ है ५

पद ११५. (राग गुजरी)

मुस मुस रोवे कबीरकी माइ ॥
ए बारक कैसे जीवे रघुराइ ॥ १ ॥
तनना वुनना सब तज्यो कबीर ॥
हरका नाम लिख लीयो है सरीर ॥ २ ॥
जब लग तागा बाहु वेही ॥
तब लग बिसरे राम सनेही ॥ ३ ॥
ओछी मत मेरी जात जुला हा ॥
हरका नाम लह्यो मै लाहा ॥ ४ ॥
कहेत कबीर सुनो मेरी माइ ॥
हमरा इनका दाता एक रघुराइ ॥ ५ ॥

पद ११६. (राग सोरठ)

वुत पूजं पूज यिंदु मुए तुरक मुए सिर नाइ ॥
ओ ले जारे ओ ले गाडे तेरी गत दोहुं न पाइ ॥ १ ॥

मनरे संसार अंध गहेरा ॥
चहूं दिस पसर्यो है जम जेवरा ॥ २ ॥
कवित पडे पड कविता मुए कपड केदारे जाइ ॥
जटा धार धार जोगी मुए तेरी गत उन हुंन पाइ॥ ३॥
दरव संच संच राजे मुए गढले कंचन भारी ॥
वेद पडे पड पंडत मुए रुप देखदेख नारी ॥ ४ ॥
राम नाम विन सबे बिगुते देखो निरख सरीरा ॥
हरके नाम विन किन गत्त पाइ कहे उपदेश कबीरा ५

पद ११७. (राग सोरठ)

जब जरीए तब होय भसम तन रहे किरम दल खाइ ॥
काची गागर नीर परतहे या तनकी एहै वडाइ ॥ १ ॥
काहे भैइया फिरतू फूल्या फूल्या ॥
जब दस मास उरध मूख रहेता सो दिनकैसे भुल्या॥२॥
ज्युं मद माखी त्युं इस ठोर रस जोर जोर धन कीया॥
मरती बार लेह लेह करीए भुत रहनको दीया ॥ २ ॥
देहरी लवबरी नार संग भइया आगे सजन सोहेला ॥
मर घट लो सभ लोग कुटंब भए आगे हंस एकला ४
कहेत कबीर सुनोरे प्राणी पर्योकाल ग्रस कूवा ॥
जुठी माया आप बंधाया ज्युं नलनी भ्रम सूवा ॥५॥

पद ११८. (राग सोरठ)

वेद पूराण सभे मत सुनके करी करमकी आसा ॥
काळ ग्रस्त सब लोग सियाने उठ पंडतपे चले निरासा १

मनरे सर्यो न एके काजा ॥
भजो न रघुपत राजा ॥ २ ॥
बन खंड जाय जोग तप कीनो कंद मूल चुन खाया॥
नादी बेदी सबदी मोनी जमके पटे लिखाया ॥ ३ ॥
भगत नारदी रिदे ना आइ काछ कूछ तन दीना ॥
राग रागनी डिंभ होय वैठा उन हरपे क्या लीना ॥४॥
पर्यो काल सभे जग उपर माहे लिखे भ्रमग्यानी ॥
कहे कबीर जन भए खलासे प्रेम भगत जिन जानी ५

पद ११९. (राग सोरठ)

दोय दोय लोचन पेखा॥ हों हर बिन और न देखा॥१॥
नेन रहे रंग लाइ ॥ अब बेगल कहे नन जाइ ॥ २ ॥
हमरा भरम गया भव भागा ॥ जब राम नाम चित लागा ॥ ३ ॥
बाजी गर डंक बजाइ ॥ सब खलक तमासे आइ ॥४॥
बाजी गर स्वांग सकेला ॥ अपने रंग रवे अकेला ॥५॥
कथनी कहे भरम नजाई॥सभ कथ कथ रहे लुकाइ॥६॥
जांको गुरमुख आप बुझाइ॥ तांके हिरदे रह्या समाई ७
गुर किंचीत किरपा कीनी॥सब तन मन दे हर लीनी॥८॥
कहे कबीर रंग राता ॥ मिलयो जगजीवन दाता ॥९॥

पद १२०. (राग सोरठ)

जांके निकट दूध ते ठाटा॥ समुंद बिलोवन को माटा१
कांकी होय बिलोवन हारो॥क्युं मेटेगो छास तुमारी २

चेरी तु राम न करस भर तारा ॥ जग जीवन प्रान आ धारा ॥ ३ ॥
तेरे गले तोक पग बेरी ॥ तु घरघर रमैए फेरी ॥ ४ ॥
तुं अजहून चेतस चेरी ॥ तु जम बपूरी है हेरी ॥ ५ ॥
प्रभ करन करावन हारी ॥ क्या चेरी हात बिचारी ॥ ६॥
सोइ सोइ जागी ॥ जित लाइ तित लागी ॥ ७ ॥
चेरी तें सुमत कहांते पाइ ॥ जांते भ्रमकी लीक मिटाइ ८
सो रस कबीरे जान्या ॥ मेरो गुर प्रसाद मन मान्या ॥ ९॥

पद १२१. (राग सोरठ)

जेहे वाझन जीया जाइ ॥ जब मिले तो धाल अघाइ १
सद जीवन भलो कहाइ ॥ मुए बिन जीवत नाही ॥ २॥
अब क्या कथीए ग्यान बिचारा ॥ निज निरखत गत व्य हारा ॥ ३ ॥
घस कुंकुम चंदन गार्या ॥ बिन नैनहे जगत निहार्या ४
पूत पिता एक जाया ॥ बिन ठाहर नगर बसाया ॥ ५॥
जाचक जन दाता पाया ॥ सो दीया न जाइ खाया ॥ ६॥
छोडया जायन मूका ॥ अवरन पे जाना चूका ॥ ७ ॥
जो जीवन मरना जाने ॥ सो पंच सैल सुख माने ॥ ८॥
कबीरे सोधन पाया ॥ हर भेटत आप मिटाया ॥ ९॥

पद १२२. (राग सोरठ)

क्या पडीए क्या गुनीए ॥ क्या बेद पूराना सुनीए ॥ १॥
पडे सुने क्या होइ ॥ जो सहेज न मिलीओ सोइ ॥ २॥

हरका नाम न जपस गवांरा॥क्या सोचे बारंबारा॥३॥
अंधीयारे दीपक चहीए ॥ एक बस्त अगोचर लहीए ४
बस्त अगोचर पाइ ॥ घट दीपक रह्या समाइ ॥ ५ ॥
कहे कबीर अब जान्या॥जब जान्या तो मन मान्या६
मन माने लोक न पतीजे ॥ न पतीजे तो क्या कीजे ७

पद १२३. (राग सोरठ)

हिरदे कपट मूरख ग्यानी ॥ झुठे कहां बिलोवस पानी १
काया मांजस कोन गुना ॥ जब घट भीतर है मलना २
लवकी अठ सठ तीरथ नाइ ॥करवा पन तउ न जाइ ३
कहे कबीर बिचारी ॥ भव सागर तार मोरारी ॥ ४ ॥
अवधु सो जोगी गुर मेरा॥जो इस पदका करे निबेरा५

पद १२४. (राग सोरठ)

बहो परपंच कर परधन लावे ॥
सुत दारापहे आन लुटावे ॥ १ ॥
मन मेरे भुले कपट न कीजे ॥
अंत निबेरा तेरे जीयपे लीजे ॥ २ ॥
छिन छिन तन छीजे जरा जनावे ॥
तब तेरी उर कोइ पानी ओन पावे ॥ ३ ॥
कहेत कबीर कोइ नहीं तेरा ॥
हिरदे राम न जपस सबेरा ॥ ४ ॥

पद १२५. (राग सोरठ)

संतो मन पवने सुख बनया॥कछु जोग परापत गनया १
गुर दिख लाइ मोरी ॥ जित मिरग पडतहे चोरी ॥ २ ॥
मूंद लीए दरवाजे ॥ बाजीअले अनहद बाजे ॥ ३ ॥
कूंभ कमल जल भरया ॥ जल मेट्या उभा करया ॥४॥
कहे कबीर जन जान्या ॥ जब जान्या तब मन मान्या ५

पद १२६. (राग सोरठ)

भूखे भगतन कीजे ॥ एह माला अपनी लीजे ॥ १ ॥
हों मांगो संतन रेना ॥ मे नाही किसीका देना ॥ २ ॥
माधव कैसी बने तुम संगे॥आप नदेवो तो लेऊ मंगे ३
दोए सेर मांगू चूना ॥ पाव घी संग लूना ॥ ४ ॥
अध सेर मांगु दाले ॥ मोको दोनो वखत जीवाले॥५॥
खाट मांगू चोपाइ ॥ सिर हाना और तुलाइ ॥ ६ ॥
उपरको मांगू खीदा ॥ तेरी भगत करे जन बीधा ॥७॥
मै नाही कीता लब्बो ॥ एक नाम तेरा मै फब्बो ॥ ८॥
कहे कबीर मन मान्या॥ मन मान्या तो हर जान्या९

पद १२७. (राग धनाश्री)

सनक सनंद महेस समाना ॥
सेख नाग तेरो मरम नजाना ॥ १ ॥
सत संगत राम रिदे बसाइ॥हनुमान सर गरड समाना
सुरपत नरपत नही गुन जाना ॥ २ ॥

चार वेद अर सिम्रत पुराना ॥
कमलापत कमला नही जाना ॥ ३ ॥
कहे कबीर सो भरमे नाही॥पवलग राम रहे सरनाइ४

पद १२८. (राग धनाश्री)

दिन ते पहेर पहेरते धरीया आव घटे तन छीजे ॥
काल अहेरी फिरे बधकज्युं कहो कोन बिध कीजे ॥१॥
सो दिन आवन लागा ॥
मात पिता भाइ सूत बनता कहो कोऊ है काका ॥२॥
जबलग जोत काया मे बरते आपा कसु न सुझे ॥
लालच करे जीवनपद कारन लोचन कछु न सुझे॥३॥
कहेत कबीर सुनो रे प्राणी छोडो मनके भ्रमा ॥
केवल नाम जपोरे प्राणी परो एककी सरना ॥ ४ ॥

पद १२९. (राग धनाश्री)

जोजन भाव भगत कछु जाने ताका अचरज काहो ॥
ज्युं जल जलमे पेसन निकसे तव फिर मिलो जुलाहो१
हरके लोगा मै तो मतका भोरा ॥
जब तन कासी तजे कबीरा रमैए कहां निहोरा ॥ २ ॥
कहेत कबीर सुनोरी लोइ भरम न भूलो कोइ ॥
क्या कासी क्या उखर मगहर राम रिदे जो होइ ॥३॥

पद १३०. (राग धनाश्री)

इंद्र लोग सिव लोगह जैबो ॥
ओछे तप कर बाहर ऐबो ॥ १ ॥

क्या मांगू कछु थिर न रहाइ ॥
राम नाम राख मन माही ॥ २ ॥
सोभा राज बिभे बडिआइ ॥
अंतन काहु संग सहाइ ॥ ३ ॥
पुत्र कलित्र लक्ष्मी माया ॥
इनते कहो कवने सुख पाया ॥ ४ ॥
कहे कबीर अवर नही कामा ॥
हमरे मन धन रामको नामा ॥ ५ ॥

पद १३१. (राग धनाश्री)

राम सिमर राम सिमर राम सिमर भाइ ॥
राम नाम सिमरन बिन बुडते अधकाइ ॥ १ ॥
बनता सुत देह ग्रेह संपत सुखदाई ॥
इनमे कछु नाहे तेरो काल अवध आइ ॥ २ ॥
अजा मल गज गनका पतत करम कीने ॥
तेऊ उतर पार पडे राम नाम लीने ॥ ३ ॥
सूकर कूकर जोन भ्रमे तउ लाज न आइ ॥
राम नाम छांड अम्रत काहे बिख खाइ ॥ ४ ॥
तज भरम करम बिध निखेद रामनाम लेही ॥
गुर प्रसाद जन कबीर राम कर सनेही ॥ ५ ॥

पद १३२. (राग तिलग)

बेद कतेब इफतरा भाइ दिलका फिकर न जाय ॥
टुक दम करारी जो करे हाजरा हजूर खोदाय ॥ १ ॥

बंदे खोज दिल हर रोज ना फिर परेशानी माह ॥
एह जो दुनिया शहेर मेला दस्त गीरी नाह ॥ २ ॥
दरोद पड पड खुसी होए बेखबर बाद बकाय ॥
हक्क सच्च खालक खलक म्याने श्याम मूरत नाह ॥ ३ ॥
असमान म्याने लहंग दरीआ गूसल करदेन बूद ॥
कर फिकर कायम लाय सच्च मेहजत हाम उजूद ॥ ४ ॥
अलह पाकस पाक है सभ करो जे दुसर होय ॥
कबीर करम करीमका ओह करे जाणे सोय ॥ ५ ॥

पद १३३. (राग सुही)

अवतर आय कहा तुम कीना ॥
राम को नामन कबहुं लीना ॥ १ ॥
राम न जपो कवन मत लागे ॥
मर जय बेको क्या करे अभागे ॥ २ ॥
दुख सुख करके कुटंब जीवाया ॥
मरती बार अकसर दुख पाया ॥ ३ ॥
कंठ गहन तब करन पुकारा ॥
कहे कबीर आगे ते न संभारा ॥ ४ ॥

पद १३४. (राग सुही)

थर हर कंपे बाला जीव ॥ ना जानु क्या करसी पीव ॥ १ ॥
रैन गइ मत दिनभी जाय ॥ भवर गये बग बैठे आय २
काचे करवे रहे न पानी ॥ हंस चल्या काया कुम लानी ३

कुंवारी कन्या जैसे करत सिंगारा ॥ क्युं रलीया माने बाज भरतारा ॥ ४ ॥
काग उडावत भूजा पिरानी ॥ कहे कबीर एह कथा सिरानी ॥ ५ ॥

पद १३९. (राग सुही)

अमल सिरानो लेखा देना ॥
आए कठन दूत जम लेना ॥ १ ॥
क्या ते खटीया कहां गमाया ॥
चलो सिताब दिवान बुलाया ॥ २ ॥
हर फरमान दरगहे का आया ॥
कर अरदास गाव कुछ बाकी ॥
लेहो निबेर आजकी राती ॥ ३ ॥
कुछबी खरच तुमारा सारो ॥
सुभेह निवाज सराय गुजारो ॥ ४ ॥
साध संग जाको हर रंग लागा ॥
धन धन सो जन पुरख सुभागा ॥ ५ ॥
इंत ऊत जन सदा सुहेले ॥
जनम पदारथ जीत अमोले ॥ ६ ॥
जागत सोया जनम गमाया ॥
माल धन जोऱ्या भया पराया ॥ ७ ॥
कहे कबीर तेइ नर भूले ॥
खसम बिसार माटी संग रुले ॥ ८ ॥

पद १३६. (राग सुही)

थाके नैन श्रवन सुन थाके थाकी सुंदर काया ॥
जराहाकदी सभ मत थाकी एक न थाकस माया ॥
बावरे तें ग्यान बिचार न पाया बिरथा जनम गमाया १
तबलग प्रानी तिसे सरेवो जबलग घटमें सासा ॥
जो घट जाय तो भाव न जासी हरके चरन निवासा२
जिसको सवद वसावे अंतर चुके तिसे पयासा ॥
हुकमे बुझे चौसर खेले मन जिन ढाले पासा ॥३॥
सो जन जान भजे अब गतको तिनका कछुन नासा॥
कहे कवीर ते नर कबहु न हारे ढाल जो जाने पासा ४

पद १३७. (राग सुही)

एक कोट पंच सिक दारा पंचे मांगे हाला ॥
जिमी नाही मै किसीकी वोइ ऐसा दे न दुखाला ॥१॥
हरके लोगो मोकु नीत डसे पटवारी ॥
उपर भूजा करमें गुरपे पुकारा तिनहु लीया उवारी॥२॥
नव डाढी दसमांस फंदावे रैयत वसन न देइ ॥
डोरी पुरी मापे नाही बोह विष्टा लाय लेइ ॥ ३ ॥
बहतर घर एक पुरख समाया उन दीया नाम लिखाइ॥
धरम रायका दफतर सोधया बाकी रीज मन काइ ॥४॥
संताको मत कोइ निंदो संत रामहै एको ॥
कहे कवीर मै सो गुर पाया जाका नाम बिबेको ॥५॥

पद १३८. (राग विलावल)

ऐसो एह संसार पेखना रहेनन कोइ पइएरे ॥
सुधे सुधे रेग चलो तुम न तर कुधका दिवइएरे ॥१॥
वारे बुढे तरने भइया सब हु जमले जइएरे ॥
मांनस वपरा मुसा कीनो मीच बिलइआ खइएरे ॥२॥
धनवंता अर निरधन मनही तांकी कछुन कानी रे ॥
राजा परजा समकर मारे ऐसो काल बडानी रे ॥३॥
हरके सेवक जो हर भावे तिनकी कथा निरारी रे ॥
आवे न जाए न कबहुं मरते पार ब्रह्म संगारी रे ॥४॥
पुत्र कलित्र लछमी माया एह तजो जीया जानी रे॥
कहे कबीर सुनो रे संतो मिलहै सारंग पानी रे ॥ ५ ॥

पद १३९. (राग विलावल)

बिद्या नही पडो बाद नहीं जानो ॥
हर गुन कथत सुनत बौरानो ॥ १ ॥
मेरे बाबा मै बवरा सब खलक सियानी मे बवरा ॥
मे बिगर्यो बिगरो मत अवरा ॥ २ ॥
आप न बवरा राम कीयो बवरा ॥
सत गुर जार गयो भ्रम मोरा ॥ ३ ॥
मे बिगरे अपनी पत खोइ ॥
मेरे भरम भूलो मत कोइ ॥ ४ ॥
सो बवरा जो आप पछाने ॥
आप पछाने तां एके जाने ॥ ५ ॥

अबद न माता सो कबद न माता ॥
कहे कबीर रामे रंग राता ॥ ६ ॥

दप १४० (राग बिलावल)

ग्रहे तज बन खंड जाइए चून खाइए कंदा ॥
अजहुं बिकार न छोडइ पापी मन मंदा ॥ १ ॥
क्युं छुटको कैसे तरो भव जल निध भारी ॥
राख राख मोरे बीठला जन सरन तुमारी ॥ २ ॥
बिखे बिखेकी बासना तजया नहे जाइ ॥
अनक जतन कर राखीए फिरफिर लपटाइ ॥ ३ ॥
जरा जीवन जोबन गया कछु कीया न नीका ॥
एह जीयरा निर मोलको कौडी लग मीका ॥ ४ ॥
कहे कबीर मेरे माधवा तु सरब बयापी ॥
तुम सर नाही दयाल मोह हमसर पापी ॥ ५ ॥

पद १४१. (राग बिलावल)

नित उठ कोरी गागर आने लीपत जीव गयो ॥
ताना बाना कछु न सुझे हरहर रस लपटयो ॥ १ ॥
हमारे कुल कमने राम कह्यो ॥
जबकी माला लईन पूते तब ते सुख न भयो ॥ २ ॥
सुनो जेठानी सुनोदिरानी अचरज एक भयो ॥
सात सूत ईन मंडीए खोए एह मंडीआ क्युन मुओ ३
सरब सुखांका एको स्वामी सोगुरनाम दयो ॥
संत पहेलादकी पैज जिन राखी हर नाखसन खेबिंदयों ४

धरके देव पितरकी छोडी गुरको सबद लह्यो ॥
कहेत कबीर सगल पाप खंडन संतद्दे लेउधयौं ॥५॥

पद १४२. (राग विलावल)

कोइ ह्र समान नही राजा ॥
ए भुपत सब दिवस चारके जुठे करत दिवाजा ॥१॥
तेरा जन ह्रोएसो कत ह्न डोलें तीन भवन परछाजा॥
हाथ पसार सके को जनको बोलनसके अंदाजा ॥२॥
चेतअचेत मूंढ मन मेरे वाजे अनह्दबाजा ॥
कद्दे कबीर संसा भ्रम चूका धृ पह्लाद निवाजा॥३॥

पद १४३. (राग विलावल)

राख लेह्र ह्मते विगरी ॥
सील धरम ज्य भगतनकीनी ह्रो अभिमान टेढ पगरी१
अमर जान संची एह काया एह्र मिथ्या काची गगरी॥
जिनहे निवाज साज ह्म कीए तिसे बिसार अवरलगरी२
संधक तोह्र साधनी कहीओ सरन परे तुमरी पगरी ॥
कद्दे कबीर एक विनती सुनयो मत घालो जमकी खबरी३

पद १४४. (राग विलावल)

दर मांदे ठांडे दरबारा तुजविन सुरत करेकोमेरी
दरसन दीजे खोल किवार ॥ १ ॥
तुमधनधनीउदरातयागीश्रवण नसुनिअत सुजसतुमार
मांगो काहे रंकसब देखो तुमह्री ते मेरो निस्तार ॥२॥

जयदेवनामा विप्र सुदामा तिनको किरपा भई अपार॥
कहे कबीर तुम समरथ दाते चार पदारथ देत नबार ३

पद १४५. (राग बिलावल)

दंडा मुंद्रा खिंथा धारी॥भ्रमके भाय भवे भेखधारी॥१॥
आसन पवन दूर कर बवरे॥छोड कपट नित हर भज बवरे ॥ २ ॥
जिस तू जाचेसो त्रेभोवन भोगी॥कहे कबीर केसोजग जोगी ॥ ३ ॥

पद १४६. (राग बिलावल)

इनमाया जगदीस गोसांइ तुमरे चरन बिसारे ॥
किंचित प्रीत न उपजे जनको कहा करे बिचारे ॥१॥
ध्रग तन ध्रग धन ध्रग एह माया ध्रग ध्रगमत बुधफनी
इस मायाको द्रडकर राखो बांधे आप बचनी ॥ २ ॥
क्या खेती क्या लेवा देवी प्रपंच जुठ गुमाना ॥
कहे कबीर ते अंत बिगूते आवा काल निदाना॥३॥

पद १४७ (राग बिलावल)

सरीर सरोवरभीतरे आछे कमल अनूप ॥
परम जोत पूरखोतमो जांके रेख न रुप ॥ १ ॥
रे मन हर भज भ्रम तजो जग जीवन राम ॥
आवत कछुन दीसही न दीसे जात ॥
जहें उपजे बिनसे तही जैसे पूरवन पात ॥ २ ॥

मिथ्या कर माया तजी सुख सहज बिचार ॥
कहे कबीर सेवा करो मन मंझ मुरार ॥ ३ ॥

पद १४८. (राग बिलावल)

जनम मरणका भ्रम गया गोविंद लिव लागी ॥
जीवत सुन समानीया गुर साखी जागी ॥ १ ॥
कांसी ते धुन उपजे धुन कांसी जाइ ॥
कांसी फूटी पंडता धुन कहां समाइ ॥ २ ॥
त्रिकुटी संधमे पेखीया घट हुं घट जागी ॥
ऐसी बुध समा चरी घटमांहे त्यागी ॥ ३ ॥
आप आप ते जानीया तेज तेज समाना ॥
कहे कबीर अब जानीया गोविंद मन माना ॥ ४ ॥

पद १४९. (राग बिलावल)

चरण कमल जाके रिदे बसे सो जन क्युं डोले देव ॥
मानो सभ सुख नव निध तांके सहेज सहेज जस बोले देव ॥ १ ॥
तब एह मत जब सबमे पेखे कुटल गांठ जब खोले देव ॥
बारंबार माय तेअटके ले नर जा मन तोले देव ॥२॥
जंह ओह जाय तही सुख पावे माया तासन झोले देव ॥
कहे कबीर मेरा मन मान्या राव प्रीतकी ओले देव ३

पद १५०. (राग गौंड)

संत मिले कुछ सुनीऐ कहीए ॥ मिले असंत मस्त होय रहीए ॥ १ ॥

बाबा बोलना क्या कहीए॥जैसे राम नाम रव रहीए २
संतन सों बोले उपकारी॥मुरखसों बोले झखमारी ३
बोलत बोलत बढे बिकारा ॥ बिन बोले क्या करे विचारा ॥ ४ ॥
कहे कबीर छूछा घट बोले ॥ भरया होय सो कबहुन डोले ॥

पद १५१. (राग गौड)

नरु मरे नर काम न आवे॥पसु मरे दस काजसवांरे ॥१॥
अपने करमकी गत मै क्या जानु ॥ मै क्या जानु बा बारे ॥ २ ॥
हाड जलें जैसे लकरीका तुला ॥ केस जले जेसे घास का पूला ॥ ३ ॥
कहे कबीर तबही नर जागे॥जमका डंड मुंडमे लागे ४

पद १५२. (राग गौड)

आकास गगन पाताल गगन है चौदिस गगन रहाय ले॥
आनंद मुले सदा पूरखोत्तम घट बिनसे गगन न जाय ले ॥ १ ॥
मोहे बैराग भयो ॥ एह जीव आय कहां गयो ॥ २ ॥
पंच तत मिल काया कीनी तत कहां ते कीनरे ॥
करम बध तुम जीय कहेत हो करम किने जीव दीनरे ३
हरमे तनहै तनमें हरहै सरव निरंतर सोय रे ॥
कहे कबीर राम नाम न छोडुं सैहजे होय सो होयरे ४

पद १५३. (राग गौड)

भुजा बांध भिला कर डान्यो ॥ हस्ती कोप मुड मदे मान्यो ॥
हस्त भाग के चीसां मारे ॥ या मूरत के हों बलहारे १
आह मेरे ठाकुर तुमरा जोर॥काजी बकवो हस्ती तोर॥
रे माहावत तुझे डारु काट॥इसे तरावदे घालोह साट२
हस्त न तोरे धरे ध्यान ॥ वाके रिदे वसे भगवान ॥
क्या अपराध संतह कीना॥बांध पोट कुंचरकों दीना ३
कुंचर पोट ले ले नमस्कारे॥वुझी नाही काजी अंधीआरे॥
तीन बार पतीआ भर लीना ॥ मन कठोर अजहु न पतीना ॥ ४ ॥
कहे कबीर हमरा गोविंद॥चोथे पदमे जिनका जिद ५

पद १५४. (राग गौड)

नाएह मानस नाएह देव ॥ नाएह जती कहावे सेव ॥
नाएह जोगी ना अवधूता ॥ ना इस माय न काहु पूता ॥ १ ॥
या मंदर मैह कोन बसाइ ॥ ताका अंतन कोऊ पाइ ॥
नाएह ग्रही ना उदासी॥नाएह राजन भीख मंगासी २
ना इस पिंड नरक तु राती ॥ ना एह ब्राह्मन ना एह खाती ॥
ना एह तपा कहावे सेख ॥ ना एह जीवे न मरता देख ॥ ३ ॥

बाबा बोलना क्या कहीए॥जैसे राम नाम रव रहीए २
संतन सों बोले उपकारी॥मुरखसों बोले झखमारी ३
बोलत बोलत बढे बिकारा ॥ बिन बोले क्या करे बिचारा ॥ ४ ॥
कहे कबीर छूछा घट बोले ॥ भरया होय सो कबहुन डोले ॥

पद १५१. (राग गौड)

नरु मरे नर काम न आवे॥पसु मरे दस काजसवारे ॥१॥
अपने करमकी गत मै क्या जानु॥ मे क्या जानु बाबारे ॥ २ ॥
हाड जलें जैसे लकरीका तुला ॥ केस जले जैसे घास का पूला ॥ ३ ॥
कहे कबीर तबही नर जागे॥जमका डंड मुंडमे लागे ४

पद १५२. (राग गौड)

आकास गगन पाताल गगन है चौदिस गगन रहाय ले॥
आनंद मुल सदा पूरखोत्तम घट बिनसे गगन न जाय ले ॥ १ ॥
मोहे बैराग भयो ॥ एह जीव आय कहां गयो ॥ २ ॥
पंच तत मिल काया कीनी तत कहां ते कीनरे ॥
करम बध तुम जीव कहेत हो करम किने जीव दीनरे ३
हरमें तनहै तनमें हरहै सरब निरंतर सोय रे ॥
कहे कबीर राम नाम न छोडुं सैहजे होय सो होयरे ४

पद १५३. (राग गौड)

भुजा बांध भिला कर डान्यो ॥ हस्ती कोप मुड महे मान्यो ॥
हस्त भाग के चीसा मारे ॥ या मूरत के हो बलहारे १
आह मेरे ठाकुर तुमरा जोर॥काजी बकवो हस्ती तोर॥
रे माहावत तुझे डारुकाट॥इसेतरावहे घालोह साट२
हस्त न तोरे धरे ध्यान ॥ वाके रिदे बसे भगवान ॥
क्या अपराध संतह कीना॥बांध पोट कुंचरकों दीना३
कुंचर पोट ले ले नमस्कारे॥बुझी नाही काजी अंधीआरे॥
तीन बार पतीआ भर लीना ॥ मन कठोर अजहु न पतीना ॥ ४ ॥
कहे कबीर हमरा गोविंद॥चोथे पदमे जिनका जिंद ५

पद १५४. (राग गौड)

नाएह मानस नाएह देव ॥ नाएह जती कहावे सेव ॥
नाएह जोगी ना अवधूता ॥ ना इस माय न काहु पूता ॥ १ ॥
या मंदर मेह कोन बसाइ ॥ ताका अंतन कोऊ पाइ ॥
नाएह ग्रही ना उदासी॥नाएह राजन भीख मंगासी २
ना इस पिंड नरक तु रात्ती ॥ ना एह ब्राह्मन ना एह खाती ॥
ना एह तपा कहावे सेख ॥ ना एह जीवे न मरता देख ॥ ३ ॥

इस मरते को जेकोउ रोवे ॥ जो रोवे सोइ पत खोवे॥
गुर परसाद मै डगरो पाया ॥ जीवन मरन दोऊ मिट
वाया ॥ ४ ॥
कहे कबीर एह रामकी अंस ॥ जसकागद पर मिटेन
मंस ॥ ५ ॥

पद १५५. (राग गौड)

तूटे तागे निखुटी पान ॥ द्वार उपर झलकावे कान ॥
कूच विचारे फुए फाल॥या मुंडीया सिर चडबो काल १
या मुंडीया सगलो दर्ब खोइ ॥ आवत जात ना कसर
होइ ॥
तुरी नारकी छोडी बाता॥राम नाम वाका मन राता २
लरकी लरकन खेबो नाह॥मुडीया अनदिन धापे जाह॥
एक दोए मंदर एक दोए बाट ॥ हमको साथर उनको
खाट ॥ ३ ॥
मुंड पलोस कमर बंध पोथी ॥ हमको चावन उनको
रोटी ॥
मुंडीया मुंडीया हुए एक ॥ ए मुंडी या बूडतकी टेक ४.
सुन अंधली लोइ बें पीर ॥ इन मुंडीअन भज सरन
कबीर ॥

पद १५६. (राग गौंड)

खसम मरे तो नार न रोवे॥उस रखवाला अवरो होवे॥
रखवारेका होय बिनास॥आगे नरक इहां भोग बिलास१

एक सोहागन जगत प्यारी॥सगले जीय जंतकी नारी॥
सोहागण गल सोहे हार॥संतको बिख बिगसे संसार २
कर सिंगार वहेपरवीआरी॥ संतकी ठिठकी फिरे बिचारी॥
संत भाग ओह पाछे मरे॥ गुर परसादी मारो डरे ॥३॥
साकतकी ओह पिंड परायण॥हमको द्रिष्ट परे त्रख डायन ॥
हम तिसका वहो जान्या भेव॥ जब हूये क्रिपाल मिले गुरदेव ॥ ४ ॥
कहे कबीर अब बाहेर धरी ॥ संसारेके अंच लरी ॥

पद १५७. (राग गौंड)

ग्रहे सोभा जाके रे नाह ॥आवत पहीआ खूदे जाह॥
वाके अंतर नही संतोख ॥ बिन सोहागन लागे दोख १
धन सोहागन महा पवीत ॥ तपे तपीसर डोलें चीत ॥
सोहागन किरपनकी पूती ॥ सेवक तज जगत स्यों सूती ॥ २ ॥
साधुके ठांडी दरबार ॥ सरन तेरी मोंको निस्तार ॥
सोहागन है अत सुंदरी॥पग नेवर छनक छनहरी ॥३॥
जब लग प्रान तउ लग संगे॥नाहेत चली बेग उठनंगे॥
सोहागन भवन त्रे लीया ॥ दस अठ पूरान तीरथ रस कीया ॥ ४ ॥
ब्रह्मा बिसन महेसर बेधे ॥ वड भूपत राजेहे छेदे ॥
सोहागन उर वारन पार ॥ पांच नारद कै संग विधवार ॥ ५ ॥

पंच नारदके मिटवे फूटे॥ कहे कबीर गुर किरपा छूटे॥

पद १५८. (राग गौड)

जैसे मंदर मेद बलहर ना ठाहरे ॥ नाम बिना कैसे पार उतरे ॥
कुंभ बिना जल ना टीकावे ॥ साधु बिन ऐसे अवगत जावे ॥ १ ॥
जारो तिसे जो रामन चेते॥ तन मन रमतरहे महपेखे॥
जैसे हलहर बिना जमी नही बोइए ॥ सूत बिना कैसे मणी परोइए ॥ २ ॥
धुंडी बिन क्या गंठ चढाइए ॥ साधु बिना तैसे अवगत जाइए ॥
जैसे मात पिता बिन बालन होइ ॥ बिंब बिना कैसे कपरे धोइ ॥ ३ ॥
घोड बिना कैसे असवार ॥ साधु बिन नाही दरबार ॥
जैसे बाजे बिन नही लीजे फेरी ॥ खसम दोहागन तज ओ होरी ॥ ४ ॥
कहे कबीर एके कर करना ॥ गुर मुख होय बहोर नही मरना ॥

पद १५९. (राग गौड)

कूटन सोय जो मनको कूटे ॥ मन कूटे तो जमते छूटे ॥
कुट कुट मन कसवटी लावे ॥ सो कूटन मुकत बोह पावे ॥ १ ॥

कूटन किसे कहो संसार॥सगल बोलन के माहे विचार॥
नाचन सोय जो मन स्यों नाचे॥ झूठन पतीए परचे
साचे ॥ २ ॥
इसमन आगे पूरे ताल॥इस नाचनके मन रखवाल॥
बाजारी सो जो बजारह सोधे॥ पाच पचीसेह को पर
बोधे ॥ ३ ॥
नव नायककी भगत पछाने॥सो बाजारी हमगुर माने॥
तस्कर सोय जो तातन करे॥ इंद्री के जतन नाम
उचरे ॥ ४ ॥
कहे कबीर हम ऐसे लखन॥ धन गुर देव अत रुप
बिचखन ॥

पद १६०. (राग गौड)

धन गोपाल धन गुर देव॥ धन अनाद भूखे कवल
टहे केव ॥
धन ओय संत जिन ऐसी जानी॥ तिनको मिलबो
सारंग पानी ॥ १ ॥
आद पूरख ते होय अनाद॥जपीए नाम अन्नके स्वाद॥
जपीए नाम जपीए अन्न॥ अंभे के संग नीका बन॥२॥
अन्ने बाहर जो नर होवह॥ तीन भवनमे आपनी पत
खोवह ॥
छोडे अन्न करे पाखंड॥ना सोहागन ना ओय रंड॥३॥
जगमें बकते दूधा धारी॥ गुप्ती खावे वटीका सारी॥

अन्ने बिना नहोय सुकाल ॥ तजीए अन्न न मिले गोपाल ॥ ४ ॥
कहे कबीर हम ऐसे जान्या ॥ धन अनाद ठाकुर मन मान्या ॥

पद १६१. (राग रामकली)

काया कलाल निलाहन मेल्यो गुरका सबद गुड कीनरे॥
त्रिस्ना काम क्रोध मद मतसर काट काट कस दीनरे १
कोइ हैरे संत सहेज सुख अंतर जाको जप तप देओ दलालीरे ॥
एक बूंद भर तत मन देवो जो मद देव कलालीरे॥२॥
भवन चतंर दस भाठी कीनी ब्रम अगन तन जारी रे॥
मुद्रा मदक सहेज धुन लागी सुखमन पोहोचन हारीरे३
तीरथ बर्त नेम सुच संजम रव सस गहेने देव रे ॥
सुरत पयाला सुधा रस अमृत एह महा रस पीवरे॥४॥
निझर धार चुए अत निरमल एह रस मनुवा रातोरे ॥
कहे कवीर सगले मद छूछे एह महा रस साचोरे ॥५॥

पद १६२. (राग रामकली)

गुड कर ग्यान ध्यान कर मउवा भव भाठी मन धारा॥
सुख मन नारी सहेज समानी पीवे प्रीवन हारा॥ १ ॥
अवधु मेरा मन मत वारा ॥
उन मद चडा मदन रस चाख्या त्रेभवन भया उजी आरा ॥ २ ॥

दोए पुर जोर रसाइ भाठी-पीव महा रस तारी ॥
काम क्रोध दोए कीए जलेधा छुट गइ संसारी ॥ ३ ॥
प्रगट प्रगास ग्यान गुर गमत सत गुरते सुध पाइ ॥
तास कवीर दास मद माता उचकि न कवहुं जाइ॥४॥

पद १६३. (राग रामकली)

तूं मेरोमेर परवत स्वामी ओट गही मै तेरी ॥ ॥
ना तुम डोलो ना हम गिरते रख लीनीं हर मेरी ॥१॥
अव तव जव कव तुंही तुंही ॥
हम तुम प्रसाद सुखी सदही ॥ २ ॥
तोरे भरोसे मगहर वसिओ मेरे तनकी तपत बुझाइ॥
पहेले दरसन मग हर पायो फुन कासी बसे आइ॥३॥
जैसा मगहर तैसी कासी हम एके कर जानी ॥
हम निरधन जव एह धन पाया मरते फूट गुमानी॥४॥
करे गुमान चुभे तिस सूला को काढनको नाही ॥
अजे सुचोभ को बिललाते नरके घोर पचाइ ॥ ५ ॥
कवन नरक क्या सुरग बिचारा संतन दोऊ राद्दे ॥
हम काहूकी काण न कढते अपने गुर परसादे ॥ ६ ॥
अब तो जाय चडे सिंघासन मिलहै सारंग पानी ॥
राम कवीरा एक भएहै कोऊ न सके पछानी ॥ ७ ॥

पद १६४. (राग रामकली)

संता मानो दुता डानो एह कुटवारी मोरी ॥
दिनसो रैन तेरे पाऊ पलोसो केसर वरकर फेरी ॥१॥

हम कूकर तेरे दरबारा ॥ भोखे आगे बदन पसारा २
पूरब जनम हम तुमरे सेवक अबतो मिटया न जाइ ॥
तेरे द्वारे धुन सहेजकी माथे मेरे दगाइ ॥ ३ ॥
दागे होय सो रनमें जुझे बिन दागे भज जाइ ॥
साधु होय सो भगत पछाने हरलए खजाने पाइ ॥४॥
कोठर में कोठरी परम कोठरी बिचार ॥
गुर दीनी वस्त कबीर को लेवो वस्त समार ॥ ५ ॥
कबीर दी संसारको लीनी जिस मस्तक भाग ॥
अम्रत रस जिन पाया थिर ताका सोहाग ॥ ६ ॥

पद १६५. (राग रामकली)

जहे सुख बेद गायत्री निकसे सो क्युं ब्रह्मन बिसर करे॥
जाके पाय जगत सब लागे सो क्युं पंडत हर न कहे॥१॥
काहे मेरे बामन हर नकहे ॥
राम न बोले पांडे दोजक भरे ॥ २ ॥
आपन ऊंच नीच घर भोजन हटे करम कस उदर भरे॥
चौदस अमावस रच रच मांगे कर दीपक ले कूप परे १
तु बामन मै कासीका जुलाहा मोह तोह बराबरी
कैसेके बने ॥
हमरे राम नाम कहे उबरे बेद भरोसे पांडे डुब मरे॥४॥

पद १६६. (राग रामकली)

तर वर एक अनंत डार साखा पोहेप पत्र रस भरीया॥
एह अम्रतकी बानी हैरे तिन हर पुरे करीया ॥ १ ॥

जानी जानीरे राजा रामकी कहानी ॥
अंतर जोत राम प्रगासा गुरमुख विरले जानी ॥ २ ॥
भवर एक पोहप रस बीधा बारेह ले उर धर्या ॥
सो रहे मधे पवन झकोऱ्यो आकासे फर फर्या ॥ ३ ॥
सहेज धुन एक बिरवा उपज्या धरती जल हर सोख्या ॥
कहे कबीर हों ताका सेवक जिन एह बिरवा देखा ॥ ४ ॥

पद १६७. (राग रामकली)

मुंद्रा मोन दया कर झोली पत्रका करो विचाररे ॥
खिंथा एह तन सीओ अपना नाम करो आधाररे ॥ १ ॥
ऐसा जोग कमावो जोगी ॥ जब तप संजम गुरमुख
भोगी ॥ २ ॥
बुध भिभुत चडावो अपनी सिंगी सुर्त मिलाइ ॥
कर बैराग फिरो तन नगरी मनकी किंगरी बजाइ ॥ ३ ॥
पंच तत ले हिरदे राखो रहे निरामल ताडी ॥
कहेत कबीर सुनोरे संतो धरम दया कर वाडी ॥ ४ ॥

पद १६८. (राग रामकली)

कवन काज सिरजे जग भीतर जनम कवन फल पाया ॥
भव निध तरण तारण चिंतामण एक निमखन एह
मन लाया ॥ १ ॥
गोविंद हम ऐसे अपराधी ॥
जिन प्रभजीय पिंड था दीया तिसकी भाव भगत
नही साधी ॥ २ ॥

परधन पर तन परती निंदा पर अपवाद न छूटे ॥
आवा गवन होत है फुन फुन एह परसंग न टूटे ॥ ३ ॥
जहें घर कथा होत हर संतन एक निमखन कीनो मै फेरा ॥
लंपट चोर दूत मतवारे तिन संग सदा बसेरा ॥ ४ ॥
काम क्रोध माया मद मतसर ए संपे मो माही ॥
दया धरम अर गुरकी सेवा ए सुपनंतर नाही ॥ ५ ॥
दीन दयाल किरपाल दमोदर भगत वछल भय हारी ॥
कहेत कबीर भीर जन राखो हर सेवा करो तुमारी ॥ ६ ॥

पद १६९. (राग रामकली)

जहें सिमरन होय मुक्त दुवार ॥ जाह बैकुंठ नाही संसार ॥
निरभवके घर बाजे तूर ॥ अनहद बजेह सदा भर पूर ॥ १ ॥
ऐसा सिमरन कर मन माह ॥ विन सिमरन मुकत कतनाह ॥
जहें सिमरन नाही ननकार ॥ मुकत करे उतरे बहो भार ॥ २ ॥
निमस्कार कर हिरदे माह ॥ फिरफिर तेरा आवन नाह ॥
जहें सिमरन करेह तुकेल ॥ दीपक बांध धर्यो विन तेल ३
सो दीपक अमरकसंसार ॥ काम क्रोध बिख काढीले मार
जहें सिमरन तेरी गत होय ॥ सो सिमरन रख कंठ परोय ॥ ४ ॥
सो सिरमन कर नही राख उतार ॥ गुर परसादी उतरह पार ॥

जहें सिमरननांही तोह कान॥मंदर सोवेह पटंबर तान५
सहेज सुखाली बिगसें जीव ॥ सो सिमरन तूं अन दिनपीव ॥
जहें सिमरन तेरी जाय बलाय ॥ जेह सिमरन तुज पोहन माय ॥ ६ ॥
सिमर सिमर हर हर मन गाईए ॥ ए सिमरन सतगुर ते पाईए ॥
सदा सदा सिमर दिन रात्त॥उठत बेठत सास गिरास७
जाग सोय सिमरन रसभोग॥हर सिमरन पाईए संजोग
जहें सिमरन नाही तुज भार॥ सो सिमरन राम नाम अधार ॥ ८ ॥
कहे कबीर जाका नही अंत॥तिसके आगे तंत न मंत॥

पद १७० (राग रामकली)

बंधे बंधन पाया ॥ मुकते गुर अनल बुझाया ॥
जब नखसिख एह मन चीना॥तब अतर मज्जन कीना॥
पवन पत उन मन रहे न खरा॥नही मिरतन जनम जरा ॥
उलटी ले सकत सहारं ॥ पेसी ले गगन मझारं ॥२॥
बेधिअले चक्र भुअंगा ॥ अभेदीअले राय निसंगा ॥
चूकीअले मोह प्यासा॥सस-कीनो सूर गिरासा ॥ ३ ॥
जब कुंभक भरपुर लीना ॥ काहां बाजे अनहद बीना॥
बकते बक सबद सुनाया॥सुनते सुन मन बसाया ॥४॥
कर करता उतरस पारं ॥ कहे कबीरा सारं ॥

पद १७१. (राग रामकली)

चंद्र सूरज दोए जात सरुप॥जोती अंदर ब्रह्म अमूप॥
कहोरे ग्यानी ब्रह्म बिचार॥जोती अंदर पर्या पसार १
हीरा देख हीरे करो आदेस॥कहे कबीर निरंजन अलेख॥

पद १७२. (राग मारु)

दुनिया हुसियार बेदार जागत मुसीअत होरे भाइ ॥
निगम हुसीआर पहुरवा देखत जम ले भाइ ॥ १ ॥
नींब भयो आंब आंब भयो नींबां केला पाका झार ॥
नालीएर फल से बर पाका मूरख मुगध गमार ॥ २ ॥
हर भव खांड रेत मै बिखयों हस्ती चुनीओ न जाइ ॥
कहे कबीर कुल जात पात तज चींटी होय चुनखाइ ३

पद १७३. (राग मारु)

पंडीया कवन कुमत तुम लागे ॥
बूडोगे परवार सगलस्यों राम न जपो अभागे ॥ १ ॥
बेदपुरान पडे का क्या गुन खर चंदन जस भारा ॥
राम नामकी गत नही जानी कैसे उतरस पारा ॥ २ ॥
जीय बधसो धरम कर थापो अधर्म कहो कत भाइ॥
आपसकु मन वर कर थापो काको कहो कसाइ ॥ ३ ॥
मनके अंधे आपन बुझो काह बुझावो भाइ ॥
माया कारन विद्या बेचो जन्म अकारथ जाइ ॥ ४ ॥
नारद बचन व्यास कहत है सुकको पूछो भाइ ॥
कहे कबीर रामे रम छूटो नाहत बूडो भाइ ॥ ५ ॥

पद १७४. (राग मारु)

बनहे वसे क्यु पाईए जोलो मन हन तजे विकारा ॥
जहें घर वन समसर कीया ते पूरे संसारा ॥ १ ॥
सारस पाइए रामा ॥
रंग रवहो आतम रामा ॥ २ ॥
जटा भसम लेपन कीया रहा गुफामें बास ॥
मन जीते जग जितीया विरन्या ते होय उदास ॥ ३ ॥
अंजन दे सभेद कोई दुक चादन माद बिडान ॥
ग्यान अंजन जहे पाया ते लोयन परवान ॥ ४ ॥
कहे कबीर अब जानीया गुरग्यान दीया समझाय ॥
अंतर गत हर भेटया अब मेरा मन कलहन जाय॥५

पद १७५. (राग मारु)

रिद्ध सिद्ध जांको फुरी तव काहु सो क्या काज ॥
तेरे कहनेकी गत क्या कहो बोलतही बड लाज॥१॥
राम जेह पाया राम ॥
ते भवे न वारे वार ॥ २ ॥
झूठा जग डहके घना दिन दोए वरतनकी आस ॥
राम उदुक जहे जन पीया तहें बहोरन भइ प्यास २
गुर परसादी जहें बूझया आसा ते भया निरास ॥
सब सच नदरी आया जो आतम भया उदास ॥४॥
राम नाम रस चाखीया हर नामा हर तार ॥
कहे कबीर कंचन भया भ्रम गया समूंद्रे पार ॥ ५ ॥

पद १७६. (राग मारु)

उदक समुंद सलल्की साखा नदी तरंग समावहेंगे॥
सुन्ने सुन्न मिलया सम दरसी पवन रुप होय जावहेंगे१
बहोर हम काहे आवहेंगे ॥
आवन जाना हूकम तिसेका हुकमे बुझ समावहेंगे॥२॥
जब चूके पंच धातकी रचना ऐसे भरम चूकावहेंगे ॥
दरस छोड भए समदरसी एको नाम ध्यावहेंगे॥ ३ ॥
जित हम लाए तितही लागे तैसे करम कमावहेंगे ॥
हरजी किरपा करे जो अपनी तो गुरके सबद कमावहेंगे४
जीवत मरो मरो फुन जीवो पुनरप जनम नहोई ॥
कहे कबीर जब नाम समाने सुन्न रहा लिव सोई५

पद १७७. (राग मारु)

जो तुम मोको दूर करत हो तब तुम मुकत बतावो ॥
एक अनेक होय रह्यो सगलमें अब कैसे भरमावो॥१॥
राम मोको तार कहां ले जई है ॥
सोधो मुकत कहां देव कैसी कर परसाद मोहो पईहे२
तारन तरन तबेलग कहीए जबलग तत्त नजान्या ॥
अब तो बिमल भए घटही में कहे कबीर मन मान्या ३

पद १७८. (राग मारु)

जिन गड कोट कीए कंचनके छोड गया सो रावन ॥
काहे कीचत है मन भावन॥ १ ॥

जब जम आय केस ते पकरे तां हरको नामछोडावन॥
कालअकाल खसमका कीना एह परपंच वधावन॥२॥
कहे कबीर ते अंते मुकते जिन हिरदे राम रसायन॥

पद १७९. (राग मारु)

देही गांवा जीव धरम हतो बसे पंच किर साना॥
नैनो नकटी स्रवणु रस पत इंद्रीकहा न माना॥ १॥
बावा अब न बसो ए गाव॥
घरी घरीका लेखा मागे काय वचे नूं नाह॥ २॥
धरम राय जब लेखा मांगे बाकी निकसी भारी॥
पंच किरसनवा भाग गए ले बांध्यो जीव दरवारी॥३॥
कहे कबीर सुनोरे संतो खेती करो निबेरा॥
अबकी बार बखस बंदेको बहोरन भव जल फेरा॥४॥

पद १८०. (राग मारु)

अनभव कीने न देख्या बैरागी अडे बिन भै अनभव ना होय वणा हंवे॥
सहो दूर देखे ता भव पावे बैरागी अडे हुकमे बुझे तां निरभव होय वणा हंवे॥ १॥
हर पाखंड न कीजीए बैरागी अडे पाखंड रता सब लोग वणा हंवे॥
त्रिष्णा पास न छोडइ बैरागी अडे ममता जाल्या पिंड वणा हंवे॥ २॥

चिंता जाल तन जालया वैरागी अडे जे मन मिरतक होय वणा हंबे ॥
सत गुर बिन बेरागन होवइ बैरागी अडे जे लोचे सब कोय वणा हंबे ॥ ३ ॥
करम होय सत गुर मिले बैरागी अडे सहेजे पावे सोय वणा हंबे ॥ ४ ॥
कहे कबीर एक बेनती बैरागी अडे मोको भव जल पार उतार वणा हंबे ॥ ५ ॥

पद १८१. (राग मारु)

राजन कवन तुमारे आवे ॥
ऐसो भाव भाव बिदरको देख्यो वोह गरीब मोहे भावे १
हसती देख भरम ते भूला श्रीभगवान नजान्या ॥
तुमरो दूध बिदरको पानी अम्रत करमें मान्या ॥ २ ॥
खीर समान साग सुख पाया गुन गावत रेन बिहानी ॥
कबीर को ठाकुर अनंद बिनोदी जातन काहुकी मानी ३

पद १८२. (राग मारु)

दीन बिसार्यो रे दिवाने दीन बिसार्यो रे ॥
पेट भर्यो पसुवा ज्युं सोयो मनमुख जनम है हार्योरे १
साध संगत कबहुं नही कीनी रचयो धंधे झूठ ॥
स्वान सुकर बायस जिवे भटकत चाल्यो ऊठ ॥ २ ॥
आपसको दीरघ जाणे औरनको लग मात ॥
मनसा वाचा करमना मे देख्यो दोजक जात ॥ ३ ॥

कामी क्रोधी चातरी बाजीगर बे काम ॥
निंदा करते जनम सिराने कबहुं न सिमर्यो राम ॥४॥
कहे कबीर चेते नही मूरख मुगध गवांर ॥
राम नाम जान्यो नही कैसे ऊतरस पार ॥ ५ ॥

पद १८३. (राग केदारा)

उस्तत निंदा दोऊ विवर्जत तजो मान अभिमान ॥
लोहा कंचन समकर जाने ते मूरत भगवान ॥ १ ॥
तेरा जन एक आध कोइ ॥
काम क्रोध लोभ मोह विवर्जत हरपद चीने सोइ ॥२॥
रज गुन तम गुन सत गुन कहीए एह तेरी सब माया॥
चोथे पदको जो नर चीने तिनही परम पद पाया ॥३॥
तीरथ बर्त नेम सुच संजम सदा रहे नेह कामा ॥
त्रिष्णा अर माया भ्रम चूका चित वत आतम रामा४
जहें मंदर दीपक परगास्या अंधकार तहें नासा ॥
निरभव पूर रहे भ्रम भागा कहे कबीर जन दासा ५

पद १८४. (राग केदारो)

किनही बनजा कांसी तांबा किनही लवंग सोपारी ॥
संतहे बनजा नाम गोविंदका ऐसी खेप हमारी ॥ १ ॥
हरके नामके बेपारी ॥
हीरा हात चड्या निर मोलक छूट गइ संसारी ॥२॥
साचे लाए तव सच लागे साचेके ब्यो हारी ॥
साची वस्तके भार चलाए पहोंचे जाय भंडारी ॥ ३ ॥

आपह रतन जवाहर माणक आपेहै पासारी ॥
आपह दहेदिस आप चलावे नेह्चलहै व्यापारी ॥४॥
मनकर बैल सुरतकर पैडा ग्यान गोनभर डारी ॥
कहेत कबीर सुनोरे संतो निवही खेप हमारी ॥ ५ ॥

पद १८५. (राग केदारा)

रीकलवार गवांर मूढमत उलटो पवन फिराउं ॥
मन मत वार मेर सर भारी अम्रत धार चुवाउं ॥ १ ॥
बोलो भैया रामकी दोहाइ ॥
पीवेह संत सदा मत दुर्लभ सहेजे प्यास बुझाइ ॥२॥
भय बिच भाव भायकोऊ बुझे हर रस पावे भाइ ॥
जेते घट अम्रत सबही में भावे तिसहे पीआइ ॥ ३ ॥
नगरी एकै नव दरवाजे धावत वर्ज रहाइ ॥
त्रिकुटी छूटे दसमा दर खूले ता मन खींवा भाइ ॥४॥
अभे पद पूर ताप तहें नासे कहे कबीर विचारी ॥
उबट चलंते एह पद पाया जैसे खोंद खुमारी ॥ ५ ॥

पद १८६. (राग केदारा)

काम क्रोध त्रिसना के लीने गत नही एके जानी ॥
फूटी आंखे कछु न सुझे बूड मुए विन पानी ॥ १ ॥
चलत कत टेढे टेढे टेढे ॥
असत चरम बिष्टाके मूंद्रे दुर्गंधहीके बेढे ॥ २ ॥
राम न जपो कवन भ्रम भूले तुमते काल न दुरे ॥
अनक जतन कर यह तन राखो रहे अवस्था पूरे ॥३॥

आपन कीया कछु न होवे क्या को करे प्रानी ॥
जां तिस भावे सतगुर भेटे एको नाम बखानी ॥ ४ ॥
वलुवाके घरुवा मे बस्ते फुलवत देह एयाणे ॥
कहे कबीर जेह राम न चेत्यो बूडे बहोत स्याने ॥५॥

पद १८७. (राग केदारा)

टेढी पाग टेढे चले लागे वीरे खान ॥
भाव भगत स्यों काज न कछुवे मेरे काम दिवान ॥१॥
राम बिसार्यो हे अभिमान ॥
कनक कामनी महा सुंदरी पेख पेख सच मान ॥२॥
लालच झूठ विकार तहा मद एह विध अवध बिहान॥
कहे कबीर अंतकी बेरा आय लागो काल निदान ॥३॥

पद १८८. (राग केदारा)

चार दिन अपनी नोबत चले बजाय ॥
ए तनक खटीया गठीया मटीया संगन कछु लेजाय १
देहरी बेठी मेहरी रोवे द्वारे लव संग माय ॥
मर हट लग सभ लोग कुटंब मिल हंस एकेला जाय २
वे सुत वे बित वे पूर पाटन बहोरन देखे आय ॥
कहे कबीर राम कीन सिमरो जनम अकारथ जाय॥३॥

पद १८९. (राग भेरव)

यह धन मेरो हरको नाव॥गांठ न बांधो बेचन खांव॥
नाम मेरे खेती नाम मेरे बारी ॥ भगत करो जन सरन तुमारी ॥ १ ॥

नाम मेरे माया नाम मेरे पूंजी ॥ तुमेहे छोड जानो नही दुजी ॥
नाम मेरे बंधप नाम मेरे भाइ ॥ नाम मेरे संग अंत होय सखाइ ॥ २ ॥
माया मे जिस रखे उदास॥कहे कबीर हों ताको दास॥

पद १९०. (राग भैरव)

नागे आवन नागे जाना ॥ कोय न रहेहै राजा राणा ॥
राम राजा नव निध मेरे॥ संपे हेत सकल धन तेरे॥१॥
आवत संग न जात संगाती॥कहां भयो दरबांधे हाती॥
लंका गढ सोनेका भया॥ मूरख रावण क्या ले गया२
कहे कबीर कुछ गुन बीचार॥चले जुआरी दोएहथ झार

दप १९१ (राग भैरव)

मैला ब्रह्मा मैला इंद्र ॥ रवी मैला मैला है चंद
मैला मलता एह संसार ॥ एक हर निरमल जाका अंत न पार ॥ १ ॥
मैले ब्रमंडा एकीस ॥ मैला निसबासर दिन तीस ॥
मैला मोती मैला हीर ॥ मैला पवन पावक अर नीर२
मैले सिव संकरा महेस ॥ मैले सिद्ध साधक और भेरव
मैले जोगी जंगम जटा सहेत ॥ मैली काया हंस समेत२
कहे कबीर ते जन परवान॥निरमल ते जो रामहे जान॥

पद १९२. (राग भैरव)

मन कर मक्का किबला कर देही॥बोलन हार परम गुर एही ॥
कहोरे मुल्ला बांग निवाज ॥ एक मसीत दसे दरवाज १
मिस मिलता मस भरम कदुरी॥भखले पंचे होय सबूरी॥
हिंदु तुरकका साहेब एक॥कहा करे मुल्ला कहारे सेख२
कहे कबीर हो भया दिवाना ॥ मुसमुस मनवा सहेज समाना ॥ ३ ॥

पद १९३. (राग भैरव)

गंगाके संग सलिता बिगरी॥सो सलिता गंगा होय निबरी॥
बिगर कबीरा राम दोहाई ॥ साच भयो अन कतहुन जाई ॥ १ ॥
चंदनके संग तरवर बिगर्‍यो॥सो तरवर चंदन होय निबर्‍यो
पारसके संग तांबा बिगर्‍यो ॥ सो तांबा कंचन होय निबर्‍यो ॥ २ ॥
संतन संग कबीरा बिगर्‍यो॥सो कबीर रामै होय निबर्‍यो

पद १९४. (राग भैरव)

माथे तिलक हथ माला बांना ॥ लोगन राम खिलोना जाना ॥
जोहों बौरा तो राम तोरा॥लोग मरम कहा जाने मोरा१
तोरो न पाती पूजो न देवा॥राम भगत बिन नेह फल सेवा॥
सत गुर पूजो सदा मनावो॥ऐसी सेव दरगे सुख पावो२

लोग कहे कबीर बवराना ॥ कबीर का मरम राम पहे चान्या ॥

पद १९५. (राग भैरव)

उलट जात कुल दोऊ बिसारी ॥ सुन्न सहेजमें बुनत हमारी ॥
हमरा झगरा रहा न कोऊ॥पंडत मुल्ला छांडे दोऊ ॥१॥
बुन बुन आप आप पहेराऊं ॥ जहे नहीं आप तहां होय गाऊं ॥
पंडत मुल्ला जो लिख दीया॥छांड चले हम कछुं न लीया २
रिदे खलास निरख ले मोरा ॥ आप खोज खोज मिले कबीरा ॥

पद १९६ (राग भैरव)

निरधन आदर कोऊ न दए ॥ लाख जतन करे ओह चित न धरे ॥
जो निरधन सरधन के जाय॥आगे बैठा पीठ फिराय॥१॥
जो सरधन निरधनके जाय॥दीया आदर लीया बुलाय ॥
निरधन सरधन दोनो भाई ॥ प्रभकी कला न मेटी जाइ ॥ २ ॥
कहे कबीर निरधन है सोय॥जाके हिरदे नाम नहीं होय॥

पद. १९७ (राग भैरव)

गुर सेवा ते भगत कमाइ ॥
तब एह मानस देही पाइ ॥ १ ॥

इस देही को सिमरह देव ॥
सो देही भज हरकी सेव ॥ २ ॥
भजो गोविंद भूल मत जाह ॥
मानस जनमका एही लाह ॥ ३ ॥
जब लग जरा रोग नही आया ॥
जब लग काल ग्रसी नहीं काया ॥ ४ ॥
जब लग बिकल भइ नहीं बानी ॥
भज लेहरे मन सारंग पानी ॥ ५ ॥
अब न भजस भजस कब भाइ ॥
आवे अंत न भज्या जाइ ॥ ६ ॥
जो कुछ करेह सोइ अब सार ॥
फिर फिर पछतावो न पावो पार ॥ ७ ॥
सो सेवक जो लाया सेव ॥
तिनही पाया निरंजन देव ॥ ८ ॥
गुर मिल तांके खुले कपाट ॥
बोहरन आवे जोनी बाट ॥ ९ ॥
एही तेरा अवसर एही तेरी बार ॥
घट भितर तूं देख बिचार ॥ १० ॥
कहे कबीर जीत के हार ॥
बहो बिध कह्यो पोकार पोकार ॥ ११ ॥

पद ११८. (राग भेरव)

सिवकी पूरी बसे बुध सार ॥
तंहे तुम मिलके करो बिचार ॥

इत ऊतकी सोझी परे ॥
कवन करम मेरा कर कर मेरे ॥ २ ॥
निज पद उपर लागो ध्यान ॥
राजा राम नाम मोरा ग्यान ॥ ३ ॥
मूल द्वारे वंधया बंध ॥
रवी उपर गद्दे राख्या चंद ॥ ४ ॥
पश्चम द्वारे सूरज तपे ॥
मेर दंड सिर उपर बसे ॥ ५ ॥
पश्चम द्वारे की सिल ओड ॥
तिस सिल उपर खिडकी ओर ॥ ६ ॥
खिडकी उपर दसमा द्वार ॥
कहे कबीर तांका अंत न पार ॥ ७ ॥

पद १९९. (राग भैरव)

सो मुल्ला जो मन सो लरे ॥
गुर उपदेस काल सिंव जरे ॥ १ ॥
काल पुरखका मरदे मान ॥
इस मुल्लाको सदा सलाम ॥ २ ॥
है हजूर कत दूर बतावो ॥
दुंदर बांधो सुंदर पावो ॥ ३ ॥
काजी सोजो काया बिचारे ॥
कायाकी अगन ब्रह्म पर जारे ॥ ४ ॥
सुपने बिंद न देइ झरना ॥
तिस काजीको जरा न मरना ॥ ५ ॥

सो सुर तान जो दोय सुर ताने ॥
बाहर जाता भीतर आने ॥ ६ ॥
गगन मंडळमे लसकर करे ॥
सो सुर तान छत्र सिर धरे ॥ ७ ॥
जोगी गोरख गोरख करे ॥
हिंदु राम राम उचरे ॥ ८ ॥
मुसलमानका एक खुदाय ॥
कबीरका स्वामी रह्या समाय ॥ ९ ॥

पद २००. (राग भैरव)

जो पाथरको कहेते देव ॥
तांकी बिरथा होवे सेव ॥ १ ॥
जो पाथरकी पाइ पाय ॥
तिसकी घाल अजाइ जाय ॥ २ ॥
ठाकुर हमरा सद बोलंता ॥
सरब जीआंको प्रभ दान देवंता ॥ ३ ॥
अंतर देव न जाने अंध ॥
भ्रमका मोह्या पावे फंद ॥ ४ ॥
ना पाथर बोले ना कुछ दे ॥
फोकट करम नेह्र फल सेव ॥ ५ ॥
जे मिरतकको चंदन चडावे ॥
उसते कह्रो कवन फल पावे ॥ ६ ॥
जे मिरतकको बिष्टा माहे रुलाइ ॥
ता मिरतकका क्या घट जाइ ॥ ७ ॥

कहे कबीर हों कहुं पोकार ॥
समज देख साकत गवांर ॥ ८ ॥

पद २०१. (राग भैरव)

दुजे भाय बोहत घर गाले ॥
राम भगत हैं सदा सुखाले ॥ १ ॥
जलमें मीन मायाके बेधे ॥
दीपक पतंग मायाके छेदे ॥ २ ॥
काम माया कुंचरको व्यापे ॥
भुयगंम भ्रंग माया मे खापे ॥ ३ ॥
माया ऐसी मोहनी भाइ ॥
जेते जीआं तेते डह काइ ॥ ४ ॥
पंखी मृग माया मह राते ॥
साकर माखी अधक संतापे ॥ ५ ॥
तुरे उष्ठ माया मै भेला ॥
सिध चोरासी माया में खेला ॥ ६ ॥
छे जती माया के बंदा ॥
नवे नाथ सूरज अर चंदा ॥ ८ ॥
तपे रखीसर माया मैं सूता ॥
माया मे काल अर पंच दूता ॥ ८ ॥
स्वान स्याल माया मैं राता ॥
बंदर चीते अर सिंघाता ॥ ९ ॥
मांजर गाडर अर लुंबरा ॥
बिरख मूल माया मैं परा ॥ १० ॥

माया अंदर तीनो देव ॥
सागर इंद्रा अर धर तेव ॥ ११ ॥
कहे कबीर जिस उदर तिस माया ॥
तब छुटे जब साधू पाया ॥ १२ ॥

पद २०२. (राग भैरव)

जबलग मेरी मेरी करे ॥
तबलग काज एक नही सरे ॥ १ ॥
जब मेरी मेरी मिट जाय ॥
तब प्रभ काज सवारह आय ॥ २ ॥
ऐसा ग्यान बिचार मना ॥
हरकीन सिमरे दुःख भंजना ॥ ३ ॥
जबलग सिंघ रहे बन मांह ॥
तबलग बन फूले ही नाह ॥ ४ ॥
जब ही सियार सिंघ कों खाय ॥
फूल रही सगली बनराय ॥ ५ ॥
जीतो बूडे हारो तिरे ॥
गुर परसादी पार उतरे ॥ ६ ॥
दास कबीर कहे समझाय ॥
केवल राम रहो लिंव लाय ॥ ७ ॥

पद २०३. (राग भैरव)

मो गरीबकी को गुजरावे ॥
मजलस दूर मेहेलको पावे ॥ १ ॥

सत्तर सैं इस लार है जाके ॥
सवा लाख पेगंबर ताके ॥ २ ॥
सेख जो कहीए कोट अठासी ॥
छपन कोट जांके खेल खलासी ॥ ३ ॥
तेतीस क्रोड है खेल खाना ॥
चौरासी लख फिरे दिवाना ॥ ४ ॥
बाबा आदम कों कुछ नदर दिखाइ ॥
उनभी भिस्त घनेरी पाइ ॥ ५ ॥
दिल खल हल जाके जरदरुबानी ॥
छोड कतेब करे शैतानी ॥ ६ ॥
दुनिया दोस रोस है लोइ ॥
अपना कीया पावे सोइ ॥ ७ ॥
तुम दाते हम सदा भिखारी ॥
देओ जवाब होय बजगारी ॥ ८ ॥
दास कबीर तेरी पुनह समाना ॥
भिस्त नजीक राख रहे नाना ॥

पद २०४. (राग भैरव)

सब कोइ चलन कहत है उंहां ॥
ना जानुं बैकुंठ है कहां ॥ १ ॥
आप आपका मरम नजाना ॥
बात नहीं बैकुंठ बखाना ॥ २ ॥
जबलग मन बैकुंठकी आसा ॥
तबलग नाही चरन निवासा ॥ ३ ॥

खाइ कोट न परल पगारा ॥
ना जानु वैकुंठ दुवारा ॥ ४ ॥
कहे कबीर अब कहीए काह ॥
साध संगत वैकुठे आह ॥ ५ ॥

पद २०५. (राग भेरव)

क्युं लीजे गड बंका भाइ ॥
दोवर कोट अर तेवर खाइ ॥ १ ॥
पांच पचीस मोह मद मतसर आडी परवल माया ॥
जन गरीबको जोर न पोहचे कहाकरुं रघुराया ॥ २ ॥
काम कीवारी दुःख सुख दरवानी पाप पुन दरवाजा ॥
क्रोध प्रधान महा वड दुंदर तहें मनमांवासी राजा ३
स्वाद मनाह टोप ममताको कुबुध कमान चडाइ ॥
त्रश्ना तीर रहे घट भीतर यों गढ लियो नजाइ ॥४॥
प्रेम पलीता सुरत हवाइ गोला ग्यान चलाया ॥
ब्रम अगन सहेजे जाली एकही चोट सिझाया ॥ ५ ॥
सत संतोख ले लरने लागे तोडे दोय दरवाजा ॥
साध संगत अरगुरकी कीरपाते पकर्यो गढको राजा ६
भगत भीर सुरत सिमरनकी कटी कालभे फांसी ॥
दास कबीर चढयो गढ उपर राज लीयो अवनासी ७

पद २०६. (राग भैरव)

गंग गोसायन गहेर गंभीर ॥
जंजीर बांधकर खडे कबीर ॥ १ ॥

मन नडिगे तन काहेको डराय ॥
चरन कमल चित रह्यो समाय ॥ २ ॥
गंगाकी लेहेर मेरी टुटी जंजीर ॥
मृग छाला पर बैठे कबीर ॥
कहे कबीर कोउ संगन साथ ॥
जल थल राखन है रगनाथ ॥ ४ ॥

पद २०७. (राग भैरव)

अगम द्रगम गड रचीयो बास॥ जामे जोत करे परकास १
बिजली चमके होय अनंद॥ जहे पोढे प्रभ बाल गोविंद २
यह जीय राम नाम लिव लागे ॥ जरा मरन छूटे भ्रम भागे ॥ ३ ॥
अबरनबरनस्यौ मनही प्रीत॥ हो मै गावन गावे गीत ४
अनहद सबद होतझनकार॥ जहे पोढे प्रभ श्री गोपाल ५
खंड मंडल मंडल मंड॥ अगम अगोचर रहा अभ अंत
पार न पावे को धरनी धर मंत ॥
कदली पोहेप धूप प्रकास॥ जर पंकज मै लीयो निवास ४
अर्ध उर्ध मुख लागो पास॥ सुन्न मंडल मै कर परकास ६
वांहा सूरज नाही चंद ॥ आद निरंजन करे अनंद ॥
सो ब्रह्मंड पिंड सो जान ॥ मान सरोवर करे स्नान ६
सोहं सो जाको जाप॥ जाके लिपत न होय पुन अर पाप॥
अबरत बरन धान नही छाम ॥ ओरन पाइए गुरकी साम ॥ ७ ॥

टारी टरे न आवे न जाय॥सुंन सहेजमे रह्यो समाय॥
मन मधे जाने जे कोय ॥ जो बोले सो आपे होय॥८॥
जोति मंत्र मन अस्थिर करे॥कहे कबीर सो प्रानी तरे॥

पद २०८. (राग भैरव)

कोट सूरज जांके परकास॥कोट महादेव और कैलास॥
दुरगा कोट जांके मरदन करे॥ब्रह्मा कोट बेद उच्चरे॥१॥
जो जाचो तो केवल राम॥आन देव स्यौं नाही काम॥
कोट चंद्रमा करे चिराक॥ सुर तेतीसो जेवहे पाक॥२॥
नव ग्रहे कोट ठांडे दरबार॥धरम कोट जांके प्रतिहार॥
पवन कोट चौवारे फिरे॥वासक कोट सेज बिस्थरे॥३॥
समुंदर कोट जाके पानी हार ॥ रोमावली कोट अठारे भार ॥
कोट कुबेर भरे भंडार॥कोटक लक्ष्मी करे सिगार ॥४॥
कोटक पाप पुन्न बेहिरे ॥ इंद्र कोट जांके सेवा करे ॥
छपन कोट जांके प्रतिहार ॥ नगरी नगर खेत अपार ५
लट छुटी बरते बिकराल ॥ कोट कला खेले गोपाल ॥
कोट जग्ग जांके दरबार ॥ गंध्रप कोट करे जेकार ॥ ६ ॥
विद्या कोट सबे गुन कहे॥तव पार ब्रह्मका अंत न लहे॥
बावन कोट जांके रोमावली॥रावन सेना जहे ते छली७
सहेस कोट बहे कहेत पूरान॥दुर्जोधनका मथिया मान ॥
कंद्रप कोट जांके लवे न धरहे ॥ अंतर अंतर मनसा हरहे ॥ ८॥
कहे कबीर सुन सारंगपान ॥देह अभेपद मागो दान॥

पद २०९. (राग वसंत)

इस तन मन मधे मदन चोर ॥ जिन ग्यान रतन हिर लीनो मोर ॥
मै अनाथ प्रभ कहुं काह ॥ को कोन बिगुतो मोको आह ॥ १ ॥
माधव दारून दुख सह्यो न जाय ॥ मेरो चपल बुद्ध स्युं कहां वसाय ॥
सनक सनंदन सिव सुकाद ॥ नाभ कमल जाने ब्रह्माद ॥ २
कबी जन जोगी जटाधार ॥ सब आपन अवसर चले सार ॥
तु अथाह मै थाह नाह ॥ प्रभ दीनानाथ दुख कहुं काह ३
मोरो जनम मरन दुख आथधीर ॥ सुख सागर गुन रवुं कबीर ॥

पद २१०. (राग वसत)

मौली धरथी मौल्या आकास ॥ घट घट मौल्या आतम प्रकास ॥
राजा राम मौल्या अनंत भाय ॥ जहें देखो तहें रह्या समाय ॥ १ ॥
दुतिआ मौले चारे वेद ॥ सिम्रत मौली सिव कतेब ॥
संकर मौल्यो जोग ध्यान ॥ कबीर को स्वामी सब समान ॥ २ ॥

पद २११. (राग वसंत)

ंडित जन माते पड पुरान॥जोगी माते जोग ध्यान॥
सन्यासी माते अहं मेव॥तपसी माते तपके भेव॥१॥
सब मद माते कोऊ न जाग॥ संगही चोर घर मूसन लाग॥

जागे सुकदेव अर अकरुर॥हनमंत जागे घर लंकूर २
संकर जागे चरन सेव॥ कल जागे नामा जयदेव॥
जागत सोवत बहो परकार॥ गुर सुख जागे सोइ सार ३
इस देहीके अधक काम॥ कहे कबीर भज राम नाम॥

पद २१२. (राग वसत)

जोय खसंमहे जाया॥ पूत बाप खेलाया॥
बिन स्त्रवना खीर पीलाया॥ १॥
देखो लोगा कलका भाव॥सुत मुक लाड अपनी माव॥
पगा बिन हुरीया मारता॥ बदने बिन खिर खिर हसता॥ २॥

निंद्रा बिन न रुपे सोवे॥ बिन वासन खीर बिलोवे॥
बिन स्थन गवू सवेरी॥ पैंडे बिन बाट घनेरी॥ ३॥
बिन सतगुर बाट न पाइ॥ कहे कबीर समझाइ॥

पद २१३. (राग वसत)

पहेलाद पठाए पडन साल॥संग सखा बहो लीए बाल॥
मोको कहा पडावस आल जाल॥मेरी पटीया लिखदे श्रीगोपाल॥ १॥

नही छोडुं रे बाबा राम नाम ॥ मेरा ओर पडन स्युं नाही काम ॥

संडे मरके कह्यो जाय ।।प्रहलाद बोलाए बेग धाय॥२॥

तुं राम कहनकी छोड बान ॥ तुझ तुरत छोडाउं मोरो कह्यो मान ॥

मोको कहा सतावो बार बार ॥ प्रभ जल थल गिर कीए पहाड ॥ ३ ॥

एक राम न छोडो गुरह गार ॥ मोको घाल जार भावे मार डार ॥

काढ खडग कोप्यो रिसाय ॥ तुज राखनहारो मोह बताय ॥ ४ ॥

प्रभ थंभ ते निकसे कै बिस्थार ॥ हर नाखस छेद्यो नख बिदार ॥

ओए परम पुरख देवाधि देव ॥ भगत हेत नरसिंग भेव ॥ ५ ॥

कहे कबीर को लखे न पार॥प्रह्लाद उधारे अनक बार॥

पद २१४. (राग वसत)

नायक एक बनजारे पांच ॥ बरध पचीसक संग काच॥

नव बहीआ दस गोन आह॥कसन बहुतर लागी ताह १

मोह ऐसे बनज स्यों नाही न काज ॥ जहे घटे मूल नित बढे ब्याज ॥

सात सूत मिल बनज कीन॥करम भावनी संग लीन २

तीन जगाती करत रार ॥ चलो बनजारा हाथ झार ॥
पुंजी हिरानी बनज टूट॥ दहेंदिस टांडो गयो फूट॥३॥
कहे कबीर मन सरसी काज ॥ सहेज समानो त
भरम भाज ॥

पद ११५. (राग वसत)

माता जूठी पिताभी जूठा ॥ जूठेही फल लागे ॥
आवे जूठे जायभी जूठे ॥ जूठे मरे अभागे ॥ १ ॥
कहो पंडत सूचा कोन थांव॥जाहांबैसहों भोजन खाव॥
जेह्वा जूठी बोलत जूठा ॥ करन नेत्र सब जूठे ॥
इंद्रीकी जूठ उतरस नाही ॥ ब्रह्म अगनके लूठे ॥ ३ ॥
अगनभी जूठी पानी जूठा ॥ जूठे बैस पकाया ॥
जूठी करछी परोसन लागा ॥ जूठेही बैठ खाया ॥ ४॥
गोवर जूठा चौका जूठा ॥ जूठी दीनी कारा ॥
कहे कबीर तेइ नर सूचे ॥ साची परी बिचारा ॥ ५ ॥

पद २१६. (राग वसत)

कत जाईऐरे घर लागो रंग ॥ मेरा चित्त न चले मन
भयो पंग ॥
एक दिवस मन भइ उमंग ॥ घस चंदन चोआ बहो
सुगंध ॥ १ ॥
पूजन चाली ब्रह्म ठाय॥सो ब्रह्म बतायो गुर मनही माह
जहां जाइए तहां जल परवान ॥ तूं पूर रह्यो है सब
समान ॥ २ ॥

वेद पूरान सब देखे जोय ॥ उंहा तब जाइए जब इंहा न होय ॥
सतगुर मे बलहारी तोर ॥ जिन सकल बिकल भ्रम्म काटे मोर ॥ ३ ॥
रामानंद स्वामी रमत ब्रह्म ॥ गुरका सबद काटे कोट करम ॥

पद २१७. (राग सारंग)

कहा नर गरबस थोरी बात ॥ मन दस ना जोटका चार गांठीये टेढो टेढो जात ॥
बहोत परताप गांव सो पाए ॥दोए लख टका बरात ॥
दिवस चारही करे साहबी जैसे बनहर पात ॥ १ ॥
ना कोऊ ले आयो एह धन ना कोऊ ले जात ॥
रावन हु ते अधक छत्र पत खिनमें गये बिलात ॥ २ ॥
हरके संत सदा थिर पूजो जो हरनाम जमात ॥
जिनको क्रिपा करतहै गोविंद ते सतसंग मिलात ॥ ३॥
मात पिता बनता सूत संजम अंतन चलत संगात ॥
कहेत कबीर राम भज बवरे जनम अकारथ जात॥४॥

पद २१८. (राग सारंग)

राजास्रम मित नही जानी तेरी तेरे संतनकी हों चेरी १
हसतो जाय सो रोवत आवे रोवत जाय सो हसे ॥
बसतो होय सो उजरो उजर होय सो बसे ॥ २ ॥
जलते थल कर थलते कूवा कूप ते मेर करावे ॥
धरती ते आकास चढावे चढे आकास गिरावे ॥ ३ ॥

भेखारी ते राज करावे राजा ते भेखारी ॥
खल मूरख ते पंडत करबो पंडत ते मुगधारी ॥ ४ ॥
नारी तेजो पूरख करावे पूरखन तेजो नारी ॥
कहे कबीर साधुको प्रीतम तिस मूरत बल हारी ॥५॥

पद २१९. (राग प्रभाती)

मरन जीवनकी संका नासी॥आपन रंग सहेज परकासी॥
प्रगटी जोत मिटीआ अंधिआरा ॥ राम रतन पाया करत बिचारा ॥ १ ॥
जहे अनंद दुख दूर पयाना ॥ मन माणक लिव तत्त लुकाना ॥
जो कुछ होया सो तेरा भाणा ॥ जोइंव बुझे सहेज समाना ॥ २ ॥
कहेत कबीर किल विख गए खीणा ॥ मन भया जग जीवन लीणा ॥

पद २२०. (राग प्रभाती)

अलहो एक मसीद वसतहे और मुलख किस केरा ॥
हिंदु मूरत नाम निवासी दोह मै तत्त नहेरा ॥ १ ॥
अलह राम जीवो तेरे नाइ तु कर मेहरामत सांइ ॥२॥
दखण देश हरीका बासा पछम अलह मुकामा ॥
दिलमे खोज दिले दिल खोजो एही ठोर मुकामा ॥३॥
ब्रह्मन ग्यारस करे चोवीसा काजी मेह रमजाना ॥
ग्यारह मास पासके राखे एके माहे निधाना ॥ ४ ॥

कहां उडीसे मजन कीया क्या मसीत सिर नाए ॥
दिलमें कपट निवाज गुजारे क्या हज काबे जाए॥५॥
एते ओरत मरदा साजे ए सभ रुप तुमारे ॥
कबीर कुंगरा राम अलह का सभगुर पीर हमारे॥६॥
कहेत कबीर नर सुनो नरवे परो एककी सरना ॥
केवल नाम जपोरे प्राणी तबही निश्चे तरना ॥ ७ ॥

पद २२१. (राग प्रभाती)

अवल अलहे नूर उपाया कुदरत के सब बंदे ॥
एक नूर ते सब जग उपज्या कोन भले को मंदे ॥१॥
लोगा भ्रमन भुलो भाई ॥
खालक खलकखलकमे खालकपुर रह्यासरब ठांई॥२॥
माटी एक अनेक भात कर साजी साजन हारे ॥
ना कछु पोच माटीके भांडे नाकछु पोच कुंभारे ॥ ३ ॥
सबमे सचा एको सोइ तिसका कीया सब कुछ होई॥
हुकम पिछाने सो एको जाने बंदा कहीए सोइ ॥ ४ ॥
अलह अलखन जाइ लखया गुरगुड दीना मीठा ॥
कहे कबीर मेरी संका नासी सरब निरंजन दीठा ॥५॥

पद २२२. (राग प्रभाती)

बेद कतेब कहो मन जूठे जूठा जोन बिचारे ॥
जो सबमे एक खोदाय कहत हो तो क्युं मुरगी मारे १
मुल्ला कहो न्याव खुदाई ॥
तेर मनका भरमन जाई ॥ २ ॥

पकर जीव आन्या देह बिनासी माटीको बिसमिल कीया
जोत सरुप अनाहद लागी कहो हलाल क्या कीया॥३
क्या उजू पाक कीया मो धोया क्या मसीत सिर लाया॥
जब दिलमे कपट निवाज गुजारो क्या हज काबे जाया ४
तुं नापाक पाक नही सूझ्या तिसका मरम न जान्या॥
कहे कबीर भिस्त ते चूका दोजख स्युं मन मान्या॥५॥

पद २२३. (राग प्रभाती)

सुन संध्या तेरी देव देवा करी अधपत आद समाइ ॥
सिध समाध अंत नही पाया लाग रहे सर नाइ ॥ १ ॥
लेहो आरती हो पुरख निरंजन सतगुर पूजो भाइ ॥
ठांडा ब्रह्मा निगम बिचारे अलखन लखीआ जाइ॥२॥
तत्त तेल नामकी बाती दीपक देह उजारा ॥
जोत लाय जगदीस जगाया बूझे बूझन हारा॥३॥
पंचे सबद अनाहद बाजे संगे सारंग पानी ॥
कबीर दास तेरी आरती कीनी निरंकार निरवानी॥४॥

दोहरे.

कबीर मेरी स्मरणी ॥ रसना ऊपर राम ॥
आद जुगादी सगल भगत ॥ तांको सुख बिसराम॥१॥
कबीर मेरी जातको ॥ सब-कोइ हसने हार ॥
बलहारी इस जातको ॥ जेह जपीयो सिरजन हार॥२॥

कवीर डगमग डगमग क्या करे॥कहां डुलावे जीव॥
सरव सूखको नायको ॥ राम नाम रस पीव ॥ ३ ॥
कवीर कंचनके कुंडल बने ॥ उपर लाल जडाव ॥
दीसह दाधे कान ज्युं ॥ जिन मन नाहीं नाव ॥ ४ ॥
कवीर ऐसा एक आध जो॥जो जीवत मिरतक होय॥
निरभय हो कै गुन रवे ॥ जितपे रव्यो तितसोय ॥५॥
कवीर जा दिन हों मुवा ॥ पाछे भया अनंद ॥
मोह मिल्यो प्रभु आपना ॥ संगी भजे गोविंद ॥ ६ ॥
कवीर सवते हम बुरे ॥ हम तज भलो सव कोय ॥
जिन ऐसा कर बुझीया ॥ मीत हमारा सोय ॥ ७ ॥
कवीर आइ मझेपे ॥ अनक करे कर भेस ॥
हमराखे गुण आपने ॥ उन कीनो आदेस ॥ ८ ॥
कवीर सोइ मारीए ॥ जेहं मुए सुख होय ॥
भलो भलो सब को कहे ॥ बुरा न माने कोय ॥ ९ ॥
कवीर राती होवह कारीया ॥ कारे उभे जन ॥
लेफाहे उठ धावते ॥ सें जन मारे भगवंत ॥ १० ॥
कवीर चंदनका बिरवा भला ॥ बेड्यो ढाक पलास ॥
वोहभी चंदन हो रहे ॥ बसे जो चंदन पास ॥ ११ ॥
कवीर बास बडाइ बुड्या ॥ यों मत डुबो कोय ॥
चंदनके निकटे बसे ॥ बास सुगंध न होय ॥ १२ ॥
कवीर दीन गमायो दुनीसो ॥ दुनी न चाली साथ ॥

पांय कुहाडा मारीया ॥ गाफल अपने हाथ ॥ १३ ॥
कबीर जहे जहे हों फिरयो ॥ कौतक ठाउ ठाय ॥
एक राम सनेही बाहरा ॥ उजर मेरे भाय ॥ १४ ॥
कबीर संतनकी झुगीया भली ॥ भठ्ठ कुसती गांव ॥
आग लगो तहे धवलहर॥जहें नाही हरको नाव॥१५॥
कबीर संत मुवे क्या रोइए ॥ जो अपने ग्रह जाय ॥
रोवो साकत बापरे ॥ जो हाटे हाट बिकाय ॥ १६ ॥
कबीर साकत ऐसा है ॥ जैसी लसनकी खान ॥
कोने बैठके खाइए ॥ प्रगट होय निदान ॥ १७ ॥
कबीर माया डोलनी ॥ पवन झकोलन हार ॥
संतह माखन खाया ॥ छास पीए संसार ॥ १८ ॥
कबीर माया डोलनी ॥ पवन वहे हिव धार ॥
जिन बिलोया तिन खायया ॥ और बिलोवन हार १९
कबीर माया चोरटी ॥ मुस मुस लावे हाट ॥
एक कबीरा नामसे ॥ जिनकीनी बारह वाट ॥२०॥
कबीर सूखन एह जग ॥ करे जो बोहते मीत ॥
जो चित राखो एक स्यों ॥ तो सुख पावो नीत ॥ २१ ॥
कबीर जिस मरने ते जग डरे ॥ मेरे मन आनंद ॥
मरनेही ते पाइए ॥ पूरन परमानंद ॥ २२ ॥
राम पदारथ पायके ॥ कबीरा गांठन खोल ॥
नही पटण नहीं पारखु ॥नही गाहक नही मोल॥२३॥

भगतन छांडो रामकी ॥ भांवे निंदो लोग ॥ ४५ ॥
कबीर लोग के निंदे बपडा ॥ जहं मन नारी ग्यान ॥
राम कबीरा रव रहे ॥ अवर तजे सब काज ॥ ४६ ॥
कबीर परदेसी के घाघरे ॥ चहों दिस लागी आग ॥
खिंथा जल कोयला भइ ॥ तागे आंचन लाग ॥४७॥
कबीर खिंथा जल कोयला भइ ॥खापर फूटन फूट ॥
जोगी बपडा खेलयो ॥ आसन रही भभुत ॥ ४८ ॥
कबीर थोरे जल माछली ॥ झीवर मेल्यो जाल ॥
एह टो घणे न छुटसे ॥ फिरकर समुंद समाल ॥४९॥
कबीर समुंद न छोडीए ॥ जो अत खारो होय ॥
पोखर पेखर ढूंडते ॥ भलो न कहहै कोय ॥ ५० ॥
कबीर निगुसांए बहे गये ॥ थांगी नाहीं कोय ॥
दीन गरीबी आपनी ॥ करते होय सो होय ॥ ५१ ॥
कबीर बैसनोकी कूकर भली ॥ साकतकी बुरीमाय ॥
ओह नित सुने हर नाम जस ॥ ओह पाप बीसाह न जाय ॥ ५१ ॥
कबीर हरना डुबला ॥ यो हरीआरातात्ल ॥
लाख अहेरी एक ज्यों ॥ केता बंचो काल ॥ ५३ ॥
कबीर गंगा तीर जो घर करे ॥ पीवेह निरमल नीर ॥
बिन हर भगतन मुकत होय ॥ यों कहेरमे कबीर ५४
कबीर मन ऐसा निरमल भया ॥ जैसा गंगा नीर ॥

पाछो लागो हर फिरे ॥ कहेत कबीर कबीर ॥ ५५ ॥
कबीर हरदी पीयरी ॥ चूना उजल भाय ॥
राम सनेही तब मिले ॥ दोनो बरन गमाय ॥ ५६ ॥
कबीर हरदी पीर तन हरे ॥ चूना चहन न रहाय ॥
बलहारी एह प्रीतको ॥ जेह जात बरन कुल जाय ॥५७॥
कबीर मुकत द्वारा संकरा ॥ राइ दसमे भाय ॥
मन तो मैगल होइ रह्यो ॥ निकसो क्युं कर जाय ॥५८॥
कबीर ऐसा सतगुर जे मिले ॥ तूठा करे पसाव ॥
मुकत द्वारा मोकला ॥ सहेजे आवो जाव ॥ ५९ ॥
कबीर नामोह छानन छापरी ॥ नामोह घर गांव ॥
मत हर पुछे कोन है ॥ मेरे जात न नाव ॥६० ॥
कबीर मोह मरनेका चावहै ॥ मरोतो हरके द्वार ॥
मत हर पुछे कोन है ॥ परा हमारे बार ॥ ६१ ॥
कबीर नाहम कीया न करहगे ॥ न कर सके सरीर ॥
क्या जानो कुछ हरकीया ॥ भयो कबीर कबीर ॥ ६२ ॥
कबीर सुपने हुं बरडाय के ॥ जहें मुख निकसे राम ॥
तांके पगकी पाहनी ॥ मेरे तनको चाम ॥ ६३ ॥
कबीर माटीके हम पुतरे ॥ मानस रारूयो नाम ॥
चार दिवसके पाहूने ॥ बडबड रुधे ठांव ॥ ६४ ॥
कबीर महेदी करके घाल्या ॥ आप पीसाय पीसाय ॥
ते सह वांत न पुछीए कब हुन लाइ पाय ॥ ६५ ॥

कबीर जहे दरआवत जात है ॥ हटके नाही कोय ॥
सोदर कैसे छोडीए ॥ जो दर ऐसा होय ॥ ६६ ॥
कबीर डुबा थापे उभऱ्यो ॥ गुनकी लेहर झबक ॥
जबदेख्यो बेडा जरजरा ॥ तब उतर पड्यो फरक ॥ ६७ ॥
कबीर पापी भगतन भावइ ॥ हर पूजन सोहाय ॥
माखी चंदन पर हरे ॥ जहे बिगंध तहे जाय ॥ ६८ ॥
कबीर बैद मुवा रोगी मुवा ॥ मुवा सब संसार ॥
एक कबीरा ना मुवा ॥ जहें नाही रोवन हार ॥ ६९ ॥
कबीर राम न ध्यायो ॥ मोटी लागी खोर ॥
काया हांडी काठकी ॥ नाओ चडे बहोर ॥ ७० ॥
कबीर ऐसी होय परी ॥ मनको भावत कीन ॥
मरने ते क्या डरपना ॥ जब हाथ सीधोरा लीन ॥ ७१ ॥
कबीर रसको गांडो चुसीए ॥ गुनको मरीए रोय ॥
अब गुनीयारे मानसे ॥ भलो न कहे है कोय ॥ ७२ ॥
कबीर गागर जल भरी ॥ आज काल जहे फूट ॥
गुरु जन चेते आपनो ॥ अध माझलीजहेगे लूट ॥ ७३ ॥
कबीर कूकर रामको ॥ मोतीया मोरो नाव ॥
गले हमारे जेवडी ॥ जहें खींचे तहें जाव ॥ ७४ ॥
कबीर जपनी काठकी ॥ क्या दिखलावो लोय ॥
हिरदे राम न चेतही ॥ एह जपनी क्या होय ॥ ७५ ॥
कबीर बिरहे भोयंगम मन बसे ॥ मंतन माने न कोय ॥

राम वियोगी ना जीए ॥ जीए तो बौवरा होय ॥७६॥
कबीर पारस चंदने ॥ तिन है एक सुगंध ॥
तहें मिलते उत्तम भये ॥ लोह काठ निर गंध ॥७७॥
कबीर जम काटेंगा ॥ बुरा है वोह नही सहेया जाय ॥
एक जो साधु मोह मिलो ॥ तिन लीया अंचल लाय ॥७८॥
कबीर वैद कहे हौं ही भला ॥ दारु मेरे वस ॥
यहतो वस्त गोपाल की ॥ जब भावे ले खस ॥ ७९॥
कबीर नौवत आपनी ॥ दिन दस लेह वजाय ॥
नदी नाव संजोग ज्युं ॥ वोहरन मिल है आय ॥ ८० ॥
कबीर सात समुंदर मस करो ॥ कलम करो बनराय ॥
वसुधा कागद जो करो ॥ हर जस लिखीयो न जाय ८१
कबीर जात जुलाहा ॥ क्या करे हिरदे बसे गोपाल ॥
कबीर रमैया कंठ मिल ॥ चुके सरब जंजाल ॥ ८२ ॥
कबीर ऐसा को नही ॥ मंदर दे जराय ॥
पांचो लडके मारके ॥ रहे राम लिव लाय ॥ ८३ ॥
कबीर ऐसा को नहीं ॥ एह तन देवे फूक ॥
अंधा लोग न जानही ॥ रहो कबीरा कूक ॥ ८४ ॥
कबीर सती पुकारे चढे चडी ॥ सुन हो वीर मसान ॥
लोग सब आया चल गयो ॥ हम तुम काम निदान ८५
कबीर मन पंखी उड उड ॥ दहे दिस जाय ॥
जो जैसी संगत मिले ॥ सो तैसो फल पाय ॥ ८६ ॥

कबीर जांको खोज ते ॥ पाए सोइ ठोर ॥
सोइ फिरके भूलीया ॥ जांको कहेता और ॥ ८७ ॥
कबीर मारी मरो कुसंगकी ॥ केले निकट जो बेर ॥
वोह जुले वोह चीरीए ॥ साकत संगन हेर ॥ ८८ ॥
कबीर भार पराइ सिर चरे ॥ चल्यो चाहे बाट ॥
अपने भारे ना डरे ॥ आगे अवघट घाट ॥ ८९ ॥
कबीर बनकी दाधी लाकरी ॥ ठांडी करे पोकार ॥
मत वस परों लोहारके ॥ जारे दुजी बार ॥ ९० ॥
कबीर एक मरंते दोए मुवे ॥ दोए मरंते चार ॥
चार मरते छ मुए ॥ चार पुरख दो नार ॥ ९१ ॥
कबीर देख देख जग ढूंडीया ॥ कहुं न पायो ठार ॥
जिन हरका नाम न चेतीयो ॥ कहा भूलाने और ॥ ९२ ॥
कबीर संगत करीए साधकी ॥ अंत करे निरबाह ॥
साकत संग न कीजीए ॥ जांते होय बीनाह ॥ ९३ ॥
कबीर जगमें चेत्यो जानके ॥ जगमे रह्यो समाय ॥
जिन हरका नाम न चेतीयो ॥ बादहे जनमें आय ॥ ९४ ॥
कबीर आसा करीए रामकी ॥ औरे आस निरास ॥
नरक परे ते मानए ॥ जो हर नाम उदास ॥ ९५ ॥
कबीर सिख सखा बोहते कीए ॥ केसो पीयो न मीत ॥
चाले थे हर मिलनकों ॥ बीचे अटक्यों चीत ॥ ९६ ॥
कबीर कारण बपडा क्या करे ॥ ज्यों राम न करे सहाय ॥

जहं जहं डाली पग धरु ॥ सोइ मुर मुर जाय ॥ ९७ ॥
कबीर अवरहे को उपदेश ते ॥ मुखमें परहे रेत ॥
रास बिगानी राखते ॥ खाया घरका खेत ॥ ९८ ॥
कबीर साधुकी संगत रहुं ॥ जवकी भुसी खाऊं ॥
होन हारसो होय है ॥ साकत संग न जाऊं ॥ ९९ ॥
कबीर संगत साधकी दिन दिन दुना हेत ॥
साकत कारी कामरी ॥ धोवे होय न सेत ॥ १०० ॥
कबीर मन मूडा नहीं ॥ केस मुडाय काय ॥
जो कुछ कीया सोमनकीया ॥ मुडा मुडया जाय १०१
कबीर राम न छोडीए ॥ तन धन जाय त जाव॥
चरन कमल चित वे धयो ॥ राम है नाम समाव १०२
कबीर जो हम जंत बजावते ॥ टूट गइ सब तार ॥
जत बिचारा क्या करे ॥ चले बजावन हार ॥ १०३॥
कबीर माय मुंडो लेहं गुरुकी ॥ जांते भरम न जाय ॥
आप डुबे चहो बेदमें ॥ चेले दीए बहाय ॥ १०४ ॥
कबीर जेते पाप कीये ॥ राखे तले दुराय ॥
प्रगट भये निदान सब ॥ जप पूछे धरम राय ॥ १०५ ॥
कबीर हरका सिमरन छांडके ॥ पाल्यो बोहत कुटंब ॥
धंधा करते रहे गया ॥ भाइ रहा न बंद ॥ १०६ ॥
कबीर हरका सिमरन छांडके ॥ रात जगावन जाय॥
सरपन होयके अवतरे ॥ जाये अपने खाय १०॥

कबीर हरका सिमरन छांडके ॥ अहोइ रांखे नार ॥
गधही होके अवतरे ॥ भार सहे मन चार ॥ १०८ ॥
कबीर चतराइ हद घणी ॥ हर जप हिरदे माह ॥
सुली उपर खेलना ॥ गीरितो ठाहर नाह ॥ १०९ ॥
कबीर सोइ मुख धन्न है ॥ जा मुख कहीए राम ॥
देही किसकी वापरी ॥ पवित्र होयगो ग्रांम ॥ ११०॥
कबीर सोइ कुल भली ॥ जांकुल हरको दास ॥
जहे कुल दासन उपजे ॥ सो कुल ढाक पलास ॥ १११ ॥
कबीर है गये बाहन सगन घन ॥ लाख धजाफे राहे ॥
या सुख ते बिखीया भली ॥ जो हर सिमरत दिन जाय ॥ ११२ ॥
कबीर सब जग हौं फिर्यो ॥ मादल कंध चडाय ॥
कोइ काहुं को नहीं ॥ सब देखी ठोक बजाय ॥ ११३ ॥
कबीर मारग मोती बीथरे ॥ अंधा नीकसो आय ॥
जोत बिना जग दीस की ॥ जगत लघे जाय ॥ ११४ ॥
कबीर बुडा बंस कबीरका ॥ उपज्यो पूत कमाल ॥
हरका सिम्रन छांडके ॥ घर ले आया माल ॥ ११५ ॥
कबीर साधकुं मिलने जाइए ॥ साथ न लीजे कोय ॥
पाछे पांव न दीजीए ॥ आगे होय सो होय ॥ ११६ ॥
कबीर जग बांध्यो जहे जेवरी ॥ तेह मत बंधोह कबीर ॥
जहे आटा लोन जिव ॥ सोन समान सरीर ॥ ११७ ॥
कबीर हंस उडयो तन गाडीयो ॥ सोझाइ सनाह ॥

अजहु जीव न छोडई ॥ रंकाइ नैनाह ॥ ११८ ॥
कबीर नैन नीहारु तुझको ॥ श्रवन सुनो तो नाव ॥
बेन उचरो तो नामकी ॥ चरन कमल रिद ठाव ॥११९॥
कबीर सुरग नरक तेमें रह्यो ॥ सत गुरके परसाद ॥
चरन कमलको मोजमे रह्यो ॥ अंत और आद ॥१२०॥
कबीर चरन कमलकी मोजको ॥ कहो कैसे अनमान ॥
कहे वे को सोभा नही ॥ देखाही परमान ॥ १२१ ॥
कबीर देखके कहुं ॥ कहे कोन पती आय ॥
हर जैसा तैसा ओही ॥ रह्यो हरख गुन गाय ॥१२२॥
कबीर चुगे चुतारेभी चुगे ॥ चुग चुग चीतारे ॥
जैसे बचरह कुंजमन ॥ माया मम तारे ॥ १२३ ॥
कबीर अंबर घन हर छाया ॥ बरख भरे सर ताल ॥
चात्रक ज्यों तिरसत रहे ॥ तिनके कोन हवाल ॥१२४॥
कबीर चकवी ज्यों निस बीछरे ॥ आय मिले परभात ॥
जो नर बिछरे राम स्यों ॥ ना दिन मिले न रात १२५
कबीर रैनाये रब छोडीया ॥ ठहरे सिख मझूर ॥
देवल देवल धावडी ॥ दीसहे उगवत सूर ॥ १२६ ॥
कबीर सूता क्या करे ॥ जाग रोय भय दुख ॥
जांका बासा गोरमें ॥ सो क्युं सोवे सुख ॥ १२७ ॥
कबीर सूता क्या करे ॥ उठ किन जपे मोरार ॥
एक दिन सोवन होयगो ॥ लांबे गोड पसार ॥१२८॥

कबीर सूता क्या करे ॥ बेठा रहे अर जाग ॥
जांके रांगते बिछरा ॥ तांही के संग लाग ॥ १२९ ॥
कबीर संतकी गैल न छोडीए ॥ मारग लागा जाव ॥
पेखत ही पुनीत होय ॥ भेट त जपीए नाव ॥१३०॥
कबीर साकत संगन कीजीए ॥ दुरो जाइए भाग ॥
बास न कारों परसीए ॥ तव कुछ लागे डाघ ॥ १३१ ॥
कबीर रामन चेतीओ ॥ जरा पहूचो आय ॥
लागी मंदर द्वार ते ॥ अब क्या काढ्या जाय ॥१३२॥
कबीर कारन सो भयो ॥ जोकीनो करतार ॥
तिस बिन दुसर को नहीं ॥ एके सिरजन हार ॥१३३॥
कबीर फल लागे ॥ फल न पाकन लागे आंब ॥
जाय प्रहोंचद खसमको॥ जब बीचन बाधी काम १३४
कबीर ठाकुर पूजो ॥ मोल ले मन हट तीरथ जाय ॥
देखा देखी स्वाग धर ॥ भूले भटके खाय ॥ १३५ ॥
कबीर पाहन परमें स्वरकीया ॥ पूजे सब संसार ॥
इस भरवासे जो रहे ॥ बुडे कालीं धार ॥ १३६ ॥
कबीर कागदकी ओबरी ॥ मसके करम कपाट ॥
पाहन थोरी पृथ्मी ॥ पंडत पाडी बाट ॥ १३७ ॥
कबीर काल करंता अब कर॥अब करता सोय ताल॥
पाछे कछुना होयगा॥ जो सिरपर आवे काल ॥१३८॥
कबीर ऐसा जंत ऐक देखीया ॥ जेसी धोइ लाख ॥
दीसे चचल बोहु गुना ॥ मत हीना नापाक ॥ १३९॥

कबीर मेरी बुध को ॥ जमन करे तीसकार ॥
जिन ए जमवा सिरजीया ॥ सो जपीया परवर दिगार ॥ १४० ॥
कबीर कस्तुरी भया ॥ भवर भए सब दास ॥
जौं जौं भगत कबीरको ॥ तिंव तिंव रामनिवास १४१
कबीर गहे गच पर्‍यो कुटुंबके ॥ काठे रहे गयो गाम ॥
आय परे धरम रायके ॥ बीचे धूमा धाम ॥ १४२ ॥
कबीर साकत ते सूकर भला ॥ राखे आछा गाम ॥
वोह साकत बपरा मरगया ॥ कोय न लहे नाम ॥ १४३ ॥
कबीर कौवडी कौवडी जोरके ॥ जोरे लाख करोर ॥
चलती बार न कुछ मिल्यो ॥ लीइ लंगोटी तोर ॥ १४४ ॥
कबीर वैसनव हुवा तोक्या भया ॥ मालामेली चार ॥
बाहर कंचन बाहरा ॥ भीतर भरी भंगार ॥ १४५ ॥
कबीर रोडा हो रहो वाटका ॥ तज मनका अभमान ॥
एसा कोइ दास होय ॥ तांह मिले भगवान ॥ १४६ ॥
कबीर रोडा हुवा तो क्या भया ॥ पंथककों दुख दे ॥
एसा तरा दास है ॥ ज्यों धरनीमें खेद ॥ १४७ ॥
कबीर खेह हुइ तो क्या भया ॥ जो उड लागे अंग ॥
हर जन ऐसा चाहीए ॥ ज्यों पानी सर बंग ॥ १४८ ॥
कबीर पानी हुवा तो क्या भया ॥ जो सीराताता होय ॥
हर जन ऐसा चाहीए ॥ जैसा हरही होय ॥ १४९ ॥
कबीर उंचे भवन कनक कामनी ॥ सिखर धजा फैराय ॥
ताते भली मधुकरी ॥ संत संग गुन गाय ॥ १५० ॥

कबीर पाटन ते उजर भला ॥ राम भगत जेह ठांय ॥
राम सनेही बाहरा ॥ जमपुर मेरे भाय ॥ १५१ ॥
कबीर गंगजमन के अंतरे ॥ सहेज सुन्नके घाट ॥
तह कबीरे मठ कीया ॥ खोजत मुनीजन बाट ॥ १५२ ॥
कबीर जैसी उपजी पेडते ॥ जो तैसी निबहे ओड ॥
हीरा किसका बापरा ॥ पुज हन रतन करोड ॥ १५३ ॥
कबीर एक अचंभो देखीया ॥ हीरा हाट बिकाय ॥
बन जन हारे बाहरा ॥ कवडी बदले जाय ॥ १५४ ॥
कबीर जहां ग्यान तहां धर्म है ॥ जुठ तहां है पाप ॥
जाहां लोभ ताहां काल है ॥ जाहां खीमा ताहां आप १५५
कबीर माया तजी तो क्या भया ॥ जो मान तजी यानही जाय ॥
मान मुनीवर वर गले ॥ मान सबेको खाय ॥ १५६ ॥
कबीर साचा सतगुर मै मिला ॥ सबद जो बाह्या एक ॥
लागतही भोय गिर गया ॥ परा कलेजे छेक ॥ १५७ ॥
कबीर साचा सत गुरु क्या करे ॥ जो सिखा मै चूक ॥
अंधे एक न लागइ ॥ ज्युं बास बजाइए फुक ॥ १५८ ॥
कबीर है गए बाहन सगन घन ॥ छत्रपती कीनार ॥
तास पटंबर ना पुजे ॥ हरजनकी पनहार ॥ १५९ ॥
कबीर नृप नारी क्यु नींदीए ॥ क्युं हर चेरीको मान ॥
ओ माग समारे बिखेको ॥ ओ सिमरे हरको नाम १६०
कबीर सुनी पाइ थित भइ ॥ सतगुर बंधी धीर ॥
कबीर हीरा बंनजीआ ॥ मान सरोवर तीर ॥ १६१ ॥

कबीर हर हीरा जन जोहरी ॥ लेके मांडे हाट ॥
जब ही पाइए पारखु ॥ तब हीरनकी साट ॥ १६२ ॥
कबीर काम पडे हर सिमरीए ॥ ऐसा सिमरहो नित॥
अमरा पुर बासा करो ॥ हरगया बहोरे बित ॥ १६३ ॥
कबीर सेवा को दोभले ॥ एक संत एक राम ॥
राम जो दाता मुगत को ॥ संत जपावे नाम ॥१६४॥
कबीर जहे मारग पंडन गये ॥ पाछे परी बहीर ॥
एक अवघट घाटी रामकी॥तहे चड रह्यो कबीर१६५
कबीर दुनीया को देखो मुआ॥ चालत कुलकी कान॥
तब कुल किसका लाजसी॥जब ले धरे मसान॥१६६॥
कबीर डुबोगोरे बापरे ॥ बहो लोगनकी कान ॥
पारोसी के जो हुवा ॥ तु अपने भी जान ॥ १६७ ॥
कबीर भली मधुकरी ॥ नाना विधको नाज ॥
दांवा काहुको नहीं ॥ बडा देश बड राज ॥ १६८ ॥
कबीर दावे दास न होत है ॥ निर दावे रहे निशंक ॥
जो जन निरदावे रहे ॥ सो गिने इंद्रको रंक ॥ १६९ ॥
कबीर पालस मुहा सरवर भरा॥ पी न सके कोइ नीर॥
भाग बडे तै पाइओ ॥ तूं भर भरपीयो कबीर १७०
कबीर परभाते तारे खिसे ॥ तेयुंए खिसे सरीर
ए दो अखर ना खिसे ॥ सो गहे रह्यो कबीर ॥ १७१ ॥
कबीर कोठी काठकी दहे दिस ॥ लागी आग ॥
पंडत पंडत जल मुए ॥ मुरख उबरे भाग ॥ १७२ ॥
कबीर संसा दूर कर ॥ कागद देह बहाय ॥

बावन अखर सोधके ॥ ॥ हर चरनी चित लाय॥१७३॥
कबीर संतन छांडे संतइ ॥ जो कोटक मिले असंत ॥
मल्या गर भुयंगंम बेढ्यो॥तां सीतल तान तजंत॥१७४॥
कबीर मन सीतल भया ॥ पाया ब्रह्म ग्यान ॥
जिन जुवाला जग जान्या॥सुजनके उदक समान १७५
कबीर सारी सरजन हारकी ॥ जाने नाही कोय ॥
को जाने आपन धणी ॥ कैदास दीवानी होय ॥१७६॥
कबीर भली भइ जो भव परा ॥ दिसा गइ सब भूल॥
ओरा गर पाणी भया॥जाय मिल्यो ढल कूल॥१७७॥
कबीर धूल सकेल कै ॥ पुरीया बांधी देह ॥
दिवस चारको पेखना ॥ अंत खेहकी खेह ॥ १७८ ॥
कबीर सूरज चांदके ॥ उदे भइ सब देह ॥
गुर गोविंदके बिन मिले ॥ पलट भइ सब खेह॥१७९॥
जहे अनभव तहे भय नहीं ॥ जहे भव तहे हरनाह ॥
कहो कबीर बीचारके ॥ संत सुनो मन लाय ॥१८० ॥
कबीर जिन ही कुछ जान्या नही ॥ तिन सुख नींद बिहाय ॥
हम जो बुझ्या बुझना ॥ पूरी परी बलाय ॥ १८१ ॥
कबीर मारे बहोत पुकारीया ॥ पीर पुकारे और ॥
लागी चोट मरमकी ॥ रह्यो कबीरा ठौर ॥ १८२ ॥
कबीरा चोट सुहेली सेलकी ॥ लागत लेयो सास ॥
चोट सहारे सबदकी ॥ तास गुरु मै दास ॥ १८३ ॥

कबीर निरमल बुंद अकासकी ॥ परगइ भूम बिकार ॥
बिन संगत युं मानइ ॥ होय गइ भठ छार ॥ १९५ ॥
कबीर निरमल बुंद अकासकी ॥ लीनी भूम मिलाय ॥
अनक सयाने पच गये ॥ ना निरवारी जाय ॥ १९६ ॥
कबीर हज काबे हूं जाय था ॥ आगे मिला खुदाय ॥
सांइ मुजस्यों लर पडा ॥ तुझे किन फुरमाइ गाय १९७
कबीर हज काबे होय होय गया ॥ केती बार कबीर ॥
सांइ मुझमै क्या खता ॥ मूखो न बोले पीर ॥१९८॥
कबीर जीय जो मारे जोर कर ॥ कहते हज हलाल ॥
दफतर दइ काढहै ॥ तब होयगा कोन हवाल ॥१९९॥
कबीर जोर कीया सो जुलम है ॥ ले जवाब खुदाय ॥
दफतर लेखा नीकसे ॥ मार मुहे मुह खाय ॥ २०० ॥
कबीर लेखा देना सहेल है ॥ जो दिल सच्चा होय ॥
उस साचे दिबानमें ॥ पलान पकरे कोय ॥ २०१ ॥
कबीर धरती ओर आकासमें ॥ दोय तुंबरी अबध ॥
खट दरसण संसे परे ॥ अर चोरासी सिद्ध ॥ २०२ ॥
कबीर मेरा मुझमें कुछ नहीं ॥ जो कुछ है सो तेरा ॥
तेरा तुजकु सोंपतें ॥ क्या लागे मोरा ॥ २०३ ॥
कबीर तूं तूं करता तूं हुवा ॥ तुंजमें रह्या न हूं ॥
जब आपा परका मिटगया ॥ जत देखुं तततूं ॥२०४॥
कबीर बिकार है चित वते ॥ झुठी करते आस ॥
मन मनोरथ कोय न पूरीओ ॥ चाले ऊठ निरास २०५

कबीर हरका सिमरन जो करे॥ सो सुखीया संसार॥
इत उत कतह न डोलइ॥जिस राखे सरजन हार२०६
कबीर घानी पीडते ॥ सतगुरु लीए छडाय ॥
परा पुरबली भावनी॥परगट होइ आय ॥ २०७॥
कबीर टाले टोले दिन गया ॥ ब्याज बढतो जाय ॥
नाहर भजोन खत फट्यो॥काल पुहुंचोआय ॥ २०८॥
कबीर कूकर भोकना ॥ कुरग पीछे उठ धाय ॥
करमी सतगुरु पायया॥जिन हु लीया छडाय॥२०९॥
कबीर धरती साधकी ॥ तस्कर बेसे गाह ॥
धरती भारन ब्यापइ ॥ उनको लाहूलाह ॥ २१० ॥
कबीर चावल कारने ॥ तुख कों मुहली लाय ॥
संग कुसंगी बेसते ॥ तब पूछे धरम राय ॥ २११ ॥
कबीर नामा माया मोह्या ॥ कहे तिलोचन मीत ॥
काहे छीपह छायले रामन लावो चीत ॥ २१२ ॥
कबीर नामा कहे तिलोचना ॥ मुखते राम समाल ॥
हाथ पांव कर काम सब ॥ चित निरंजन नाल ॥२१३॥
कबीर हमरा को नही ॥ हम किसहूके नाह ॥
जिन एह रचन रचाया ॥ तिस ही माह समाह ॥२१४॥
कबीर आटा गिर परा ॥ कछू न आयो हाथ ॥
पीसत पीसत चाबया ॥ सोइ निबह्या साथ ॥ २१५ ॥
कबीर मन जाने सब बात ॥ जानतही अवगुन करे ॥

काहेकी कुस लात ॥ हाथ दीप कुवे परे ॥ २१६ ॥
कबीर लागी प्रीत सूजानसो ॥ बरजे लोग अजान ॥
तासो टुटी क्युं बने ॥ जांके जीया प्रान ॥ २१७ ॥
कबीर कोठे मंडप हेत कर ॥ काहे मरे सवार ॥
कारज साढे तीन हाथ ॥ घनीत पोने चार ॥ २१८ ॥
कबीर जो मै चितवों ना करे ॥ क्या मेरे चितवे होय ॥
अपना चित व्याहर करे ॥ जो मेरे चित्तन होय ॥ २१९ ॥
कबीर राम न चेतीओ ॥ फिऱ्या लालच माह ॥
पाप करंता मरगया ॥ औधपूनी खिन माह ॥ २२० ॥
कबीर काया काची कारमी ॥ केवल काची धात ॥
सावित रख हित राम भज ॥ नाहेत्त बिनठी बात २२१
कबीर केसो केसो कूकीए ॥ न सोइए असार ॥
रातदिवस के कूकने ॥ कबहूंके सुने पोकार ॥ २२२ ॥
कबीर काया कजली बन भया ॥ मन कुंचर मय मंत ॥
अंकुस ग्यान रतन है ॥ खेवट बिरला संत ॥ २२३ ॥
कबीर राम रतन मुख कोथरी ॥ पारखु आगे खोल ॥
कोइ आय मिले को गाहकी ॥ लेगो महगें मोल ॥ २२४ ॥
कबीर राम नाम जान्यो नही ॥ पाल्यो कटक कुटंब ॥
धंधेही में मर गयो ॥ बाहर भइ न बंब ॥ २२५ ॥
कबीर अख्खी केरे माटुके ॥ पलपल गइ वेहाय ॥
मन जंजाल न छोडइ ॥ जम दीया दमामा आय २२६
कबीरतरवर रुपी राम है ॥ फलरुपी बैराग ॥

छाया रूपी साध है॥ जिन तज्या बाद बिवाद॥२२७॥
कबीर ऐसा बीज बोय ॥ बारह मास फलंत ॥
सीतल छाया गहर फल ॥ पंखी केल करंत ॥२२८॥
कबीर दाता तरवर दया फल ॥ उपकारी जीवंत ॥
पंछी चले दिसा वरी ॥ बरखा सुफल फलंत ॥२२९॥
कबीर साधु संग परा पती ॥ लिखीआ होय ललाट ॥
मुकत पदारथ पाइए ॥ ठाकन अवघट घाट ॥ २३० ॥
कबीर एक घडी आधी घडी ॥ आधी हुंते आध ॥
भगत न सेती गोष्टी ॥ जो कीनो सो लाभ ॥ २३१ ॥
कबीर भांग माछरी सुरा पान ॥ जो जो प्रानी खाय॥
तीरथ वर्त नेम कीए ॥ ते सभे रसातल जाय ॥२३२॥
कबीर नीचे लोयन कर रह्यो ॥ ले साजन घट माह॥
सब रस खेलो पीयासो ॥ किसे लखावो नाह ॥२३३॥
आठ जाम चौसठ धरी ॥ तोहें निरखत रहे जीयु ॥
नीचे लोयन क्यु करो ॥ सब घट देखो पीयु ॥ २३४॥
सुन सखी पीयुमें जीव वसे ॥ जीयामे बसे के पीयु ॥
जीयु पीयु बूझो नही ॥ घटमे जीयु के पीयु ॥ २३५ ॥
कबीर बामन गुर है जगतका ॥ भगतनका गुरु नाह॥
अरझ उरझके पर्च मुवा ॥ चारो बेदों माह ॥ २३६ ॥
कबीर हर है खाड रेतमे॥ बिखरी हाथी चुनी न जाय॥
कहे कबीर गुर भली बुझाइ ॥ कीटी होयके खाय २३७
कबीर जो तहे साध परेमकी ॥ सीस काटकर गोय ॥
खेलत खेलत हालकर॥जो कुछ होय तो होय ॥२३८॥

कबीर जो तेहं साध परेमकी ॥ पाके सेती खेल ॥
काची सरसों पेलके ॥ नाखल भइ न तेल ॥ २३९ ॥
धुंडत डोले अंध गत ॥ अर चीनत नाही संत ॥
कहे नामा क्यु पाइए ॥ बिन भगतो भगवंत ॥ २४०॥
हर सो हीरा छांडके ॥ करे आनकी आस ॥
ते नर दोजख जायगें ॥ सत भाखे हरदास ॥२४१॥
कबीर जो ग्रहे करे त धर्म कर ॥ नाहीत कर बैराग ॥
बैरागी बंधन करे ॥ तांको बडो अभाग ॥ २४२ ॥
गगन दमामा बाज्यों ॥ पर्यो निशाने घाव ॥
खेत जो मांड्यो सूरमां॥अब झूझन को दाव॥२४३॥
सूरा सो पेहेचानीए ॥ जो लरे दीनके हेत ॥
पूरजा पूरजा कट मरे ॥ कबहू न छांडे खेत ॥ २४४॥

॥ पहेला भाग ॥.

॥ समाप्त ॥